राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

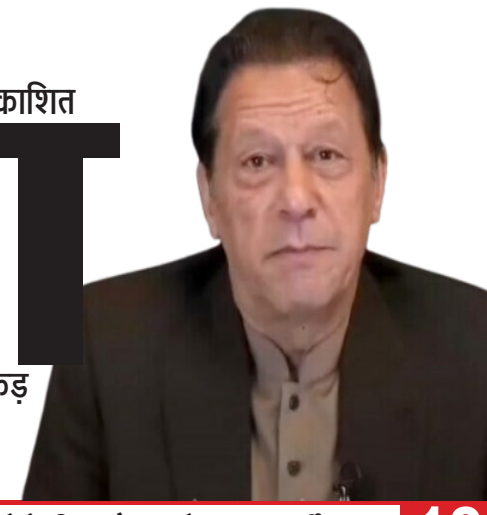

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 महाराष्ट्र विधानसभाः जितेंद्र अव्हाड होंगे विधायक दल नेता?

इमरान खान की पार्टी के प्रदर्शन के दौरान 'कारतूसों के बिना तैनात थे सुरक्षाकर्मी 12

वर्ष : 12 | अंक : 229 | पटना, मंगलवार, 03 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

स्थिरता विश्वास विकास

1 सबसे पहले आरई के पास अपनी शिकायत दर्ज कराएं

2 पावती/संदर्भ संख्या प्राप्त करें

3 यदि आरई द्वारा 30 दिनों में इसका कोई निवारण नहीं किया जाता है या आप निवारण से संतुष्ट नहीं हैं, तो आप आरबीआई के सीएमएस पोर्टल (cms.rbi.org.in) पर या सीआरपीसी** को डाक द्वारा भेजकर आरबीआई लोकपाल के पास अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं

आरबीआई द्वारा विनियमित संस्थाओं (आरई)* के विरुद्ध अपनी शिकायतों के निवारण के लिए इन चरणों का पालन करें

आरबीआई लोकपाल से सीधे शिकायत दर्ज करने पर वह अस्वीकृत हो सकती है.

अधिक जानकारी के लिए, https://rbikehtahai.rbi.org.in/ios पर विजिट करें
फ़ीडबैक देने के लिए, rbikehtahai@rbi.org.in को लिखें

*बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां, भुगतान प्रणाली सहभागी, प्रीपेड इन्स्ट्रूमेंट, क्रेडिट सूचना कंपनियां.
**सीआरपीसी: भारतीय रिज़र्व बैंक, सेक्टर 17, चंडीगढ़-160017.

जनहित में जारी
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in

बिहार सरकार

संदेश

दिव्यांगजनों के समान अवसर तथा अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 3 दिसम्बर को **''अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस''** मनाया जाता है । इस दिवस का मूल उद्देश्य दिव्यांगजनों के बीच समान अवसर, अधिकारों की रक्षा एवं सशक्तीकरण हेतु जागरूकता उत्पन्न करना है । सामाजिक उत्थान में दिव्यांगजनों की भूमिका सराहनीय है। वर्तमान में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा दिव्यांगजनों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने एवं आत्मनिर्भर बनाने तथा पुनर्वास के लिए महत्वाकांक्षी योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही है । इसके अन्तर्गत दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण का वितरण, बैट्री चालित ट्राईसाईकिल का वितरण, सर्वेक्षण एवं प्रमाणीकरण, विशेष विद्यालय का संचालन, बाधामुक्त वातावरण एवं परिसर का निर्माण आदि के साथ दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुपालन में कल्याणकारी कार्य किए जा रहे हैं।

''अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस'' के अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि दैनिक जीवन में दिव्यांगजनों के प्रति अपने हृदय में सर्वदा समुचित आदर, सहयोग एवं प्रेम–भाव रखेंगे तथा दिव्यांगजनों के लिए अपने अपेक्षित दायित्वों का पालन करेंगे ।

(मदन सहनी)
मंत्री, समाज कल्याण विभाग, बिहार

PR No.- 013838 (SWD)D. 2024-25

बिहार सरकार

संदेश

मुख्यमंत्री
बिहार

दिव्यांगजनों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने, उनके अधिकारों की रक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं उन्हें विकास के समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से हर वर्ष 3 दिसम्बर को सम्पूर्ण विश्व में **''अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस''** के रूप में मनाया जाता है ।

वर्त्तमान में राज्य सरकार दिव्यांगजनों के सशक्तीकरण एवं उन्हें स्वाबलंबी बनाने हेतु अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम चला रही है । दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से उनके लिए कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण एवं बैट्री चालित ट्राईसाईकिल वितरण तथा विशेष विद्यालय जैसी कल्याणकारी योजनाएँ संचालित हैं । साथ ही राज्य सरकार दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने वाली आधारभूत सुविधाओं पर सक्रियता से काम कर रही है ताकि उनके लिए समानता और पहुँच के अवसर उपलब्ध हो सके ।

''अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस'' के अवसर पर मैं दिव्यांगजनों के उज्ज्वल एवं सुखद भविष्य की कामना करता हूँ। आइए, अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर राज्य के सभी दिव्यांगजनों के अधिकारों की रक्षा एवं समाज में उनकी उचित भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हम सभी संकल्प लें ।

(नीतीश कुमार)

PR No.- 013842 (SWD) D. 2024-25

संक्षिप्त खबरें

महंत ब्रजेश मुनि महाराज ने महंत अमित दास को महंती चादर और पगड़ी पहनाया

पटना। सोमवार को कबीरपंथी मठ लेवधन में आयोजित स्वर्गीय महंत सुदर्शन गोस्वामी जी का श्रद्धांजलि सभा आयोजित किया गया। साथ ही विशाल भंडारा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उनके शिष्य अमित दास को मंहती चादर पगड़ी कार्यक्रम में आचार्य मंहत श्री ब्रजेश मुनि महाराज एवं पातेपुर स्टेट के महंत विश्वमहोन दास जी आचार्य गुरु प्रसाद गोस्वामी एवं संत-महंत शामिल हुए।

एड्स के प्रति लोगों को किया गया जागरूक

दानापुर खगौल। सोमवार को मंडल रेल अस्पताल दानापुर के सभागार में एड्स के प्रति लोगों को जागरूक करने को लेकर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने पी. के. मिश्रा ने उपस्थित सभी चिकित्स्कों एवं अन्य अस्पताल कर्मियों को इस गंभीर बीमारी के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि एड्स एक गंभीर बीमारी है जिसका कोई इलाज नहीं है। एचआईवी मन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस एड्स एक्वायर्ड इम्यून डेफिसिएंसी सिंड्रोम के बारे में लोगो को जागरूक कर ही इस माहमारी बचाव किया जा सकता है। एड्स छूने, गले लगाने, हाथ मिलाने, या किसी के साथ खाना खाने से नहीं फैलता एचआईवी वायरस केवल खून, असुरक्षित यौन संबंध और माँ से बच्चों में हो सकता है। इस अवसर पर डॉ. ए. के. सिंह, डॉ. अनुपमा कुमारी, डॉ. कविता कुमारी ने अपने अपने सम्बोधन से उपस्थित सभी लोगों को विस्तार से बताया कि एचआईवी ह्यूमनइम्यूनोडिफिशिएंसी वायरस वायरस के संक्रमण के कारण एड्स रोग होता है। एचआईवी के गंभीर चरणों में एड्स होता है। समय पर इलाज से एचआईवी वाले व्यक्ति को एड्स से बचाया जा सकता है। यदि गर्भवती महिला में एचआईवी संक्रमण का पता चलता है, तो उसे दवाइयां देकर बच्चे को संक्रमण से सुरक्षित किया जा सकता है।

16 रेलकर्मियों को किया गया समापक भुगतान

दानापुर खगौल रेल मंडल द्वारा सोमवार को सेवानिवृत्त हुए 16 रेलकर्मियों को दानापुर, सभागार मे समापक भुगतान एवं विदाई दिया गया।इसमें रेलसेवा से सेवानिवृत्त उपस्थित रेल अधिकारी एवं कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर जयंत कुमार चौधरी के द्वारा अंगवस्त्र एवं समापक भुगतान दस्तावेजों को देकर सम्मानित करते हुए भावभीनी विदाई दी गई।कार्यक्रम की शुरूआत वरीय मंडल कार्मिक अधिकारी द्वारा किया गया जिन्होंने आज के समापक भुगतान का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया।मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर ने अपने संबोधन में उपस्थित सेवानिवृत्त होने वाले रेल कर्मचारियों के सुखद,स्वस्थ एवं समृद्ध भविष्य की कामना करते हुए कहा कि अपने समापक भुगतान की राशि को असुरक्षित जगहों पर निवेश ना करें।जीवन में आनंदमय रहने के लिए स्वस्थ रहना जरूरी है, साथ ही साथ सामाजिक रूप से भी सक्रिय रहना है। सेवानिवृत्त होने वाले रेल कर्मियों को एक्युप्रेशर,होमियोपैथ एवं आयुर्वेदिक के डॉक्टरों द्वारा स्वस्थ तथा दीर्घायु जीवन जीने के तरीके को विस्तारपुर्वक बताया गया।इस मौके पर मंडल के अन्य अधिकारी, कर्मचारी एवं एसोसिएशन के सदस्य तथा अन्य लोग उपस्थित रहें।

आज राज्यपाल कृत्रिम उपकरण वितरण व गोष्ठी का करेंगे उद्घाटन

पटना सिटी (प्राकि)। विश्व दिव्यांगता दिवस पर भारत विकास एवं संजय आनंद विकलांग अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर में कृत्रिम उपकरण वितरण समारोह एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया है। तीन दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम के संबंध में पद्मश्री बिमल जैन एवं विवेक माथुर ने बताया कि आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के द्वारा किया जाएगा। मुख्य अतिथि के रूप में दिव्यांगजनों की आशा के किरण हड्डी एवं स्नायु रोग विशेषज्ञ डॉ एसएस झा होंगे। अध्यक्षता भारत विकास विकलांग न्यास के अध्यक्ष देशबंधु गुप्ता और संचालन संस्थापक महासचिव पद्मश्री बिमल जैन करेंगे। कार्यक्रम में दिव्यांगजनों के बीच कृत्रिम उपकरण का वितरण, तिपहिया साइकिल का वितरण, दिव्यांगता विषय पर गोष्ठी और समाजसेवियों का सम्मान किया जाएगा। आयोजन तीन दिसंबर को पूर्वाह्न 11 बजे किया जाएगा। आयोजन की तैयारी में न्यास समिति से जुड़े सुनील आनंद, प्रबंध निवासी विवेक माथुर, श्रीमती अनुपम आनंद, न्यासी अमर कसेरा, संजय डोलिया और प्रो विश्वनाथ अग्रवाल सक्रिय हैं।

एम्स पटना में सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति के प्रबंधन पर छह दिवसीय गहन प्रशिक्षण आयोजित

आपदाओं के दौरान स्वास्थ्य देखभाल, सेवाओं की प्रदायगी और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिहाज से एक महत्वपूर्ण कदम : कार्यकारी निदेशक डॉ. सौरभ वार्ष्णेय

● प्रशिक्षण सत्र में प्रदेश सहित तीन राज्यों के डॉक्टर लेंगे भाग

प्रात : किरण, संवाददाता

पटना। एम्स पटना ने जिला स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति के प्रबंधन पर छह दिवसीय गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की केंद्रीय क्षेत्र योजना, स्वास्थ्य क्षेत्र आपदा तैयारी कार्यक्रम के आपदा सेल के तहत शुरू किया गया है, और यह एक अखिल भारतीय पहल का हिस्सा है। एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक डॉ. सौरभ वार्ष्णेय के मार्गदर्शन में एम्स पटना में प्रशिक्षण सत्र शुरू हो गया है। 2 दिसंबर, को आयोजित पहले सत्र का उद्देश्य स्वास्थ्य अधिकारियों को आपदा और जोखिम प्रबंधन, कानूनी नीति और संस्थागत ढांचे, प्राकृतिक आपदाओं और अन्य आपात स्थितियों जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए आवश्यक उपकरणों और ज्ञान से लैस करना है। प्रशिक्षण सत्र में तीन राज्यों अरुणाचल प्रदेश, बिहार और झारखंड के डॉक्टर भाग ले रहे हैं कार्यक्रम का उद्घाटन एम्स पटना की डीन डॉ. रुचि, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अनुप कुमार और अस्पताल प्रशासन के प्रमुख डॉ. सुजीत कुमार सिन्हा, डॉ. रामकृष्ण मंडल की उपस्थिति में हुआ। सीएफएम विभाग एम्स पटना से डॉ. महेंद्र, डॉ. मोहित भारद्वाज, डॉ. दीपिका अग्रवाल और डॉ. संतोष कुमार निराला आदि उपस्थित थे। अस्पताल प्रशासन विभाग के प्रमुख और पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. सुजीत कुमार सिन्हा ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों और कानूनी नीति और संस्थागत ढांचे के प्रबंधन में तैयारियों और सक्रिय उपायों के महत्व पर जोर दिया। डॉ. सिन्हा ने अपने संबोधन के दौरान कहा, ह्वजिला-स्तरीय क्षमता को मजबूत करना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य प्रणालियां आपात स्थिति का सामना करने पर त्वरित और प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकें। छह दिनों के दौरान, कार्यक्रम आपातकालीन प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर गहन सत्र प्रदान करेगा, जिसमें स्वास्थ्य खतरों का शीघ्र पता लगाना, संसाधनों का समन्वय, संकट के दौरान संचार रणनीतियां और सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोगात्मक प्रयास शामिल हैं। प्रतिभागियों को आपातकालीन स्थितियों में अपने नेतृत्व और परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विशेषज्ञ के नेतृत्व वाली चचाओं, व्यावहारिक सिमुलेशन और केस-आधारित शिक्षा से लाभ होगा। डॉ. रुचि ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा, एम्स पटना एक मजबूत स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। यह प्रशिक्षण चिकित्सा अधिकारियों को सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों के प्रबंधन में सबसे आगे रहने के लिए सशक्त बनाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि जरूरत के समय समुदायों की सुरक्षा की जा सके।ह्व ह्व स्वास्थ्य देखभाल में यह पहल जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवा वितरण और संकट प्रबंधन में सुधार के लिए चल रहे समर्पण को दशार्ती है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों के दौरान समय पर और कुशल प्रतिक्रिया को सक्षम बनाती है। कार्यक्रम 7 दिसंबर, 2024 को समाप्त होगा, जिसमें प्रतिभागियों को सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकालीन प्रबंधन में उनकी बढ़ी हुई क्षमताओं को पहचानने वाले प्रमाण पत्र प्राप्त होंगे।

नीतीश कुमार की संवाद यात्रा को ले प्रशासनिक गलियारे में हलचल तेज

● गांवों के चयन व निरिक्षण में युद्धस्तर पर जुटी प्रशासनिक टीम

प्रात : किरण, संवाददाता

पालीगंज :- गोपाल विद्यार्थी बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की आगामी 15 दिसंबर से शुरू होने वाली यात्रा को लेकर जिले के प्रशासनिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है. राज्य के मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा द्वारा हर जिलों के अधिकारियों से वैसे पांच गावों की सूची मांगी गई है जहां राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार संवाद एवं समीक्षा बैठक करेंगे, मुख्यमंत्री अपनी यात्रा के दौरान जिले के सात निश्चय योजना पार्ट वन और पार्ट टू, जल जीवन हरियाली सहित कुछ अन्य विकास योजनाओं की समीक्षा करेंगे. बता दें कि इस दौरान वे कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन भी करेंगे, मुख्य सचिव द्वारा जिलाधिकारी से संवाद और समीक्षा बैठकों को लेकर पांच गांवों की सूची मांग जाने के बाद जिला प्रशासन, सीएम के कार्यक्रम को लेकर रविवार से पूरी तरह एक्शन मोड में आ गया है. जिलाधिकारी ने आनन फानन में जिले के सभी वरीय पदाधिकारियों के साथ ऑनलाइन जूम मीटिंग की और अपने अपने प्रखंडो का भ्रमण कर जैसे गांवों का चयन कर उसकी सूची देने का निर्देश दिया. जिलाधिकारी के निर्देश के बाद जिले के सभी वरीय पदाधिकारी सीएम के संवाद सह समीक्षा बैठक का स्थल और गांवों की सूची तैयार करने में युद्ध स्तर पर जुट गए हैं. पालीगंज एसडीएम अमनप्रीत सिंह रविवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी पालीगंज, नगर कार्यपालक पदाधिकारी पालीगंज, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी पालीगंज व सम्बंधित थानाध्यक्ष के साथ पालीगंज प्रखंड अंतर्गत नवनिर्मित व्यवहार न्यायालय व आईटीआई खीरीमोर सहित अन्य स्थलों का निरिक्षण किया। एसडीएम अमनप्रीत सिंह विभिन्न जगहों का भ्रमण कर स्थल चयन में जुट गए हैं. इसके साथ ही अनुमंडलों के सभी प्रखंडों के बीडीओ भी सीएम की संवाद यात्रा को लेकर गांवों का चयन कर सूची तैयार करने में जुटे हुए हैं. मिली जानकारी के मुताबिक जल्द ही मुख्य सचिव के साथ होने वाली बैठक के पहले पांच गावों की सूची के साथ सीएम के संवाद स्थलों की सूची अंतिम रूप से मंत्रिमंडल सचिवालय को भेज दी जाएगी।

जीविका द्वारा विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन

ग्रामीण स्तर पर कौशल विकास कार्यक्रमों से मिल रहे हैं अपेक्षित लाभ

प्रात : किरण, संवाददाता

पटना। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस प्रयोजन हेतु ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए ग्रामीण विकास विभाग के तत्वाधान में जीविका द्वारा विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। कौशल विकास कार्यक्रमों के द्वारा जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी जीविका दीदियों के साथ ही उनके 18 से 35 वर्ष के बेटे-बेटियों को भी उनके योग्यता एवं हुनर के अनुरुप प्रशिक्षण देकर स्वावलंबी बनाया जा रहा है। बिहार में जीविका द्वारा दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के युवक-युवतियों को विभिन्न विधाओं में निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराये जाते हैं। इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत है। इन संस्थानों के माध्यम से युवाओं को विभिन्न विधाओं में तीन से 6 माह का आवासीय प्रशिक्षण एवं 2 से 3 माह का ऑन जॉब ट्रेनिंग दिये जाने के उपरान्त उन्हें संगठित क्षेत्र की कंपनियों में रोजगार उपलब्ध कराये जा रहे हैं। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना से ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदल रही है। इसके तहत अब तक कुल 83931 युवक-युवतियों को प्रशिक्षित किया गया है और 45255 युवक-युवतियों को नियोजित किया गया है। राज्य के विभिन्न जिलों एवं प्रखंडों में रोजगार मेले का आयोजन कर युवाओं को सीधा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। रोजगार मेले में 10 से 12 या इससे भी अधिक संख्या में नियोक्ता कम्पनियाँ एवं प्रशिक्षण संस्थान अपना स्टॉल लगाते हैं और युवाओं का पंजीकरण कर उन्हें सीधा रोजगार उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अबतक 816 रोजगार मेले का आयोजन किया गया है जिससे 61971 युवाओं को रोजगार मिला है। साथ ही आर-सेटी के तत्वाधान में जीविका समूह से जुडी महिलाओं एवं बेटे-बेटियों तथा परिजनों को भी उनके हुनर एवं रुचि के अनुरुप प्रशिक्षण देकर ऋण उपलब्ध कराते हुए स्वरोजगार उपलब्ध कराया गया है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में आर्थिक और सामाजिक स्वावलंबन तथा सशक्तिकरण देखने को मिल रहा है। जीविका और आर-सेटी के समन्वय से 326414 ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया है जिसके अंतर्गत 238578 महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास में प्रोजेक्ट उन्नति का भी बड़ा योगदान है। बिहार में जीविका द्वारा संचालित प्रोजेक्ट उन्नति के व्यापक स्तर पर क्रियान्वयन से अकुशल मजदुर विभिन्न संस्थानों से प्रशिक्षण पाकर कुशल मजदूर बन रहे हैं। उनकी कार्य कुशलता तो बढ़ी ही है साथ-ही-साथ उन्हें स्वरोजगार भी उपलब्ध हुआ है। प्रोजेक्ट उन्नति के तहत अब तक 4904 मजदूरों को प्रशिक्षित कर स्वरोजगार सुनिश्चित कराया गया है।

अपराधियों पर पुलिस की पैनी नजर, बिक्रम और दुल्हीनबाजार के चार लोग दो पिस्टल एवं सात कारतूस के साथ किया गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

बिक्रम :- गोपाल विद्यार्थी ईन दिनों अपराधियों पर पुलिस पैनी नजर है, पुलिस पदाधिकारी अलर्ट मोड में दिख रहे हैं लगातार वाहन जांच एवं छापेमारी कर पुलिस अपराधियों पर नकेल कसने में जुटी हुई है सोमवार को पालीगंज डीएसपी - 2 उमेश्वर चौधरी के नेतृत्व में पुलिस ने दुल्हिन बाजार से तीन एवं बिक्रम थाने से एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। उक्त बाबत जानकारी देते हुए डीएसपी श्री चौधरी ने बताया कि दुल्हीनबाजार वाहन जांच के दौरान पुलिस ने बाइक सवार ऋतु यादव को एक पिस्टल, सात जिंदा कारतूस एवं एक चाकू के साथ गिरफ्तार किया है। वही बाइक चालक ऋतु के पिता विजय यादव को भी पुलिस ने हिरासत में ले ली है। गिरफ्तार दोनों लोग फतेहपुर गांव के हैं।पुलिस ने बताया कि इनके खिलाफ कई मामले दर्ज हैं। वहीं धमकी देने के आरोप में दर्ज 307 के मामले में निमकीचक गांव के सुजीत कुमार को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। एक अन्य मामले में बिक्रम पुलिस ने अराप गांव में छापेमारी कर अंकित कुमार को एक देशी कट्टे के साथ गिरफ्तार किया है।सभी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

पुण्यतिथि पर किया पौधारोपण

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

एमकेएस फाउंडेशन की ओर से संयोजक बाबू भाई के नेतृत्व में समाजसेवी स्व मंटू कुमार सामंत की पांचवीं पुण्यतिथि मनाई गई। इस दौरान राजकीय महिला महाविद्यालय, गुलजारबाग परिसर में सोमवार को स्व मंटू कुमार सामंत के तैल चित्र पर पुष्पांजलि के बाद पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ श्रीमती श्रुति तेतरवे के साथ शिक्षिका डॉ किरण कुमारी, डॉ निमिषा, उषा यादव, सुनीता कुमारी, डॉ विनीता कुमारी आदि ने सहयोग किया। मौके पर फाउंडेशन के संरक्षक पंकज कुमार, अनंत अरोड़ा, आसिफ कमाल, मदन कुमार पाण्डेय, नागेंद्र कुमार, मुकेश कुमार ठाकुर, मनोज शर्मा, शाहिद अंसारी, गणेश कुमार, गोपाल कुमार गोल्डेन, संजय मालाकार, अजीतत कुमार, प्रवीण कुमार चौधरी, संतोष कुमार, श्याम कुमार और राम प्रवेश सुमन मौजूद थे।

विकास व सम्मान सभी मनुष्य का अधिकार : डॉ एस मसुदुर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

ओरिएंटल कॉलेज के परिसर में सोमवार को वर्ल्ड फिलासफी डे मनाया गया। प्रोग्राम की शुरूआत स्वागत दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉक्टर फौजिया परवीन के भाषण से हुआ। उन्होंने बताया कि दर्शन शास्त्र दुनिया के पहले शहीद सुकरात को उनके जन्मदिन के तौर पर हर नवंबर के तीसरे गुरुवार को उनका जन्मदिन विश्व दर्शन दिवस के रूप में मनाया जाता है। सुकरात ने अपने दर्शन में नीति का ज्ञान दिया। इस साल का थीम है, सबका विकास। मुख्य वक्ता के रूप में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ श्यामल किशोर ने अपने व्याख्यान में बताया कि दर्शन क्या है, इसकी क्या अहमियत है। दैनिक जीवन में दर्शन को किस तरह से अपनाया जाता है। उन्होंने जिंदगी में हर व्यक्ति को तीन सी को अपनाने के बारे में बताया। पहला सी है सृजन, दूसरा सी है कलेक्टिव और तीसरा सी है कंप्रीहेंशन। अगर तीनों सी को अपना लिया जाए, तो जिंदगी बहुत सरल और अच्छी हो जाएगी। सुकरात ने अपने शहर का प्याला पीकर लोगों को ज्ञान का एक नया दरवाजा खोल दिया। उन्होंने बताया कि फिलोसोफी का ज्ञान सिर्फ एक शहर या एक देश नहीं, बल्की सर्वस्व फैला हुआ है। इसका ज्ञान अपार है।सतत विकास से मनुष्य, पर्यावरण और समस्त जीव-जंतुओं का विकास है। प्राचार्या डॉ एस मसुदुर रहमान ने बताया कि विकास और सम्मान सभी मनुष्य का अधिकार है।मंच का संचालन डॉ मृत्युंजला कुमारी सिन्हा ने किया। सभा में शिक्षक और विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

शराबी भाई को पकड़ कर किया पुलिस के हवाले

प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी ! सरकार ने शराबबंदी शुरू की तो महिलाओं को बल मिला।उन्हें कई परेशानियों से निजात भी मिली।कई गांवों में शराबी की उसकी पत्नी विरोधी बन गई, तो कहीं पिता ही शराबी पुत्र के विरोध में खड़े हो गए। लेकिन,शराबी भाई को पुलिस के हवाले करने का मामला पहली बार मसौढ़ी नगर मुख्यालय स्थित सोनकुकरा गांव में सामने आया है। बताया जाता है कि गुंजन सिंह का भाई सुंधाशु कुमार शराबबंदी के बाद भी शराब का सेवन कर रहा था। परिजनों ने उसे काफी समझाया, लेकिन वह नहीं माना।उसकी इस आदत से तंग आकर सोमवार को नशे में धुत अपने भाई सुंधाशु कुमार को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

पालीगंज में बाइक सवार अपराधियों ने छीनी लाखो के जेवर

प्रात :किरण संवाददाता

पालीगंज अनुमंडल कार्यालय से महज पांच सौ मीटर दूरी पर धरहरा मोड़ के पास पाली पटना मुख्य सड़क पर बाइक सवार अपराधियो ने ऑटो सवार महिला से एक लाख तीस हजार के जेवर छीनकर भाग निकला। जिसकी लिखित शिकायत पीड़िता ने पालीगंज थाने में की है। जानकारी के अनुसार डीहपाली निवासी सह वार्ड पार्षद परवीन कुमार उर्फ बबलू डीलर की पत्नी सिमा कुमारी रविवार को दुल्हिन बाजार थाना क्षेत्र के उलार गांव स्थित प्रसिद्ध ओलार्क सूर्य मंदिर में सूर्य की प्रतिमा की पूजा अर्चना करने गयी थी। जहां से लौटने के लिए वह एक ऑटो पर सवार हुई। उसी दौरान दो युवक ऑटो की रेकी कर रहा था। जैसे ही ऑटो पालीगंज अनुमंडल कार्यालय से महज पांच सौ मीटर की दूरी पर पहुंची। उसी दौरान दोनों युवक बाइक पर सवार होकर वहां आ धमका तथा ऑटो को रोकवा दिया। वही ऑटो पर सवार सिमा कुमारी को डरा धमकाकर गले से सोने का मंगलसूत्र तथा चेन छीनकर फरार हो गया। उसके बाद पीड़िता ने पालीगंज थाने पहुंचकर अज्ञात के खिलाफ पुलिस को आवेदन सौंप लिखित शिकायत किया है। वही पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पेंशन की राशि बढ़ाने को लेकर एसडीओ कार्यालय पर प्रदर्शन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नागरिक अधिकार मंच के द्वारा सामाजिक सुरक्षा पेंशन (वृद्ध, विधवा एवं दिव्यांग), कन्या विवाह योजना, कबीर अंत्येष्टि योजना की राशि बढ़ाने की मांग को लेकर सोमवार को आक्रोश मार्च निकाला गया। अशोक राजपथ के बावली मोड़ से मार्च निकल कर पश्चिम दरवाजा, बेलवरगंज होते हुए अनुमंडल कार्यालय मुख्य गेट पर पहुंचा। यहां रोड पर बैठ कर घंटों प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में शामिल बड़ी संख्या में वृद्ध, विधवा व दिव्यांग लोगों ने हाथों में पेंशन बुक एवं स्लोगन लिखी तख्ती ले रखे थे। इसमें सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि 400 से बढ़ा कर 3000 करने, कन्या विवाह योजना की राशि पांच हजार से बढ़ा कर 25 हजार करने, कबीर अंत्येष्टि योजना की राशि 3000 से बढ़ा कर 10,000 करने, पेंशन समय पर देने की बात कही गई। बिहार सरकार हम पर दया करो, कबीर अंत्येष्टि की राशि हर वार्ड में उपलब्ध कराओ, मुख्यमंत्री मुदार्बाद, बिहार सरकार मुदार्बाद आदि के नारे लगा रहे थे। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए पूर्व पार्षद सह राजद के पूर्व प्रदेश महासचिव बलराम चौधरी एवं मोहम्मद जावेद ने संयुक्त रूप से कहा कि देश के अन्य राज्यों में सामाजिक सुरक्षा पेंशन की मिलने वाली राशि हजाऊ से तीन हजार तक है। मगर बिहार ही एक ऐसा राज्य है, जहां अभी तक चार सौ रुपया प्रति महीना दिया जा रहा है। यह गरीबों के साथ घोर अन्याय है। महंगाई इतना अधिक होने के कारण गरीब परेशान है ! पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता, विनोद यादव, डॉ एकबाल अहमद, दिव्यांग के पटना जिला अध्यक्ष संजीव कुमार, पेंशनर के अमोद कुमार, उमेश पंडित, राम नारायण सिंह, मुन्ना जायसवाल, कृष्ण कुमार यादव, शंभू शरण प्रसाद, शरीफ अहमद रंगरेज, एजाजुद्दीन उर्फ सानू आदि ने कहा कि गरीबों के वोट से सरकार बनती है, मगर इन लोगों को पूछने वाला कोई नहीं है। आज गरीब बीपीएल परिवार कबीर अंत्येष्टि योजना से वंचित हो रहे हैं। गरीब परिवार चंदा वगैरह करके शव को दफनाया एवं जलाया जा रहा है। मगर योजना का लाभ लोगों को नहीं मिल रहा है। इस दौरान मो साबिर अली, मो शौकत, इलियास बाबर, मो फिरोज, जयगन मेहंदी, रामजी सहनी, गुलाम सरवर, देवेंद्र राय, रघुनाथ यादव आदि ने सरकार से पूछा है कि क्या सरकार के कन्या विवाह योजना की राशि पांच हजार से पिता अपनी बेटी की शादी कर सकता है। इस महंगाई में कुछ नहीं हो सकता है। इस राशि को बढ़ा कर 25 हजार करने की मांग की गई। प्रदर्शन कर रहे पेंशनर में धर्मशीला देवी, सुनीता देवी, सोनी देवी, लाल देवी, मुंशी राय, सोनेलाल राय, मो मुमताज, मो शौकत, दिव्यांग मो नसीम आदि लोगों ने अनुमंडलाधिकारी को पेंशन 400 से बढ़कर तीन हजार करने, कन्या विवाह की राशि 25 हजार करने, पेंशन का भुगतान समय पर करने, कबीर अंत्येष्टि योजना की राशि हर वार्ड में उपलब्ध कराने की मांग की। अनुमंडलाधिकारी सत्यम सहाय ने सभी बातों को सुन प्रदर्शनकारियों को समझा-बुझा कर धरना स्थल से हटाया। प्रदर्शन में शामिल एक प्रतिनिधिमंडल अनुमंडलाधिकारी को अपनी मांगों के समर्थन में मांग पत्र सौंपा।

तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारों से मर्यादा उल्लंघन में कार्रवाई को सौंपा पत्र

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

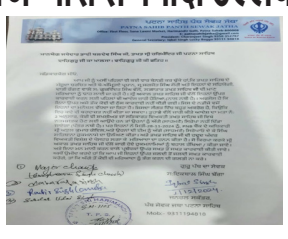

पटना साहिब पंथ सेवक जत्था की ओर से तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह को पत्र सौंपा गया है। इसमें तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष और कनीय उपाध्यक्ष पर कार्रवाई किए जाने की बात कही गई है। पत्र में कहा गया है कि आपसे पहले भी अनेक बार अनुरोध किया गया है कि प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही और कनीय उपाध्यक्ष गुरुविंदर सिंह, जो दाढ़ी रंगते हैं, उन पर कार्रवाई करने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा पहले ही आदेश जारी किया गया था। वह तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारों के नाम संबोधित था। अफसोस की बात है कि उस पर अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। इससे उन दोनों का मनोबल बढ़ता ही जा रहा है। इससे सिख समाज में आक्रोश है और वह इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। वहीं दूसरी ओर आपके द्वारा जारी आदेश के संकल्प संख्या 2 के अनुसार कोई भी व्यक्ति या सम्मानित व्यक्ति तख्तश्री पटना साहिब में मत्था टेकने आते हैं, तो उन्हें दरबार साहिब के ठीक सामने खड़ा होकर सिरोपा नहीं दिया जाएगा। मगर आपके हुकुमनामा का भी अवहेलना किया गया। 28 नवंबर, 2024 को पीएनबी के अधिकारी और उनकी टीम तख्तश्री पटना साहिब के दरबार साहिब के सामने सिरोपा देकर आप सबों के आदेश का उल्लंघन किया गया। यह तख्तश्री पटना साहिब की सीमाओं के भीतर विशेष व्यक्तियों के पोस्टर लगा कर भी पुरातन मर्यादा का उल्लंघन किया गया है। श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा जारी आदेशों को बहाल किया जाना चाहिए और अवज्ञाकारी प्रबंधकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्हें उम्मीद है कि आप जल्द से जल्द दोषियों पर कार्रवाई करेंगे, ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति मर्यादा के खिलाफ गलती न कर सके। सौंपे गए पत्र में इकबाल सिंह उर्फ लकी बग्गा के अलावा सरदार गुरशरण सिंह उर्फ मेजर चावला, महाराजा सिंह सोनू, सरदार रणवीर सिंह उर्फ दीपक लांबा और उदय सिंह के हस्ताक्षर हैं।

आम बैठक में नगर परिषद् कर्मचारी हुए सम्मानित

प्रात :किरण संवाददाता

फतुहा। सोमवार को नगर परिषद की आम बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता मुख्य पार्षद रुपा कुमारी ने किया। बैठक का संचालन सिटी मैनेजर साकेश कुमार सिन्हा ने किया। जिसमें पिछले बैठक में लिए गए निर्णय की समीक्षा भी की गई। आज हुई बैठक में पार्षद दीपक कुमार ने कई प्रस्ताव रखें। इन प्रस्तावों में वार्ड नंबर 12,13,14,15,25,26 और 27 में नाली निकास की समस्या, नई कुर्सी-टेबल क्रय, शहर में गगनचुंबी राष्ट्रीय ध्वज, नगर परिषद् कार्यालय में 200 पीस फूल सहित गमला, नए साल में सभी पार्षदों के लिए लैपटॉप देने और पेट्रोल खर्च, फुटपाथी दुकानदारों को उचित जगह व्यवस्थित करने, स्ट्रीट लाइट को दुरुस्त करने, अवैध होर्डिंग पर करवाई, पार्षदों को राजगीर टूर करवाने की मांग आदि रखे। वहीं पार्षद संतोष चंद्रवंशी ने बोरिंग को सुचारू रूप से न चलने एवं आवास योजना संबंधित अपनी बात रखी। इसके अलावा पार्षद अजीत कुमार उर्फ पप्पू चंद्रवंशी ने अपने वार्ड के जल निकासी की समस्या को दूर करने की बात रखी। वार्ड नं एक सहित अन्य पार्षदों ने अपनी समस्या संबंधित पत्र कार्यपालक पदाधिकारी को सौंपा। वहीं बैठक में दीपावली, दशहरा, छठ पूजा एवं कार्तिक पूर्णिमा के समय नगर परिषद् के कर्मचारियों के बेहतर कार्य हेतु कार्यपालक पदाधिकारी, सिटी मैनेजर, मुख्य पार्षद, उपमुख्य पार्षद एवं पार्षदों ने संयुक्त रूप से उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मौके पर उपमुख्य पार्षद अंजनी कुमारी, पार्षद दीपक कुमार, संजय कुमार बिट्टू, अजीत कुमार उर्फ पप्पू चंद्रवंशी, नागेन्द्र राय, सुजाता देवी, ठाकुर प्रसाद तांती, बेबी देवी, संजीव कुमार, संतोष चंद्रवंशी सहित अन्य पार्षद मौजूद रहे।

राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

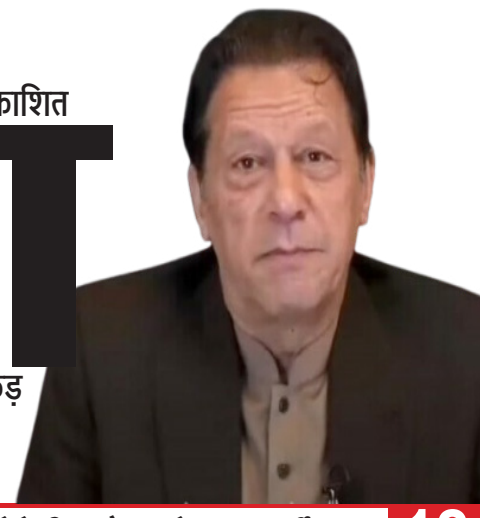

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 महाराष्ट्र विधानसभाः जितेंद्र अव्हाड होंगे विधायक दल नेता?

इमरान खान की पार्टी के प्रदर्शन के दौरान 'कारतूसों के बिना तैनात थे सुरक्षाकर्मी 12

वर्ष : 12 | अंक : 229 | पटना, मंगलवार, 03 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

पाकिस्तानी नौसेना को मजबूत बना रहा है चीन, भारत भी तैयारः नौसेना प्रमुख

भारत पड़ोसी देशों की सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार

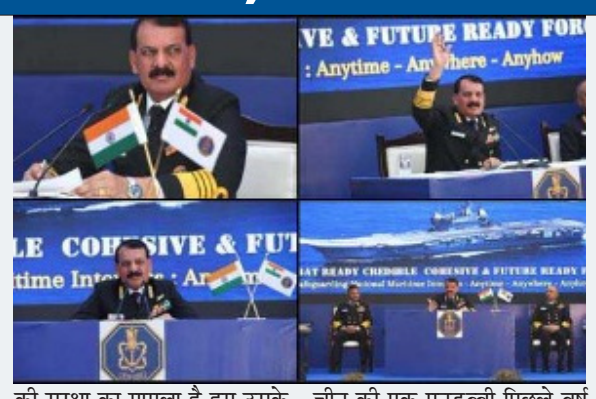

नई दिल्ली/एजेंसी। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने सोमवार को कहा कि चीन पाकिस्तान की नौसेना को युद्धपोतों तथा पनडुब्बियों से लैस कर मजबूत बनाने में लगा है लेकिन भारत किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि भारतीय नौसेना की हिन्द महासागर में सभी नौसेनाओं की गतिविधियों पर कड़ी नजर रहती है और चीन की पनडुब्बी पिछले वर्ष इस क्षेत्र में आयी थी और फिर कराची गयी थी लेकिन उसके बाद से चीनी की पनडुब्बी इस क्षेत्र में दिखाई नहीं दी है। चीन और बंगलादेश की नौसेनाओं के बीच सहयोग के बारे में एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि उनके बीच प्रशिक्षण और अभ्यास होता है। बंगलादेश की नौसेना भारत के साथ भी अभ्यास करती है। हालाकि बंगलादेश में बदले हालातों के बीच चीन की नौसेना और बंगलादेश की नौसेना के बीच गठजोड़ की रिपोर्टों पर उन्होंने कुछ भी कहने से इंकार कर दिया। नौसेना दिवस चार दिसम्बर से पहले सोमवार को यहां वार्षिक संवाददाता सम्मेलन में एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि सरकार ने नौसेना के लिए दो और परमाणु पनडुब्बियों की मंजूरी दे दी है। उन्होंने कहा कि नौसेना आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से काम कर रही है और अभी 62 युद्धपोत तथा एक पनडुब्बी देश में ही बनायी जा रही है। एडमिरल त्रिपाठी ने एक सवाल के जवाब में कहा कि भारत पाकिस्तान की नौसेना की हैरान कर देने वाली मजबूती से अवगत है और रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि उसे अगले एक दशक में 50 प्लेटफार्म मिलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि यह अफसोस की बात है कि पाकिस्तान ने लोगों के कल्याण की जगह हथियारों को चुना है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को शुभकामनाएं। नौसेना प्रमुख ने कहा कि चीन पाकिस्तान की नौसेना को मजबूत बनाना चाहता है और पाकिस्तान के कई युद्धपोत तथा पनडुब्बी या तो चीन में बन रहे हैं या उसकी मदद से बन रहे हैं। चीन की मदद से पाकिस्तान नौसेना के लिए आठ पनडुब्बी बनायी जा रही हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय नौसेना भी मजबूती हासिल कर रही है और भारत पड़ोसी देशों की सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि दक्षिण चीन सागर में भारत अपने हितों की रक्षा के लिए मुस्तैद है लेकिन दूसरे देशों के साथ जो होता आ रहा है उसमें कोई बदलाव नहीं आया है। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि समुद्र सभी के लिए खुला है और सभी उसमें गतिविधियों के लिए स्वतंत्र है लेकिन जहां तक हितों की सुरक्षा का मामला है हम उसके लिए सजग हैं और विशेष रूप से हिन्द महासागर में किसी भी तरह की गतिविधि भारतीय नौसेना की नजर से नहीं बच सकती। उन्होंने कहा कि चीन की एक पनडुब्बी पिछले वर्ष हिन्द महासागर क्षेत्र में दिखाई थी जिसके बाद वह कराची जाने के बाद वापस चली गयी। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि चीन विश्व शक्ति बनने की कोशिश में है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि नौसेना के लिए फ्रांस से 26 मरीन राफेल लड़ाकू विमान की खरीद से संबंधित प्रक्रिया अंतिम चरण में है और इस सौदे को जल्दी ही केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सुरक्षा मामलों की समिति की मंजूरी मिलने वाली है। उन्होंने कहा कि यह सरकार से सरकार के बीच खरीद प्रक्रिया है इसलिए संभावना है कि इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने नौसेना के लिए दो और परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियों की मंजूरी दे दी है। नौसेना की योजना उसके बेड़े में छह परमाणु पनडुब्बी शामिल करने की है। इसमें करीब एक दशक का समय लग सकता है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि नौसेना तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ रही है। अभी देश में 62 युद्धपोत और एक पनडुब्बी निमाणार्धीन है। इसके अलावा 31 अत्याधुनिक युद्धपोतों और प्रोजेक्ट -75 की छह पनडुब्बियों को भी जरूरत के आधार पर मंजूरी दी जा चुकी है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा दो युद्धपोत रूस में बनाये जा रहे हैं। नौसेना के लिए 60 बहुउद्देशीय हेलिकोप्टरों की खरीद को भी जरूरत के आधार पर मंजूरी दी गयी है। ये नौसेना के चेतक हेलिकॉप्टरों की जगह लेंगे। नौसेना प्रमुख ने इस मौके पर नौसेना को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के उद्देश्य से तैयार भारतीय नौसेना विजन 2047 दस्तावेज भी जारी किया।

शीतकालीन सत्र : संसद के दोनों सदनों में विपक्ष का हंगामा

हंगामे के कारण राज्यसभा में नहीं चल सका प्रश्नकाल

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। शीतकालीन सत्र के दौरान सोमवार को दोनों सदनों में विपक्ष ने विभिन्न मुद्दों को लेकर हंगामा किया। हंगामे की वजह से सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। राज्यसभा में सोमवार को विभिन्न मुद्दों पर विपक्ष के हंगामे के कारण प्रश्न काल नहीं हो सका और सदन की कार्यवाही मंगलवार पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। इससे पहले सुबह में भी कार्यवाही शुरू होने पर अडानी समूह में अनियमितताओं की जांच, मणिपुर और उत्तर प्रदेश के संभल में हिंसा तथा बंगलादेश में हिंदुओं पर अत्याचार की घटनाओं पर चर्चा करने की मांग को लेकर विपक्ष ने हंगामा किया, जिसके कारण सदन की कार्यवाही 12:00 बजे तक स्थगित करनी पड़ी और शून्यकाल नहीं हो सका। सभापति जगदीप धनखड़ ने स्थगन के बाद प्रश्नकाल शुरू करने की कोशिश की लेकिन विपक्षी सदस्याओं की टोकाटाकी ओर एक साथ बोलने के कारण सदन की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

श्री धनखड़ ने सुबह सदन की कार्यवाही शुरू करते हुए सदन के नेता जगत प्रकाश नड्डा को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। इसके बाद उन्होंने सदन के पटल पर आवश्यक विधायी दस्तावेज रखवायें। श्री धनखड़ ने सदन को बताया कि उन्हें नियम 267 के अंतर्गत 20 नोटिस मिले हैं। ये नोटिस अडानी समूह में अनियमितताओं की जांच, मणिपुर और उत्तर प्रदेश के संभल में हिंसा, बंगलादेश में हिंदुओं पर अत्याचार और इस्कॉन पुजारी की गिरफ्तारी, राजस्थान के अजमेर शरीफ दरगाह के मामले और दिल्ली में कथित बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थिति तथा केरल में वायनाड को विशेष पैकेज देने की मांग को लेकर हैं। सभापति ने कहा कि नियम 267 विशेष उद्देश्यों के लिए है और ये नोटिस निर्धारित प्रावधानों के अनुरूप नहीं होने के कारण अस्वीकार किये जा रहे हैं। इसके बाद विपक्षी सदस्यों ने जोर-जोर से बोलना शुरू कर दिया। कुछ सदस्य अपनी सीटों से आगे आ गए और शोर शराबा करने लगे। श्री धनखड़ ने सदस्यों से शांत होने की अपील की और कहा कि जनहित में संसद का चलना आवश्यक है। लेकिन इस अपील का शोर शराबा कर रहे सदस्यों पर कोई असर नहीं हुआ तो उन्होंने सदन की कार्यवाही 12:00 बजे तक स्थगित करने की घोषणा कर दी।

लोकसभा की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित

विपक्ष के हंगामे के कारण सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही मंगलवार पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गयी। अपराह्न 12 बजे सदन जैसे ही पुनः समवेत हुआ, समाजवादी पार्टी, कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) के सदस्य सदन के बीचोबीच आकर संभल हिंसा मामले को लेकर नारेबाजी और शोरगुल करने लगे। श्रीमती राय ने विपक्षी सदस्यों के शोरगुल के बीच ही आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखवाये। उन्होंने विपक्षी सदस्यों से अपने-अपने स्थानों पर जाने की अपील की। उन्होंने कहा कि कुछ सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों के जनहित के महत्वपूर्ण मुद्दों को सदन में उठाना चाहते हैं, उन्हें इसका मौका दीजिए। विपक्षी सदस्यों पर श्रीमती राय की अपील का कोई असर नहीं हुआ और वे शोरशराबा करते रहे। इस पर उन्होंने सदन की कार्यवाही मंगलवार पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिये स्थगित कर दी। इससे पहले आज पूर्वाह्न 11 बजे सदन के समवेत होने पर पर अध्यक्ष ओम बिरला ने प्रश्नकाल शुरू करने की घोषणा की और तेलुगू देशम पार्टी के लक्ष्मीनारायण वाल्मीकि को प्रश्न पूछने के लिये पुकारा, लेकिन इसी बीच विपक्षी सदस्य अडानी मामले में चर्चा की मांग को लेकर हंगामा करने लगे। भारी हंगामे के बीच कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने जवाब देना शुरू किया, लेकिन हंगामा और बढ़ गया। अध्यक्ष ने विपक्षी सदस्यों से अपील की कि प्रश्न काल उनका समय है। प्रश्न काल की कार्यवाही चलने दें और सभी अपने-अपने स्थान पर जायें, लेकिन हंगामा नहीं रुका। इसके बाद अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही पूर्वाह्न 12 बजे तक स्थगित कर दी।

महिला सशक्तिकरण पर राज्य सरकार का विशेष जोर : मंत्री

बोलें-नीतीश कुमार के नेतृत्व में हर क्षेत्र में हुई प्रगति

● महिला संवाद हेतु 02 अरब 25 करोड़ की स्वीकृति

प्रातः किरण

पटना। ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने बताया कि राज्य स्कीम योजना महिला सशक्तिकरण (महिला संवाद) हेतु द्वितीय अनुपूरक के लिए दो अरब 25 करोड़ रुपए का स्वीकृति दी गई है। उक्त राशि से महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनका सामाजिक उत्थान, आर्थिक सुदृढीकरण, स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने सहित महिलाओं के अन्य सारी हित में ध्यान केन्द्रीत कर खर्च किया जाएगा। मंत्री श्री श्रवण कुमार ने मीडिया कर्मियों एवं उपस्थित लोगों से वार्ता के क्रम में बताया कि हमारे राज्य के मुखिया नीतीश कुमार की यह सोच रही है कि जब हम गाँव की महिलाओं को कार्य कुशल एवं समृद्ध बना देगें तब हमारा गाँव स्वतः विकसित एवं आत्मनिर्भर होने लगेगी। ग्रामीण महिलाओं को सिलाई का प्रषिक्षण देकर कार्य कुशल बनाया जा रहा है इससे रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं और ग्रामीण महिलाओं की आमदनी बढ़ रही है। मंत्री श्री कुमार ने कहा कि जीविका के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में और भी कई अच्छे कार्य हो रहे हैं। राज्य सरकार के द्वारा समय-समय पर जीविका दीदी को विभिन्न योजनाओं के अनुश्रवण में सहयोग एवं कार्यकलापों से सम्बद्ध करते हुए महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण किया जा रहा है। जीविका दीदियों को सरकारी अस्पतालों में दीदी की रसोई के माध्यम से साफ एवं स्वच्छ खाना उपलब्ध कराने का कार्य, राज्य सरकार के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को पोशाक उपलब्ध कराने के साथ-साथ मनरेगा से निर्मित तालाबों में मछली पालन एवं बत्तख पालन कर आर्थिक सशक्तिकरण का कार्य किया जा रहा है। मंत्री श्री कुमार ने आगे यह भी कहा कि बिहार सरकार विकास पुरूष नीतीश कुमार के नेतृत्व में लगातार काम कर रही है एवं हरेक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। उन्होंने महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने हेतु बिहार सरकार के विभिन्न प्रयासों पर भी प्रकाश डाला तथा कहा कि बिहार सरकार द्वारा आरंभ की गयी कई योजनाओं को अन्य राज्यों के राज्य सरकार के द्वारा बिहार सरकार द्वारा महिलाओं के विकास के लिए चला रही योजनाओं का अनुसरण कर योजना बनायी जा रही है।

राज्य में कोई भी गरीब नहीं रहेगा बेघर : श्रवण

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) हेतु 7 करोड़ 46 लाख राशि जारी

ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2016-17 से केन्द्र प्रायोजित प्रधानमंत्री आवास योजना(ग्रामीण) का कार्यान्वयन कराया जा रहा है । वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) का कार्यान्वयन हेतु राज्य सरकार ने प्रथम किस्त के द्वितीय भाग के लिए कुल 7 करोड़ 46 लाख रुपए की राशि ग्रामीण विकास विभाग द्वारा बिहार के सभी जिलों के लिए जारी किया गया । योजनान्तर्गत लाभुकों का चयन सामाजिक आर्थिक जाति आधारित जनगणना 2011 में आवास की आवश्यकता वाले चिन्हित परिवारों में से जाँचोपरांत एवं ग्राम सभा द्वारा पात्र परिवारों के चयन एवं प्राथमिकता निर्धारण के पश्चात लाभुकों को आवास निर्माण हेतु आर्थिक सहायता दी जा रही है। विशेष चर्चा करते हुए ग्रामीण विकास मंत्री श्री श्रवण कुमार ने आगे बताया केन्द्र से वित्तीय वर्ष 2016-17 से 2021-22 तक के लिए 37 लाख 1 हजार 138 का लक्ष्य प्राप्त हुआ था । लक्ष्य के विरूद्ध 37 लाख 747 आवासों की स्वीकृति प्राप्त हुई जिसके विरूद्ध 36 लाख 56 हजार 446 आवासों को पूर्ण कराया गया हैं। अपूर्ण आवासों की संख्या 44 हजार 301 है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में 2 लाख 43 हजार 903 आवासों का लक्ष्य प्राप्त हुआ है जिसके विरूद्ध 2 लाख 34 हजार 755 आवासों की स्वीकृति की गयी। जिसके विरूद्ध 11 हजार 464 आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण करा लिया गया है । प्रथम किस्त प्राप्त लाभुकों की संख्या 2 लाख 15 हजार 26, द्वितीय किस्त प्राप्त लाभुकों की संख्या 87 हजार 765 एवं तृतीय किस्त प्राप्त लाभुकों की संख्या 9 हजार 26 है । शेष अपूर्ण आवासों के निर्माण प्रक्रियाधीन है। ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा कि राज्य के ग्रामीण क्षेत्र का कोई भी गरीब पात्र परिवार गृह विहीन नहीं रहेगा सरकार उन्हें आवास सहायता प्रदान कर पक्के छतदार मकान उपलब्ध करायेगी। जारी हुई निधि से अपूर्ण आवासों के निर्माण प्रक्रिया में तेजी आएगी एवं राज्य के पात्र गरीब जनता को अपना पक्का घर मिल सकेगा।

प्रयागराजः महाकुंभ 2025 की तैयारियां युद्ध स्तर पर जारी

प्रयागराज/एजेंसी। उत्तर प्रदेश में प्रयागराज की पावन धरती पर 12 वर्षों बाद 2025 में महाकुंभ का आयोजन होने जा रहा है। महाकुंभ का आयोजन 13 जनवरी से 26 फरवरी तक होगा। महाकुंभ की तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही हैं। आधिकारिक अनुमान के अनुसार, महाकुंभ मेले में लगभग 43 करोड़ तीर्थयात्रियों के आने का अनुमान है। व्यापक तैयारियां चल रही हैं और संगम से लेकर महाकुंभ तक सभी विकास गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए जा रहे हैं। महाकुंभ मेला 2025 की तैयारियों की सक्रिय रूप से निगरानी कर रहे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे इस आयोजन में शामिल होने वाले भारत और विदेश के तीर्थयात्रियों के लिए एक सहज अनुभव प्रदान करें। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पीडब्ल्यूडी ने भी अपनी रफ्तार बढ़ा दी है और पांटून पुलों के साथ-साथ सड़कों के रेनोवेशन के काम में भी तेजी देखने को मिल रही है। एक दिसंबर तक लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) की ओर से 27 रोड्स का रिन्यूअल किया जा चुका है। जबकि, बाकी रोड्स के रिन्यूअल का काम 10 दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी तरह 17 रोड्स के सौंदर्यीकरण का कार्य भी 5 दिसंबर तक पूरा होने की संभावना है।

अभ्यास संयुक्त अभ्यास के अंतर्गत दोनों देशों की सेनाएं जंगल में अभ्यास करेगी

आतंकियों से निपटने के लिए भारत-मलेशिया का सैन्य अभ्यास हरिमाऊ शक्ति शुरू

संयुक्त अभ्यास के अंतर्गत दोनों देशों की सेनाएं जंगल में आतंकवाद विरोधी अभियान का अभ्यास करेगी। एक खास अभ्यास के तहत आतंकवादियों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र को मुक्त करने के लिए सैन्य हमला किया जाएगा। इससे भारत और मलेशिया दोनों देशों की सैन्य कार्य क्षमता का विकास होगा। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक मलेशिया में होने वाला यह अभ्यास जंगल के वातावरण से संबंधित अभियानों पर केंद्रित है।

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और मलेशिया की सेनाओं के बीच होने वाला संयुक्त सैन्य अभ्यास हरिमाऊ शक्ति सोमवार को प्रारंभ हो गया। यह युद्धाभ्यास मलेशिया में आयोजित किया जा रहा है। संयुक्त अभ्यास के अंतर्गत दोनों देशों की सेनाएं जंगल में आतंकवाद विरोधी अभियान का अभ्यास करेगी। एक खास अभ्यास के तहत आतंकवादियों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र को मुक्त करने के लिए सैन्य हमला किया जाएगा। इससे भारत और मलेशिया दोनों देशों की सैन्य कार्य क्षमता का विकास होगा। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक मलेशिया में होने वाला यह अभ्यास जंगल के वातावरण से संबंधित अभियानों पर केंद्रित है। हरिमाऊ शक्ति सैन्य अभ्यास का यह चौथा संस्करण है जो सोमवार को मलेशिया के पहांग जिले के बेंटोंग कैंप में शुरू हुआ। यह अभ्यास 15 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। 78 कर्मियों वाली भारतीय टुकड़ी का प्रतिनिधित्व महार रेजिमेंट की एक बटालियन कर रही है। वहीं, मलेशियाई टुकड़ी का प्रतिनिधित्व ह्यारॉयल मलेशियाई रेजिमेंट के 123 कर्मियों द्वारा किया जा रहा है। संयुक्त अभ्यास हरिमाऊ शक्ति एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जो भारत और मलेशिया में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है। पिछला संस्करण नवंबर 2023 में भारत के मेघालय में उमरोई छावनी में आयोजित किया गया था। संयुक्त अभ्यास का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र अधिदेश के अध्याय 7 के तहत जंगल क्षेत्र में आतंकवाद विरोधी अभियान चलाने के लिए दोनों पक्षों की संयुक्त सैन्य क्षमता को बढ़ाना है। यह अभ्यास जंगल के वातावरण में अभियानों पर केंद्रित होगा। संयुक्त सैन्य अभ्यास के विषय में जानकारी देते हुए रक्षा मंत्रालय ने बताया कि इस अभ्यास को दो चरणों में आयोजित किया जाएगा। पहले चरण में दोनों सेनाओं के बीच क्रॉस ट्रेनिंग पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इसमें दोनों देशों की सैन्य टुकड़ियों के लिए व्याख्यान, प्रदर्शन और जंगल के इलाकों में विभिन्न अभ्यास शामिल हैं। अंतिम व दूसरे चरण में दोनों सेनाएं एक मॉक अभ्यास में सक्रिय रूप से भाग लेंगी। इसमें सैनिक एंटी-एमटी एंबुश, बंदरगाह पर कब्जा, टोही गश्त, एंबुश और आतंकवादियों द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र पर हमला सहित विभिन्न अभ्यास करेंगे। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक हरिमाऊ शक्ति अभ्यास से दोनों पक्षों को संयुक्त अभियान चलाने की रणनीति, तकनीक और प्रक्रियाओं में सर्वोत्तम अभ्यास साझा करने का अवसर मिलेगा। इससे दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन और सौहार्द विकसित करने में मदद मिलेगी। संयुक्त अभ्यास से रक्षा सहयोग भी बढ़ेगा, जिससे दोनों मित्र देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में और वृद्धि होगी।

आईआरएस ट्रेनी अधिकारियों ने राष्ट्रपति से की मुलाकात

द्रौपदी मुर्मू बोलीं- हमेशा ईमानदारी से काम करना होगा

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर) के ट्रेनी अधिकारियों ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। इस दौरान राष्ट्रपति ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय राजस्व सेवा हमारी अर्थव्यवस्था को एक समान कर प्रणाली और साझा प्रशासनिक मूल्यों के माध्यम से जोड़ती है। आईआरएस अधिकारी भारत सरकार, व्यापार और विभिन्न राज्यों के टैक्स कर प्रशासन (टैक्स एडमिनिस्ट्रेशन) के बीच एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में राष्ट्रीय हित का एजेंडा काफी हद तक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग से तय होता है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे देश की आर्थिक सीमाओं के संरक्षक हैं। हमेशा ईमानदारी और समर्पण के साथ काम करना होगा। दूसरे देशों के साथ व्यापार सुगमता समझौतों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर) देश को आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचे के निर्माण, सामाजिक-आर्थिक योजनाओं को चलाने, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए संसाधन उपलब्ध कराती है। इस तरह यह सेवा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अपनी भूमिका अच्छे से निभाने के लिए उन्हें ऐसे सिस्टम और प्रक्रियाएं विकसित करने की जरूरत है जो पारदर्शी हो और जवाबदेही हो। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि इस नए और गतिशील युग में कर संग्रह (टैक्स कलेक्शन) में कम हस्तक्षेप और प्रौद्योगिकी का अधिक उपयोग करने की कोशिश की जानी चाहिए। टैक्स एडमिनिस्ट्रेशन के क्षेत्र में नए विचार और नए समाधान लाने की जिम्मेदारी युवा अधिकारियों पर है। राष्ट्रपति ने अधिकारियों को सलाह दी कि वे याद रखें कि कराधान केवल देश के राजस्व को बढ़ाने का साधन नहीं है। यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। देश के नागरिकों की ओर से दिया जाने वाला टैक्स देश और लोगों के विकास के लिए उपयोग किया जाता है। इसलिए, यदि वे अपना काम लगन और निष्ठा से करेंगे, तो वे देश के विकास में बहुत बड़ा योगदान दे पाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

जल जीवन हरियाली के विषय के ऊपर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

मधुबनी जिला स्थापना दिवस सह मधुबनी महोत्सव 2024 के अवसर पर वॉट्सन उच्च विद्यालय के प्रांगण में जल जीवन हरियाली के विषय के ऊपर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता निम्न रूपेण प्रतिभागियो को प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए चयनित किया गया है। प्रथम पुरस्कार इंडियन पब्लिक स्कूल के कक्षा 8 की छात्रा सृष्टि कुमारी को द्वितीय पुरस्कार इंडियन पब्लिक स्कूल के ही कक्षा 8 के संजीव पुष्प जीत को, तृतीय पुरस्कार रीजनल सेकेंडरी स्कूल के आर्यन कुमार गुप्ता को प्राप्त हुआ।

पुलिस ने दो वारंटी लहेरियागंज से किया गिरफ्तार

मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे रहिका थाना पुलिस ने माननीय न्यायालय द्वारा निर्गत अधिपत्र के आधार पर थाना क्षेत्र लहेरियागंज से दो वारंटी को गिरफ्तार कर लिया है. थानाध्यक्ष ने जानकारी देते हुए बताया की गिरफ्तार दोनों वारंटी न्यायालय से फरार चल रहा था न्यायालय से निर्गत अधिपत्र के आधार पर थाना क्षेत्र लहेरियागंज से बजरंगी पासवान पिता रामलखन पासवान, नन्द पासवान पिता टहल पासवान थाना रहिका जिला मधुबनी को न्यायिक हिरासत में लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेजा दिया गया

लूट की योजना बनाने के तीन साल पुराने मामले का अभियुक्त गिरफ्तार

समस्तीपुर, तीन साल पहले लूट की योजना बनाने के मामले में एक बच्चे हुए अभियुक्त को नगर थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मुक्तापुर के राजा के रूप में हुई है। बता दें कि वरीय पुलिस पदाधिकारियों को मिली गुप्त सूचना व उनके निर्देश पर गश्ती टीम ने शहर के चीनी मिल चौक स्थित एक चाय दुकान के पास से दो बदमाशों को पकड़ा था। उनके पास से पुलिस ने एक देसी पिस्टल और चार गोली बरामद किया था। वहीं इस दौरान एक बदमाश फरार होने में कामयाब हो गया था। पकड़ाए दोनों बदमाशों से पूछताछ में पुलिस को पता चला था कि शहर के घोषलेन के दुकानदार के अपनी दुकान बंद कर स्कूटी से जाने के दौरान उन्हें लूटने की योजना थी। इसमें, उस दुकानदार के दुकान के आसपास करने वाला राजा भी उन्हें इस काम में सहयोग कर रहा था। जिसे नगर थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है और उसे न्यायिक हिरासत में भेजने की प्रक्रिया में जुटी हुई थी।

स्थापना दिवस पर मुंगेर आ रही है मंदिरा बेदी

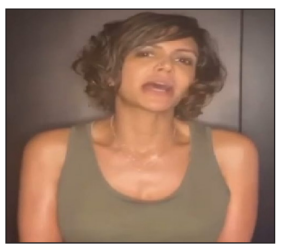

बरियारपुर (मुंगेर)। मुंगेर जिला का स्थापना दिवस 5 दिसम्बर को है। इसको लेकर सरकार की ओर से कार्यक्रम आयोजित है। कार्यक्रम में मुंगेर मैराथन का अयोजन भी शामिल है। मैराथन में धावकों के उत्साह वर्धन के लिए मंदिरा बेदी आ रही है। मंदिरा बेदी ने मुंगेर के जिलाधिकारी अवनीश कुमार के प्रति आभार व्यक्त की है।

बदमाशो ने नाबालिग को मारा गोली

मधुबनी के खुटौना थाना क्षेत्र के सिहुला गांव के पास एक 16 साल के किशोर को अज्ञात हमलावर ने गोली मार दिया।पेट में गोली लगने से किशोर गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद आरोपी मौका देख फरार हो गया। पुलिस सूत्रो के अनुसार घायल किशोर खुटौना निवासी सुरेश साह का बेटा बताया गया है। थानाध्यक्ष नीतीश कुमार ने बताया कि सूचना मिलते ही वे मौके पर पहुंचे और घायल किशोर को तत्काल खुटौना सीएचसी भेजा गया। प्राथमिक इलाज के बाद किशोर की नाजुक हालत को देखते हुए उसे डीएमसीएच रेफर कर दिया गया है। घटना के बाद से क्षेत्र में दहशत का माहौल बना हुआ है पुलिस ने बताया कि मामले की गहन छानबीन कीया जा रहा है। लेकिन अब तक हमलावर का कोई सुराग नही मिला है, पुलिस जांच में जुटे हुए है। स्थानीय लोगो का कहना है कि अपराधियो के बढ़ते हौसले ने इलाके को असुरक्षित बना दिया है। पुलिस प्रशासन पर उठे सवाल पिछले कुछ दिनो में खुटौना में अपराध की घटनाएं बढ़ा है। हाल ही में खुटौना बाजार में दिनदहाड़े चोरी की घटना सामने आया था। इन घटनाओ से पुलिस के कार्यशैली पर सवाल उठ रहे है। स्थानीय लोगो ने मांग की है कि पुलिस प्रशासन जल्द से जल्द अपराधियो को पकड़कर इलाके में सुरक्षा सुनिश्चित करे।

सभी के सहयोग से मधुबनी जिला निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर

न्याय के साथ विकास की यात्रा में बढ़ते बिहार के साथ कदम से कदम मिलाकर मधुबनी जिला भी चल रहा है

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सभी के सहयोग से मधुबनी जिला निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है न्याय के साथ विकास की यात्रा में बढ़ते बिहार के साथ कदम से कदम मिलाकर मधुबनी जिला भी चल रहा है ।उक्त बाते जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने जिला स्थापना दिवस समारोह के उद्घाटन के उपरांत अपने संबोधन में कही। उन्होने कहा कि लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान फेज दो के अंतर्गत जिले के 386 पंचायत में से 367 पंचायत में घर-घर से कचरा का उठाव किया जा रहा है। 240 पंचायत मे जैविक खाद्य का निर्माण किया जा रहा है ।प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत इस वर्ष 12344 लोगों को प्रथम किस्त का भुगतान एवं 1300 आवास पूर्ण किया गया है वही मुख्यमंत्री आवास योजना अंतर्गत 1260 आवास की स्वीकृति एवं प्रथम किस्त 1004 को पूर्ण किया गया है ।वित्तीय वर्ष 2024 25 में 3958811 मानव दिवस का सृजन किया गया है जिसमे कुल 108406 परिवार को रोजगार दिया गया है। जल जीवन हरियाली अंतर्गत जिले में हरित आवरण को बढ़ाने जल संरक्षण आदि को लेकर कई कार्य किया जा रहे है। इस वर्ष 1117 सोकपिट का निर्माण किया गया है। इस वर्ष 892000 पौधारोपण किया गया है ।42 चेकडैम का निर्माण किया गया है। 998 नए जल स्त्रोत का कार्य पूर्ण किया गया है। 88 सरकारी भवनो में छत वर्षा जल संचयन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। 44 आहार आहार का जीर्णोद्धार किया गया है वही 894 पाइन का जीर्णोद्धार किया गया है। जिलाधिकारी ने कहा कि वर्तमान के दिनो में जिले के भूजल स्तर को देखते हुए हमे अधिक से अधिक वर्षा जल का संचयन करना होगा। उन्होने जिलेवासियो से अपील करते हुए कहा कि अपने-अपने घरो में छत वर्षा जल संचयन का निर्माण जरूर करे ताकि वर्षा जल का संचयन किया जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि जिले में इस वर्ष अब तक कन्या उत्थान योजना अंतर्गत विभिन्न श्रेणिया में कुल 15904 बच्चो का पंजीकरण किया गया है इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना जिसमे प्रथम बार गर्भधारण करने वाली माता को दो किस्तो में 5000 की राशि दी जाती है । इस वर्ष कुल 16490 लाभार्थियो का रजिस्ट्रेशन हुआ जिसमें 4850 लाभार्थियों को लाभ प्राप्त हो चुका है। मधनिषेध विभाग द्वारा शराबबंदी कानून को पूरी सख्ती से लागू किए जाने हेतु लगातार छापेमारी गिरफ्तारी एवं वाहनो की जप्ती आदि कार्रवाई की जा रही है इस वर्ष लगभग 45000 लीटर देसी तथा 1000 लीटर विदेशी शराब जप्त किए गए है। इस वर्ष 329 दो पहिया 14 तीन पहिया तथा 604 चार पहिया वाहन को भी जप्त किया गया है। शराब बंदी को सख्ती से लागू करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार एवं अधीक्षक मधनिषेध विजयकांत ठाकुर को राज्य स्तरीय कार्यक्रम में सम्मानित किया गया जिससे निश्चय ही जिले का गौरव स्तर पर बढ़ा है। अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित बालिका छात्राओ को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के उपरांत अल्पसंख्यक कल्याण कार्यालय द्वारा प्रति छात्र 15000 की दर से कुल 1637 छात्राओ के मध्य कल 2.37 करोड़ की राशि का वितरण किया जा चुका है। जिला पंचायत विभाग द्वारा इस वर्ष कुल 221 पंचायत सरकार भवन की स्वीकृति प्रदान की गई है जिसमें 156 में कार्य प्रारंभ हो चुका है। इस वर्ष में जिला के सभी पंचायत के चार वार्ड में कुल 10790 सोलर लाइट लगाया जा चुका है। जिला पंचायती राज विभाग द्वारा 25 छठ घाट का निर्माण 111 कुओ का जीणोर्धार तथा चापाकल एवं कुओ के नजदीक 90 सोख्ता का निर्माण कराया गया है ।जिले के 334 पंचायत में आरटीपीएस काउंटर प्रारंभ किया जा चुका है। जिला कृषि कार्यालय द्वारा खरीफ 2024 में डीजल अनुदान के अंतर्गत 34342 किसानो के बीच कुल 5.90 करोड़ की राशि का वितरण किया जा चुका है। जिला कृषि कार्यालय द्वारा अब तक लगभग 2263 किसानों के मध्य अनुदानित दर पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराया गया है।

डीटीओ समेत दो के विरुद्ध जिला उपभोक्ता आयोग ने जारी किया नोटिस

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । जिले के अहियापुर थाना क्षेत्र के शेखपुर कृष्णापुरी मोहल्ला के निवासी सरकारी विद्यालय के शिक्षक प्रभात रंजन ने 31 जनवरी 2023 को अपनी पुरानी मोटरसाइकिल को हिंदुस्तान ऑटोमोबाइल्स एजेंसी से एक्सचेंज कराया था और नई मोटरसाइकिल लिया था, जिसके एवज में परिवादी के द्वारा कुल 86,000 (छेयासी हजार) रुपए का ऑनलाइन भुगतान भी एजेंसी को किया गया, लेकिन परिवादी को आजतक एजेंसी द्वारा भुगतान का रसीद उपलब्ध नहीं कराया गया तथा पुरानी मोटरसाइकिल का एजेंसी ने अपने नाम से ट्रांसफर भी नहीं करवाया। उक्त मोटरसाइकिल आज भी परिवादी के नाम से ही है। परिवादी, विगत कई माह से परेशान होने के बाद अधिवक्ता एस.के.झा के माध्यम से जिला उपभोक्ता आयोग में हिंदुस्तान ऑटोमोबाइल्स एजेंसी एवं डीटीओ के विरुद्ध परिवाद दर्ज कराया, तत्पश्चात आयोग के द्वारा सुनवाई के पश्चात हिंदुस्तान ऑटोमोबाइल्स एजेंसी और डीटीओ के विरुद्ध नोटिस जारी किया गया है और 3 फरवरी 2025 को आयोग के समक्ष उपस्थित होने का आदेश दिया गया है। परिवादी की ओर से मानवाधिकार अधिवक्ता एस.के.झा मामले की पैरवी कर रहे हैं। अधिवक्ता श्री झा बताया कि यह उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के सेवा में कमी की कोटि का मामला है। कारण कि उपभोक्ता को आजतक भुगतान रसीद एजेंसी द्वारा नहीं दिया जाना और पुरानी मोटरसाइकिल को ट्रांसफर नहीं किया जाना एजेंसी की लापरवाही को स्पष्ट करता करता है। मामले में अगली सुनवाई 3 फरवरी 25 को होगी।

स्वास्थ्य मंत्री ने क्षेत्रीय औषधि भंडार गृह का किया शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। मंगल पाण्डेय मंत्री स्वास्थ्य-सह-कृषि विभाग बिहार सरकार द्वारा दरभंगा जिला अंतर्गत दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल दरभंगा में 9.37 करोड़ रुपये की लागत से क्षेत्रीय औषधि भंडार गृह का शिलान्यास किया गया। उल्लेखनीय है कि राज्य में दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय दरभंगा में क्षेत्रीय औषधि भंडार गृह की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस व्यवस्था से दरभंगा जिला के नजदीकी सभी जिलों के दवाओं की कमी समाप्त होगी ।साथ ही भंडार गृह चालू हो जाने से दवा सप्लाई की व्यवस्था सुगम होगा,दरभंगा के नजदीकी सभी जिला अंतर्गत स्वास्थ्य उप केंद्र, हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर, अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल में, राजकीय चिकित्सा अस्पतालों में सुचारू रूप से दवा उपलब्ध कराए जा सकेगी तथा संचालन से दवाओं के बेहतर रख-रखाव होगी ।परियोजना का निर्माण कार्य प्री-फैब पद्धति से कल 9.37 करोड़ रुपये की लागत से 18000 वर्ग फीट में कराया जाएगा,क्षेत्रीय औषधि भंडार गृह में दवाओं के रखने हेतु अत्याधुनिक उपकरणों का भी प्रावधान है। इस अवसर पर नगर विधायक संजय सरावगी,बेनीपुर विधायक विनय कुमार चौधरी, विधायक अलीनगर मिश्री लाल यादव, विधायक केवटी डॉ मुरारी मोहन झा ,डीएम राजीव रौशन, डीएमसीएच के वरीय डॉक्टर और पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

पैक्स चुनाव में 19 पुराने ने जमाया कब्जा, 5 नये को मिला ताज

कल्याणपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर प्रखंड के 24 पैक्स का चुनाव परिणाम सोमवार को शाम में मतगणना केंद्र डॉक्टर शालिग्राम इंटर महाविद्यालय ध्रुवगामा में प्रखंड निर्वाचित पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी देवेंद्र कुमार ने देर शाम तक परिणाम घोषित किया। परिणामों में 24 में से 19 पैक्स अध्यक्ष अपने पद पर विराजमान रहे, जबकि पांच नए चेहरे को ताज मिला। पुराने अध्यक्ष में मालीनगर में प्रियंका कुमारी, मधुरापुर टारा में दीनदयाल झा, बेलसंडी रामकिशोर साह, लदौरा केसरी कुमार मेहता, भागीरथपुर भोला राय, वासुदेवपुर संजय कुमार, सिमरिया भिंडी शोभा देवी, बरहेता देवन मंडल, अजना हिमांशु शेखर, गोविंदपुर खजूरी रामबली महतो, कल्याणपुर में रजनीश राय, खरसंड पश्चिमी सुनील राय, गोराई सर्वेश कुमार, रतवारा मोहम्मद एयाज अहमद, जितवरिया बालकृष्ण झा आदि को मतदाताओं ने पुनः ताज पहनाया। वहीं 5 नए चेहरों में खरसंड पूर्वी गीता देवी, गोपालपुर शंकर दयाल ठाकुर, रामभद्रपुर नंदकिशोर साह, कलौजर पंकज ठाकुर, बिरसिंहपुर राकेश कुमार, चुनाव में अध्यक्ष पद पर विजई घोषित किए गए। मतदान केंद्र पर सक्रिय प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी संतोष कुमार चौरसिया, बृजराज सिंह, प्रभात कुमार ठाकुर, राजू कुमार, सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सदर एसडीपीओ-2 विजय महतो, थानाध्यक्ष राकेश शर्मा, अपर थानाध्यक्ष दीपक कुमार झा, कपूर्रीग्राम थाना की दीपा कुमारी आदि सक्रिय दिखी।

मधुबनी जिला अंतर्गत 25.49 करोड़ की लागत से मॉडल सदर अस्पताल की सेवा का शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी संस्कृत उच्च विद्यालय मधुबनी में आयोजित कार्यक्रम में मंगल पांडे मंत्री स्वास्थ्य एवं कृषि विभाग बिहार सरकार द्वारा मधुबनी जिला अंतर्गत 25.49 करोड़ की लागत से मॉडल सदर अस्पताल की सेवा का शुभारंभ 2.05 करोड़ की लागत से अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बैलाचा एवं हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर मधुबनी टोल का उद्घाटन तथा 9.42 करोड़ की लागत से 22 हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर का शिलान्यास किया गया। मधेपुर के द्वालख , टंगराहा, बकुआ ,घोघरडीहा के देवनाथ पट्टी, परसा,लौकी के ठाड़ी, मन सापुर, औराहा , नरहिया, खुटौना के बीरपुर भजनहा बेनीपट्टे के पाली, ब्रह्मपुरा, करही,बिशनपुर, बासोपट्टी के भैयापट्टी ,भलुआही, घोरबांकी, बाबूबरही के सतधारा, कलुआही के हरिपुर डीह टोल , लदनिया के महुलिया एवं योगिया में हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर का निर्माण कार्य का शिलान्यास किया गया।

प्रमंडलीय पार्षद महासंघ सम्मेलन में दो सौ से अधिक पार्षद प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।प्रमंडल के 25 नगर निकायों के 554 पार्षदों में मुसरी घरारी, घनश्यामपुर नगर पंचायत छोड़कर प्रमंडल के 23 नगर निकाय के 281 पार्षदगण एक साथ रविवार को प्रमंडलीय पार्षद महासंघ सम्मेलन में इकट्ठा हुए। सीधे तौर पर 50 प्रतिशत से अधिक पार्षदों की उपस्थिति से आयोजक गदगद हैं। आंतरिक कलह के कारण समस्तीपुर के 20 सदस्यों वाले नगर पंचायत मुसरी घरारी और दरभंगा के 13 सदस्यों वाले नगर पंचायत घनश्यामपुर से एक भी पार्षद सम्मेलन में नहीं पहुंचे, जो चर्चा का विषय बना रहा। हालांकि बिहार में पहली बार प्रमंडल स्तर पर गठित पार्षद महासंघ के गठन के चार माह के दौरान ही 25 में से 23 निकायों के आधे से अधिक पार्षदों को पूरे दिन से देर शाम तक चले मैराथन कार्यक्रम में जोश के साथ उपस्थिति और मिथिला परंपरा अनुसार विदाई कार्यक्रम ने पार्षदों की एकजुटता का नींव तो रख ही दिया, जिससे अब नगर निकाय की राजनीति, जो पिछले दो वर्षों तक महापौर,अध्यक्ष उप महापौर,उपाध्यक्ष सहित नगर आयुक्त, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी के इर्द गिर्द तक घूम रही थी, इसपर अंतर पर जाय तो आश्चर्य नहीं होगा। निबंधन, परिचय, स्वागत, सम्मान समारोह के अलावा तीन घंटे चले परिचर्चा विषय क्रमशः पार्षदों का कर्तव्य, अधिकार, सम्मान ,सुरक्षा ,पार्षदों की क्षेत्रीय समस्या और उसका निदान और बिहार नगरपालिका एक्ट 2007 कारगर या खानापूर्ति पर व्याख्यान में शामिल तीन दर्जन पार्षदों के विचार ने यह संकेत तो दे ही दिया कि निकाय में महापौर, नगर आयुक्त, स्थाई समिति की मनमानी चलती है और इनलोगों ने पार्षद के एक खेमे को अपने में मिला कर जेम पोर्टल माध्यम से खरीदारी सहित योजनाओं को लूट का अड्डा बना रखा है, जिसमें योजनाओं की राशि का आधे से अधिक बंदरबांट हो रहा और आम जनता के लिए निर्गत राशि से ये लोग मौज कर रहे और जनहित के लिए लड़ रहे पार्षद मजबूर होकर कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं हैं।

मधुबनी में विश्व की सबसे लंबी मधुबनी पेंटिंग बनाने के लिए जुटे एक हजार कलाकार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी स्थित मिथिला चित्रकला संस्थान परिसर में जिला स्थापना दिवस के अवसर पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग और उद्योग विभाग के और से विश्व का सबसे लंबा मिथिला पेंटिंग बनाने का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम में बिहार राज्य के अलग अलग जिलो से मिथिला पेंटिंग में रुचि रखने वाले कलाकार पहुंचे हैं। रविवार की सुबह 8 बजे मिथिला पेंटिंग कार्यक्रम की शुरूआत किया गया। कला संस्कृति एवं युवा विभाग और उद्योग विभाग की ओर से विश्व का सबसे लंबा मिथिला पेंटिंग बनाने को लेकर राज्य के अलग अलग जगहो से करीब एक हजार कलाकारो इसमें ने हिस्सा लिया, एक ही दिन में दो हजार फीट का सबसे लंबा मिथिला पेंटिंग बनाने का रिकॉर्ड बनाना है इसको लेकर तैयारी जोरो पर दिखा।

ऐतिहासिक होगा दरभंगा जिला कार्यकर्ता सम्मेलन : माधव झा

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दरभंगा नगर जिला जनता दल यूनाईटेड कि बैठक सोमवार को सुशीला विवाह भवन में अध्यक्ष माधव झा के अध्यक्षता में जिला कार्यकर्ता सम्मेलन को सफल बनाने हेतु किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में विधानसभा प्रभारी धर्मेंद्र साह उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए विधानसभा प्रभारी धर्मेंद्र साह ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के किये गये जनहित के कार्यों को बताते हुए सभी से आग्रह किया कि कार्यकर्ता सम्मेलन को सफल बनाने के लिए नए और पुराने कार्यकर्ता के बीच जाकर सम्मेलन को सफल बनाये। दरभंगा नगर जिला जनता दल यूनाईटेड के जिला अध्यक्ष माधव झा ने कहा कि 15 दिसम्बर को दरभंगा जिला और नगर के संयुक्त होने वाला कार्यकर्ता सम्मेलन एतिहासिक होगा।इस कार्यकर्ता सम्मेलन में हमारे जनता दल यूनाईटेड के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा, बिहार प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा के साथ साथ अनेक मंत्री, सांसद, और विधायकगण मौजूद रहेंगे, हम लोग अब सभी सेक्टर और वार्ड मे जाकर कार्यकताओं को सम्मेलन मे आकर सम्मलेन को एतिहासिक बनाने का हर संभव प्रयास करेंगे । बैठक मे अभी बनाये गये अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के नगर अध्यक्ष नवाब अख्तर, प्रदेश सचिव मों जमिदुल, महिला प्रकोष्ठ के नगर अध्यक्ष अंजूला शर्मा, और विश्वविद्यालय अध्यक्ष आसिफ कमाल, वरिष्ठ नेता कमरे आलम, पूर्व पार्षद शशिचंद्र पटेल, श्याम मण्डल,विशमभर पासवान, दीपक सिन्हा, मनोज साह, संजय पोद्दार, नंद किशोर राय, रौशन महतो,अरविंद झा, बिट्टू सिंह, इकबाल रायन, अशरफ, रवि वर्मा, त्रिभुवन ठाकुर, अरविंद सत्संगी, हरी शंकर पासवान, दीपक ज्योति, घनश्याम श्रीवास्तव, दिनेश जायसवाल, ललन गाड़ा, सहित अनेक साथी उपस्थित थे।

कला कुंभ महोत्सव के तीसरे दिन प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन, विजेता आज होंगे सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में आयोजित युवा महोत्सव 2024 अंतर्गत ह्यकला कुंभह्ल के तीसरे दिन सोमवार को कला और संगीत का संगम देखने को मिला।

महोत्सव की संयुक्त सचिव सह स्नातकोत्तर क्रीड़ा परिषद की अध्यक्षा डॉ प्रियंका राय ने बताया कि शास्त्रीय नृत्य, वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंट सोलो, लोक नृत्य, फोक आर्केस्ट्रा, स्किट, माईम, इंस्टालेशन, रंगोली, पोस्टर मेकिंग, आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन सोमवार को विश्वविद्यालय परिसर में हुआ।

इस अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में चार जिला दरभंगा, मधुबनी,समस्तीपुर और बेगूसराय अंतर्गत कुल18 संबद्ध और अंगीभूत महाविद्यालयों ने भाग लिया। तीन दिन तक चलने वाले इस महोत्सव का भव्य समापन आज होगा जिसमें विजेता टीम, विजेता महाविद्यालय और प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा। बता दें, जूरी सदस्यों के तौर पर संगीत, थियटर, फाईन आर्ट के विशेषज्ञों व जाने- माने कलाकारों ने प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई है। सन- 1975 से शुरू हुई युवा महोत्सव की परंपरा ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार देश को दिए हैं।

पौधरोपण के माध्यम से कुलपति ने दिया बड़ा सन्देश केएसडीएसयू के कुलपति ने कहा पितरों के प्रति यह है सम्मान, आमजनों से भी पौधरोपण की अपील

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 लक्ष्मी निवास पांडेय ने आईक्यूएसी के तहत पर्यावरण मंच के तत्वावधान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान अपनी माँ के नाम कैम्पस में दो फलदार पौधे का रोपण किया। इसके अलावा और कई पौधे को रोपा गया। मौके उप उन्होंने बड़ा सन्देश देते हुए कहा कि एक पेड़ मां के नाम बेहद प्रगतिशील विचार है । यह हमें प्रकृति से जोड़ता है। साथ ही ऐसा कर हम अपने पितरों के प्रति सम्मान को भी दर्शाते हैं और इससे पर्यावरण की संरक्षा भी होती ही। उन्होंने आमजनों से भी अधिक से अधिक पेड़ लगाकर अपनी मां के प्रति सम्मान और प्यार व्यक्त करने की अपील की। वहीं, कुलसचिव प्रो ब्रजेशपति त्रिपाठी ने कहा कि अपने पितरों को याद करने का व सम्मान देना का वृक्षारोपण एक प्राकृतिक व सामाजिक तरीका है। वृक्षारोपण एक पुण्य का कार्य है ।एक पेड़ हमें कई तरह से मदद करता है। पर्यावरण मंच के अध्यक्ष भूसंपदा पदाधिकारी ने भी वृक्षारोपण को जरूरी बताते हुए कहा कि इससे वातावरण प्रदूषण में कमी आएगी। उक्त जानकारी देते हुए पीआरओ निशिकान्त ने कहा कि कार्यक्रम के संयोजक डॉ धीरज कुमार पाण्डेय ,डॉ. कुणाल कुमार झा, डॉ शम्भुशरण तिवारी, डॉ दयानाथ झा, डॉ रेनुका सिन्हा ,डॉ विनय कु मित्र, डॉ दीलीप झा, कुलानुशासक प्रो पुरेन्द्र वरिक, डॉ धनश्याम मिश्र ,सचिव राजेश कुमार एवं सहसचिव विश्व मोहन झा समेत कई शिक्षक ,शिक्षकेतर कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे।

करंट लगने से ससुर-बहू की मौत, बच्चों के शोर मचाने पर आसपास के लोग पहुंचे

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला के जयनगर थाना क्षेत्र में करंट लगने से दु लोगो की मौत हो गया है। दोनो एक ही परिवार के लोग थे परिजनो के माने तो घर में काम कर रही महिला हैंडपंप के पास अचानक गिर गया। इसके बाद पास में खड़े बच्चे ने शोर मचाया फिर बुजुर्ग महिला को उठाने गया तो वे भी गिर गया। उस को देख आसपास के लोग भी पहुंचे तो देखा हैंडपंप के पास बिजली का तार पड़ा हुआ है। लोगो ने करंट से मौत की आशंका जताया है। महिला को बचाने गए बुजुर्ग की पहले मौत हुआ है फिर महिला ने दम तोड़ दिया। मृतक की पहचान खैरामठ गांव निवासी राम लषण यादव उम्र करीब 60 और दूसरा ललिता देवी के रूप में हुई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल मधुबनी भेज दिया है। पुलिस मामले की छानबीन में जुट चुके है। एक ही परिवार के रिश्ते में ससुर और बहू की मौत से इलाके में मातम छा गया है। जयनगर थाना प्रभारी ने बताया कि मृतक के परिवार द्वारा एफ आई आर किया जा रहा है। करंट से ससुर-बहू की मौत हुई है , जांच में पुलिस जुटे है।

एग्रो बिहार मेला का हुआ समापन कृषि यंत्रों की जमकर हुई खरीदारी

मेला में 75 हजार से अधिक किसानों एवं आमजनों ने किया भ्रमण

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में कृषि विभाग एवं सीआईआई के सहयोग से आयोजित चार दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि यांत्रिकरण मेला (एग्रो बिहार, 2024) का समापन हो गया। समापन समारोह में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के प्रधान सचिव डॉ एन विजयालक्ष्मी एवं कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल मौजूद रहें। इस समारोह में सभी कृषि यंत्र निमार्ता कम्पनियों एवं विभागीय पदाधिकारियों के बीच प्रमाण-पत्र एवं मोमेन्टो प्रदान किया गया। समापन समारोह में डॉ एन विजयालक्ष्मी ने कहा कि मुझे कृषि से लगाव हमेशा से रहा है, कृषि हम सभी का प्रिय विषय है। कृषि एवं किसान के बिना हम खाद्यान्न सुरक्षा की बात नहीं कर सकते हैं। कृषि विभाग तथा पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग साथ-साथ चलने वाला एवं एक-दूसरे के पूरक है। इस तरह के मेला में किसानों को नये-नये तकनीक के बारे में पता चलता है। मेला में बी-टू-बी से यंत्र निमार्ता एक-दूसरे से अपनी यंत्रों की जानकारी साझा करते हैं तथा गाँव-देहात से आने वाले छोटे उद्यमियों को भी नई-नई जानकारी मिलती है। कृषि रोड मैप के तहत राज्य के 13 विभाग मिलकर काम कर रहे हैं। कृषि में सिंचाई, खाद, कीटनाशी, प्रसंस्करण आदि एक पूरी श्रृंखला है, जिसमें यांत्रिकीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। बिहार मखाना एवं शहद उत्पादन में प्रथम स्थान पर है।

फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाना लक्ष्य

कृषि सचिव ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी का उद्देश्य एक ही है कि फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता कैसे बढ़ायें। किसान कैसे नई तकनीकों को अपनाकर फसलों की उत्पादकता को बढ़ाये। कृषि में कई चुनौतियाँ हैं, उन चुनौतियों को कैसे दूर करते हुए, जो संसाधन उपलब्ध हैं, उसका लाभ हमारे किसान भाई लें। 200 करोड़ रुपए से अधिक की अनुदान कृषि यांत्रिकीकरण योजना के माध्यम से किसानों को दी जाती है। कृषि विभाग ने एक समिति का गठन कर नये-नये उपकरणों को कृषि यांत्रिकीकरण योजना में शामिल करने के लिए अपनी अनुशंसा कर रहा है, ताकि किसान नये-नये यंत्रों का उपयोग कर फसल की उत्पादकता बढ़ायें। फसल अवशेष प्रबंधन से संबंधित नये यंत्रों को भी शामिल किया जा रहा है, ताकि फसल अवशेष जलाने की घटना को नगण्य किया जाये। उन्होंने अधिकारियों को निदेश दिया कि पंचायत एवं प्रखण्ड स्तर पर फसलों की प्रत्यक्षण की तरह कृषि यंत्रों का भी प्रत्यक्षण किया जाये। आत्मा योजना के अंतर्गत एटीएम एवं बीटीएम को इसके लिए प्रशिक्षित किया जायेगा।

कृषि निदेशक ने कहा कि यह राज्यस्तरीय कृषि यांत्रिकरण प्रदर्शनी, कृषि विभाग, बिहार द्वारा वर्ष 2011 से लगातार आयोजित किया जा रहा है। मेला का यह तेरहवां संस्करण है। अब तक इस वित्तीय वर्ष में 1.73 लाख से अधिक ऑनलाइन आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। उक्त आवेदनों को विभिन्न स्तर पर ऑनलाइन सत्यापन कर, अब तक 74 हजार से अधिक स्वीकृति पत्र निर्गत किये जा चुके हैं तथा 51 हजार से अधिक कृषकों के बीच अनुदानित दर पर यंत्रों एवं 150 से अधिक कृषि यंत्र बैंक का वितरण किया जा चुका है, जिसपर कुल अनुदान राशि 87.60 करोड़ रुपए है।

कृषि यंत्रों की बिक्री पर 3,69 करोड़ रुपए का अनुदान :

इस वर्ष इस मेला में राज्य के किसानों ने बड़ी संख्या में कृषि यंत्रों की खरीदारी कर सरकार की महत्वकांक्षी योजना का लाभ उठाया। आज इस मेला में 57 कृषि यंत्रों एवं 12 कृषि यंत्र बैंकों के लिए सरकार द्वारा 127.90 लाख रुपए का अनुदान दिया गया। इस प्रकार, 04 दिनों में कुल 495 कृषि यंत्रों का क्रय एवं 21 कृषि यंत्र बैंकों के लिए कुल 3.69 करोड़ रुपए से अधिक का अनुदान दिया गया। इन यंत्रों का बाजार मूल्य लगभग 7 करोड़ रुपए है।

मेला में 75 हजार से अधिक किसानों एवं आमजनों ने किया भ्रमण :

आज इस मेला में पटना, दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी, मधेपुरा, सुपौल तथा सहरसा जिले के 2275 किसानों ने भाग लिया। आज तक इस प्रदर्शनी-सह-मेला में राज्य के 75 हजार से अधिक किसान/आगन्तुक आये।

ये रहें मौजूद :

इस अवसर पर विशेष सचिव डॉ वीरेन्द्र प्रसाद यादव, कृषि निदेशक नितिन कुमार सिंह, अपर सचिव द्वय शैलेन्द्र कुमार एवं कल्पना कुमारी, निदेशक, बामेती धनंजय पति त्रिपाठी, संयुक्त निदेशक, कृषि अभियंत्रण-सह-नोडल पदाधिकारी, यांत्रिकीकरण आलोक कुमार सिंह सहित कृषि विभाग एवं सीआईआई के अन्य पदाधिकारी तथा कर्मचारीगण, कृषि यंत्र निमार्ता/विक्रेता सहित बड़ी संख्या में किसान भाई-बहन उपस्थित थे।

नियमित टीकाकरण के मामले में बिहार बना देश में नंबर 1: मंगल

शिशुओं एवं गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण में राज्य सबसे आगे

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया है कि यू-विन पोर्टल के माध्यम से शिशुओं और गर्भवती महिलाओं को सबसे अधिक संख्या में टीके की खुराक देने में बिहार अग्रणी है। बिहार के बाद उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा का स्थान है। यू - विन पोर्टल जिसे कोविड-19 वैक्सीन प्रबंधन प्रणाली को बेहतर ढंग से संचालित करने व उस पर नियंत्रण पाने के लिए बनाया गया। जिसका उद्देश्य रिकॉर्ड को डिजिटल करके टीकाकरण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना है। पोर्टल पर नियमित टीकाकरण हेतु 16 वर्ष की आयु तक 12 टीका-निवारणीय रोगों के रिकॉर्ड भी रखे जाते हैं। जिससे माता-पिता या गर्भवती महिलाओं को कागजात रिकॉर्ड या टीकाकरण कार्ड ले जाने की आवश्यकता के बिना अपने टीके प्राप्त करने की अनुमति मिलती है।

श्री पांडेय ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के मार्गदर्शन में बिहार टीकाकण में अव्वल हुआ है। स्वास्थ्य मंत्री ने इस सफलता पर समस्त विभाग के कर्मियों व पदाधिकारियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि अक्टूबर में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत प्रजनन और बाल स्वास्थ्य पहल के लिए सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम हेतु यू-विन पोर्टल का शुभारंभ किया। यू-विन पोर्टल डिजिटल टीकाकरण सेवाओं का एक नया युग है। जो आदरणीय प्रधानमंत्री की डिजिटल भारत की सोच में एक नया आयाम होगा। यू-विन टीकाकरण रिकॉर्ड, आसान शेड्यूलिंग और वास्तविक समय अपडेट तक सहज पहुंच के साथ व्यक्तियों को सशक्त बनाकर टीकाकरण प्रबंधन में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है।

नीतीश कुमार ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में किया अभूतपूर्व काम : उमेश

- बोलें- महिला संवाद यात्रा को फिजूलखर्ची बताने वालों के दामन पर भ्रष्टाचार के कई दाग

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने सोमवार को बयान जारी कर राजद पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ह्यमहिला संवाद यात्राह्व को फिजूलखर्ची बताने वालों के दामन पर भ्रष्टाचार के कई गहरे दाग हैं। सत्ता में रहते हुए राजद ने सरकारी खजानों पर डाका डालने का काम किया था लेकिन आज वही लोग फिजूलखर्ची का फर्जी ज्ञान बांचते नहीं थक रहे हैं। श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि हमारे नेता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के 19 वर्षों के कार्यकाल में महिलाओं को न्याय और गरिमा दिलाने के लिए जिस वैचारिक शुद्धता और प्रतिबद्धता के साथ काम किया है, वैसा कोई दूसरा उदाहरण पूरे देश में नहीं। वहीं, दूसरी ओर 15 वर्षों के जंगलराज में महिलाओं की दुर्दशा भी जगजाहिर है। लालू-राबड़ी की सरकार ने कभी आधी आबादी के हितों की चिंता नहीं की। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि गांधी, जेपी, कपूरी ठाकुर, डॉ लोहिया और डॉ अंबेडकर जैसे पुरोधा आधी आबादी को जो सम्मान और स्थान मिलने की बात करते थे, उसे हमारे नेता ने साकार किया है। नीतीश सरकार द्वारा महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं एवं नगर निकायों में 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई। साथ ही पुलिस में भी महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया और अब महिलाओं को सभी सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शराबबंदी, दहेजबंदी, बालविवाहबंदी, कन्या-सुरक्षा जैसे समाज-सुधार अभियानों के कारण महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हुए है और उनके जीवन-स्तर में स्पष्ट सुधार देखा जा सकता है। साथ ही जीविका कार्यक्रम के तहत 10 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है, जिससे महिला सशक्तिकरण की दिशा में अभूतपूर्व सफलता मिली है। साथ ही प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि महिला संवाद यात्रा से एक तरफ प्रदेश की महिलाओं में खासा उत्साह है। वहीं दूसरी ओर राजद के तमाम नेतागण इसके विरोध में अनर्गल बयानबाजी कर अपने निकृष्ट और ओछी मानसिकता का प्रमाण प्रस्तुत कर रहे है, इससे उनका वास्तविक चेहरा भी बेनकाब हो रहा है।

नेता प्रतिपक्ष का कार्यकर्ता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम का तीसरा चरण कल से

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव का कार्यकर्ता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम का तीसरा चरण आगामी 4 दिसम्बर से शुरू होने जा रहा है। ज्ञातव्य है कि पहले दो चरणों की यात्रा में छः जिलों समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, बांका एवं जमुई जिले में यात्रा का कार्यक्रम पूरा हो चुका है। झारखंड में चुनाव की घोषणा हो जाने के कारण उन्हें अपनी दूसरे चरण की यात्रा को बीच में हीं रोकना पड़ा था। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने बताया कि नेता प्रतिपक्ष 4 दिसम्बर को मुंगेर, 5 दिसम्बर को खगड़िया, 6 दिसम्बर को बेगुसराय एवं 7 दिसम्बर को लखीसराय और शेखपुरा जिला के कार्यकताओं के साथ संयुक्त रुप से लखीसराय में हीं संवाद करेंगे। राजद प्रवक्ता ने बताया कि यात्रा के अगले चरण में 15 दिसम्बर को सुपौल , 16 दिसम्बर को सहरसा, 17 दिसम्बर को मधेपुरा, 18 दिसम्बर को अररिया, 19 दिसम्बर को किशनगंज, 20 दिसम्बर को पूर्णियां, 21 दिसम्बर को कटिहार एवं 22 दिसम्बर को भागलपुर में कार्यकताओं के साथ संवाद करेंगे। उन्होंने कहा कि शेष जिलों के कार्यक्रमों की घोषणा बाद में की जाएगी। कार्यक्रता दर्शन सह संवाद कार्यक्रम में जिला के सभी पंचायत इकाईयों के अध्यक्ष, प्रखंड इकाई के सभी पदाधिकारी, जिला इकाई के सभी पदाधिकारी, उक्त जिला के रहने वाले प्रदेश इकाई के पदाधिकारी, विधायक, पूर्व विधायक, पिछले चुनाव में पार्टी के प्रत्याशी के साथ हीं सभी प्रकोष्ठों के प्रखंड अध्यक्ष एवं जिला अध्यक्ष भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य लोगों से नेता प्रतिपक्ष अपने प्रवास स्थल पर मिलेंगे। राजद प्रवक्ता ने बताया कि अबतक जिन जिलों में नेता प्रतिपक्ष का कार्यक्रम हो चुका है वहां के कार्यकताओं में एक नयी उर्जा का संचार हुआ है और नेता द्वारा दिए गए निदेशों और टिप्स के अनुरूप वे नयी ताजगी के साथ तेजस्वी जी को मुख्यमंत्री बनाने के लिए आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारी में लग गए हैं ।

नफरत, झूठ और हिंसा की राजनीति को खारिज करें : माले

पटना। भाकपा माले का पोलित ब्यूरो की पटना में बैठक हुई। पार्टी द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि पार्टी बांग्लादेश मेंअल्पसंख्यक हिंदुओं समुदाय के सदस्यों और संस्थानों पर जारी हमलों पर गंभीर चिंता प्रकट करता है। हम बांग्लादेश की सरकार से निवेदन करते हैं कि वह अल्पसंख्यक हिंदुओं समुदाय और व्यक्तिगत नागरिकों की पूर्ण सुरक्षा और अधिकार सुनिश्चित करवाए तथा कट्टरपंथी, सांप्रदायिक ताकतों को नफरत फैलाने और सौहार्द को बाधित करने से रोके। हम बांग्लादेश में विभाजनकारी सांप्रदायिक ताकतों के विरुद्ध तार्किकता और शांति के पक्ष में खड़ी ताकतों के प्रति एकजुटता जाहिर करते हैं तथा उन्हें हालात से निपटने के लिए और शक्ति मिले, यही कामना करते हैं। धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों को पूर्ण स्वतंत्रता व अधिकार मिलने चाहिए और उन्हें बहुसंख्यावादी फरमानों के आगे झुकने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। भारत में अल्पसंख्यकों, खास तौर पर मुस्लिमों को भी जबरदस्त असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है और यहां की सांप्रदायिक ताकतें , बांग्लादेश में अल्पसंख्यको पर हमले की रिपोर्टों को भी भारतीय मुसलमानों के विरुद्ध हमले तेज करने के अभियान के औजार के रूप में इस्तेमाल कर रही हैं। अमन और न्याय पसंद भारतीयों से हम अपील करते हैं कि नफरत, झूठ और हिंसा की राजनीति को खारिज करें और भारत में शांति व सद्भाव तथा भारत व बांग्लादेश के बीच अच्छे संबंधों के पक्ष में मजबूती से खड़े हों।

सत्ता संरक्षित पेपर लीक माफिया ने किया बड़ा कारनामा : तेजस्वी

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एक बार फिर राज्य सरकार पर जमकर हमला बोला है। नेता प्रतिपक्ष ने आरोप लगाया है कि सत्ता संरक्षित पेपर लीक माफिया ने फिर बिहार में लीक का बड़ा कारनामा किया है। कल सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारी की हुई ऑनलाइन परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होने के बाद इसे रद्द करना पड़ा। बिहार में कोई भी ऐसी परीक्षा नहीं हो रही जिसमें इखढ-खऊव की घालमेल वाली सत्ता प्रायोजित धांधली नहीं हो रही है। गड़बड़ी सबके सामने आ गई तो मजबूरी में यह सरकार उसे रद्द करती है अन्यथा परीक्षा को साफ-सुथरा करार दे परीक्षा माफिया से हुई कमाई का बंदरबांट कर लिया जाता है। क्या यह सत्य नहीं है कि सभी परीक्षाओं के पेपर लीक माफिया के कर्ता-धर्ता प्रदेश के मुखिया के गृह जिले से ही संबंध रखते है? जब तक एनडीए सरकार है, कोई भी परीक्षा कदाचार मुक्त हो ही नहीं सकती है। क्योंकि परीक्षा माफिया के सदस्य हर बार सरकार के ही करीबी निकलते हैं। क्या आपने कभी मुख्यमंत्री को किसी भी पेपरलीक पर बोलते सुना है? पेपरलीक सह परीक्षा माफिया पर उनकी चुप्पी में ही लीक का रहस्य छुपा है? यह संयोग तो नहीं हो सकता है कि सभी परीक्षाओं एवं पेपर लीक के तार हमेशा एक विशेष जिले से ही जुड़े रहते है?

एनडीए उम्मीदवार अभिषेक झा को लोजपा आर का पूर्ण समर्थन:चिराग

- विधान परिषद तिरहुत स्नातक सीट पर एनडीए उम्मीदवार की जीत तय

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने प्रदेश कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए एनडीए समर्थित विधान परिषद तिरहुत स्नातक सीट पर उम्मीदवार के रूप में अभिषेक झा के समर्थन में अपने दल और एनडीए के तमाम समर्थकों को वोट देने की अपील की। श्री चिराग ने कहा कि जिस तरीके से विधान परिषद के लिए चुनाव प्रचार चल रहा है और एनडीए ने अभिषेक झा को अपना उम्मीदवार बनाया है। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के एक-एक नेता एक-एक कार्यकर्ता के तरफ से इन्हें मजबूत समर्थन और सहयोग मिलेगा। भारी अंतर से और भारी मतों से यह चुनाव जीतने का काम अभिषेक झा करेंगे। क्योंकि एनडीए के प्रति जनता का विश्वास बढा है। हमारे गठबंधन का न सिर्फ लोकसभा के चुनाव में बेहतर प्रदर्शन रहा बल्कि चार सीटों पर उपचुनाव में भी विजय हासिल हुई है। इस गणित को समझना होगा कि विपक्ष के पास इनमें से तीन सीटे थी। हमारे पार्टी के हर एक नेता हर कार्यकर्ता मजबूती से मेरे छोटे भाई अभिषेक झा जी को समर्थन जाता है। कहा कि विपक्ष की सीट होते हुए भी एनडीए गठबंधन चारों के चारों सीट जीतने का काम किया है यह अपने आप में 2025 का भी समीकरण बताता है कि आगे क्या होने वाला है। विपक्ष सिर्फ अफवाह उड़ाना और डराने का काम करते रही है।

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास इस बात का हमेशा पक्षधर रही है जिस गठबंधन का हमलोग हिस्सा रहे है मेरे पिता रामविलास पासवान से पार्टी का हर एक नेता कार्यकर्ता ने सीखा है कि हमारी पार्टी ने हमेशा एक सीमेंटेड फोर्स का काम किया है। गठबंधन को कैसे मजबूत किया जा सके इसी दिशा में हमने हमेशा काम किया है। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच के साथ महाराष्ट्र और हरियाणा राज्यों में भाजपा और एनडीए ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है इससे पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि देश की जनता ने एनडीए के पक्ष में पूरा मन बना लिया है। श्री चिराग ने आगे प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि विधान परिषद सदस्य बनकर अभिषेक झा आपसे जुड़े हुए सभी मुद्दे और सभी समस्याओं का निराकरण करने का काम करेंगे।

महिलाओं के लिए बने अस्थाई रैन बसेरे के पास रहेगी पिंक टॉयलेट

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

आश्रयविहिनों के लिए ठंड से बचाव हेतु निशुल्क रैन बसेरे संचालित किये जा रहे है। सोमवार को पटना नगर निगम के पदाधिकारियों एवं राज स्तरीय आश्रय स्थल अनुश्रवण समिति की सदस्य सुश्री डॉरोथी फर्नाडिंस द्वारा अस्थाई आश्रय स्थल के कर्मियों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। *आर ब्लॉक स्थित पटना नगर निगम के स्थाई रैन बसेरे में सभी अस्थाई रैन बसेरे के केयर टेकर एवं अन्य कर्मियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करने के साथ ही उनकी समस्या को भी पदाधिकारियों द्वारा सुना गया। गौरतलब है कि अधिकांश अस्थाई आश्रय स्थल के पास शौचालय की सुविधा है। परंतु महिला रैन बसेरों के पास विशेष रूप से पिंक टॉयलेट एवं लू कैफे की सुविधा दी जाएगी। इसके साथ ही कर्मियों को आश्रयविहिनों का रिकॉर्ड मेंटेन करने एवं उनसे सौहार्दपुर्ण व्यवहार करने का निर्देश दिया गया।

पटना नगर निगम द्वारा संचालित अस्थाई रैन बसेरा स्थल झ 11

गांधी मैदान मौर्या होटल के सामने (पुरूष)

गांधी मैदान मौर्या होटल के सामने (महिला)

बुद्धा स्मृति पार्क के पास (पुरूष)

बुद्धा स्मृति पार्क के पास (महिला)

हड़ताली मोड़, मछली मार्केट के पास (पुरूष)

गांधी मैदान गेट नंबर 4

एनआईटी मोड़ के पास

पटना सिटी नाला पर (पुरूष)

पटना सिटी नाला पर (महिला)

पाटलिपुत्र बस टर्मिनल बैरिया (पुरुष)

पाटलिपुत्र बस टर्मिनल बैरिया (महिला)

गौरतलब है कि रैन बसेरे में शहरवासियों को यहां निशुल्क बेड (चौकी), बेडशीट, कंबल, पेयजल, शौचालय सहित कई सुविधा दी जाएगी। गौरतलब है कि सभी अंचल में इसका निर्माण करवाया गया है जिससे आमजनों को नजदीक में ही सुविधा मिल सके। इसके साथ ही सभी रैन बसेरो में सुरक्षा के उपक्रण अग्निशामक यंत्र, आंगतुको के लिए रजिस्टर, टेबल एवं कुर्सी सहित अन्य सुविधाएं भी मौजूद है। इसके साथ ही रैन बसेरे की सीसीटीवी कैमरे द्वारा मॉनिटरिंग भी की जा रही है। प्रशिक्षण के दौरान उप नगर आयुक्त, सिटी मिशन मैनेजर सहित नगर निगम के कर्मचारीगण मौजूद रहे।

विकास के रास्ते पर तेजी से दौड़ रहा बिहार : जदयू

पटना। जदयू प्रवक्ता नवल शर्मा ने कहा कि 2005 में नीतीश कुमार बिहार के ऐतिहासिक मुक्तिदाता के रूप में उभर कर सामने आए और 2025 में वो बिहार की जरूरत बन गए हैं। लालू राज के दलदल से बिहार को बाहर निकालने के लिए नीतीश कुमार ने अपनी बुद्धिमता से जिस आर्थिक और प्रशासनिक रणनीति का निर्माण किया यह उसी का नतीजा है कि बिहार विकास के रास्ते पर तेजी से दौड़ रहा है। लालू राज में तोड़ मरोड़कर रख दिए गए बिहार का विकास एक बेहद जटिल विषय है जिसके आर्थिक के साथ साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं और पिछले उन्नीस वर्षों में नीतीश कुमार ने जितनी संजीदगी से इन सवालों का सामना और समाधान किया है वह अदभुत है। बिहार के चतुर्दिक विकास की पेचीदगियों की जितनी बारीक समझदारी सीएम नीतीश को है उसके चलते वह बिहार की आवश्यकता बन गए हैं।

कार्यशाला राज्य में प्रमंडल स्तर पर आयोजित किए जाएंगे पर्यटन नीति निवेश कार्यशालाएं

पर्यटन से जुड़े व्यवसायी इस नीति का लाभ उठाएं, राज्य में अधिक से अधिक करें निवेश

पटना, प्रात: किरण संवाददाता

बिहार में विभिन्न धर्मों से संबंधित अनेक धार्मिक स्थल तथा सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक रमणीक स्थलों की बहुलता है। इन विविध पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने के लिए देश-विदेश से अनेक पर्यटक बिहार लगातार आते हैं। वर्ष 2023 में लगभग 8.21 करोड़ देशी-विदेशी पर्यटकों द्वारा बिहार में परिभ्रमण किया गया था। अतः यह आवश्यक है कि पर्यटकों को पर्यटन स्थलों पर मानक अनुरूप मूलभूत जन सुविधाएं उपलब्ध हो, ताकि पर्यटक बिहार से सुखद अनुभूति लेकर जायें। राज्य में पर्यटन का बेहतर माहौल बन रहा है और पर्यटन के क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा निवेश हो, इसे लेकर पर्यटन नीति 2023 में कई प्रावधान किए गए हैं, इसके तहत विभिन्न योजनाओं में 30 प्रतिशत तक की सीधी सब्सिडी प्राप्त होती है। पर्यटन निदेशक विनय कुमार राय ने जानकारी देते हुए बताया कि बिहार पर्यटन नीति 2023 के तहत आवेदन की प्रक्रिया एसआईपीबी के माध्यम से जारी है। इसके तहत सतत निवेश प्राप्त हो रहे हैं। राज्य में पर्यटन से जुड़े व्यवसायी इस नीति का लाभ उठाएं और राज्य में अधिक से अधिक निवेश करें। इस नीति का लाभ अधिक-से-अधिक निवेशकों को प्राप्त हो, इस हेतु राज्य भर में प्रमंडल स्तर पर पर्यटन नीति की विस्तृत जानकारी प्रदान करने हेतु पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन क्षेत्र से जुड़े होटल / रेस्टोरेंट एवं अन्य व्यवसायी समूहों के साथ कार्यशाला आयोजित करने की योजना बनायी गयी है। इस कार्यशाला में बिहार पर्यटन नीति 2023 में उल्लेखित प्रोत्साहनों तथा आवेदन की प्रक्रिया के संबंध में प्रस्तुतीकरण दिया जायेगा। साथ ही उन्हें निवेश करने हेतु प्रोत्साहित करते हुए विभाग के द्वारा पर्याप्त तकनीकी मदद मुहैया करायी जाएगी। राज्य के सभी प्रमंडलीय आयुक्त से इस संबंध में तिथि व समय तय करने का आग्रह किया गया है, उनकी सहमति के उपरांत कार्यशाला का शुभारंभ कर दिया जाएगा।

लखीसराय के व्यवसायियों को बतायी पर्यटन नीति की खासियत :

लाली पहाड़ी महोत्सव का आयोजन लखीसराय जिला प्रशासन द्वारा पुरातत्व, कला और विरासत के संरक्षण और संवर्द्धन के उद्देश्य से किया गया। इस आयोजन में पर्यटन विभाग को बिहार पर्यटन और बिहार पर्यटन नीति 2023 पर प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया था। इसमें पर्यटन विभाग की टीम ने पर्यटन नीति में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए 30 फीसदी तक मिलने वाले सीधी कैपिटल सब्सिडी की जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्वानों, प्रमुख हस्तियों और अन्य अतिथियों ने पर्यटन टीम की प्रस्तुति और उनके साथ हुए संवाद की सराहना की। इस अवसर ने न केवल बिहार की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन स्थलों को प्रस्तुत करने का मंच प्रदान किया, बल्कि राज्य की नई पर्यटन नीति के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई गयी।

विकलांगता के विषय में गर्भावस्था से ही आरंभ होना चाहिए चिंतन

पटना। विकलांगता का विषय बहुत बड़ा है। गर्भावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक इस विषय पर चिंतन होना चाहिए। यदि गर्भवती स्त्री और गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य का उचित ध्यान नहीं रखा गया तो शिशु जन्मजात विकलांग हो सकता है। जन्म के बाद भी कुपोषण और रोग विकलांगता के कारण हो सकते हैं। वृद्धावस्था तो स्वयं अनेक प्रकार की विकलांगता का कारण है। यह बातें सोमवार को बेउर स्थित इंडियन इंस्टिच्युट ऑफ हेल्थ एडुकेशन ऐंड रिसर्च में, विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर आयोजित पाँच दिवसीय समारोह का उद्घाटन करते हुए, पूर्व केंद्रीय मंत्री पद्मभूषण डा सी पी ठाकुर ने कही। उन्होंने कहा कि गर्भावस्था में गलत दवाइयाँ, एक्स-रे का रेडियेशन और नशे की लत भी गर्भस्थ शिशु में विकलांगता की कारण हो सकती हैं। इसलिए हमें हर स्तर पर सतर्क रहना चाहिए। विकलांग बच्चों को अपशब्द कहकर हतोत्साहित नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें उत्साहित करना चाहिए। समारोह के मुख्य अतिथि और पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि दिव्यांगता के विषय में सोचना केवल ऊँ लोगों के विषय में ही चिंतन करना नहीं है, जो विकलांग हैं, बल्कि स्वयं के बारे में भी सोचना है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी दुर्घटना अथवा किसी बड़े रोग के कारण कभी भी विकलांग हो जा सकता है। इसीलिए कभी भी किसी विकलांग के प्रति हामारे मन में घृणा अथवा हीनता की भावना नहीं चाहिए। यदि हमारे मन में इस तरह की कोई भावना आ रही है तो यह बौद्धिक-विकलांगता है। और कोई विकलांगता उतना हानि कारक नहीं है, जितना कि बौद्धिक-विकलांगता! उन्होंने कहा कि विकलांगों की पेंशन राशि बीस हजार प्रतिमाह होनी चाहिए। सभा की अध्यक्षता करते हुए, संस्थान के निदेशक-प्रमुख और सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा अनिल सुलभ ने कहा कि बिहार में दिव्यांगजनों के सम्यक पुनर्वास के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि प्रादेशिक मंत्रिपरिषद में ह्यदिव्यांगता निवारण और पुनर्वासह्व के रूप में एक अलग विभाग सृजित किया जाना चाहिए। जब इसके अलग से मंत्री और विभागीय सचिव समेत अन्य अधिकारी होंगे, जैसा कि केंद्र में एवं अनेक प्रांतों में भी है, तभी विकलांगता-पुनर्वास का चुनौती भरा कार्य उचित रूप में संभव हो सकेगा। उन्होंने तीन वर्षों से रिक्त पड़े राज्य निःशक्तता आयुक्त की शीघ्र नियुक्ति का भी आग्रह किया। बिहार नेत्रहीन परिषद के संस्थापक महासचिव और सुविख्यात नेत्र-दिव्यांग डा नवल किशोर शर्मा ने कहा कि राज्य में दिव्यांगों की चिंता किसी को नही है। दिव्यांगता पेंशन की राशि चार सौ रूपए मात्र है, जिससे कुछ दिन का भोजन भी नहीं हो सकता। १० वर्षों से उच्चशिक्षा में छात्र-वृत्ति नहीं मिल रही है। राज्य में एक भी राजकीय नेत्रहीन बालिका विद्यालय नहीं है। पेंशन की राशि बढ़ाकर कमसेकम पाँच हजार की जानी चाहिए। सुप्रसिद्ध समाजसेवी दीपक ठाकुर, डा रूपाली भोवाल, दिव्यांग प्राध्यापक प्रो कपिल मुनि दूबे तथा प्रो मधुमाला कुमारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर, प्रो संजीत कुमार, डा नवनीत कुमार, डा आदित्य कुमार ओझा, प्रो चंद्रा आभा, प्रो प्रिया कुमारी तथा सूबेदार संजय कुमार समेत बड़ी संख्या में संस्थान के चिकित्सक, शिक्षक, कर्मीगण तथा छात्रगण उपस्थित थे।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियन्ता, का कार्यालय

संरचना प्रमण्डल संख्या–2, भवन निर्माण विभाग, पटना

Email Id-ee.construction.div2bcd@gmail.com

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–01 वर्ष 2024–25

समुचित श्रेणी में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मों/निबंधित दुकानदारों/कम्पनियों (जिसे कमप्यूटर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाईस सप्लाई के कार्य करने का अनुभव हो उसे विशेष प्राथमिकता दी जायेगी) से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद लिफाफा में कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, संरचना अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 09.12.2024 के अपराह्न 12:30 बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 3:00 बजे अपराह्न में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कार्य का विवरणी:–**Providing, Supplying & Installation of Computer, Printer and Video Conferencing Devices etc.**

for official use in the establishment of Construction Division No. 02, Patna.

- विशेष जानकारी हेतु बेवसाईट WWW.state.bihar.gov.in/prdbihar.gov.in देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।
- कोटेशनर/आपूर्तिकर्त्ता को दिनांक 10.12.2024 के अपराह्न 4:00 बजे अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उपरोक्त वर्णित सभी मदों (क्रम सं0–i से vii) का तीन विभिन्न कम्पनियों का उत्पाद (Product) डेमो/मॉक–अप के लिए उपलब्ध कराना होगा। उत्पाद (Product) का गुणवत्ता संतोषप्रद पाये जाने पर निविदा से संबंधित अग्रतर कारवाई की जाएगी।

कार्यपालक अभियंता,
संरचना प्रमंडल संख्या–02,
भवन निर्माण विभाग, पटना–23

PR. No. 013716 (BCD) 2024-25

विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

गर्भावस्था की पहली तिमाही में माँ की एच.आई.वी. और सिफलिस की जाँच जरूर करायें।

बिहार सरकार

विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना
भवन निर्माण विभाग

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना सं0–26 वर्ष–2024–25

विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, भवन निर्माण विभाग, पटना के कार्यक्षेत्र अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य हेतु प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान/कम्पनी/अनुभवी संवेदको से सीलबंद कोटेशन दिनांक–11.12.2024 को अपराह्न 3:00 बजे तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमत्रित की जाती है। सभी प्राप्त सील बंद कोटेशन दिनांक–11.12.2024 के अपराह्न 3:30 बजे तक कोटेशनदाताओं अथवा उनके प्रतिनिधि के समक्ष खोली जाएगी।

कोटेशन राशि के अनुसार ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING (O-GRAS) के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी (विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या–2, पटना, भवन निर्माण विभाग) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा। कोटेशन प्रकाशन होने के बाद का O-GRAS मान्य होगा।

कोटेशन प्राप्ति का स्थान (1) विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, भवन निर्माण विभाग, पटना, (2) विद्युत अधीक्षण अभियंता, विद्युत कार्य अंचल दक्षिण बिहार, भवन निर्माण विभाग, पटना का कार्यालय होगा ।

क्र0 स0	कार्य का नाम	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Annual Operation & Maintenance of 1 no 20 passengers lift (G+2) for 100 Bedded old Age home,Agamkuan Distt Patna	12 Month.

विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

विद्युत कार्यपालक अभियंता,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना

PR. No. 13591 (BCD) 2024-25

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

मस्जिदों में मंदिर की मूर्ति की खोज ? क्या यह धर्मांधता नहीं है ?

बाबरी मस्जिद को ध्वंस करके राम मंदिर के निर्माण के बाद भी भारत के बहुसंख्यकों के एक प्रतिशत भक्त शायद देश में शांति-सौहार्द के इच्छुक नहीं हैं। इसीलिए अब अजमेर के ख्वाजा की दरगाह हो या सम्भल की सदियों पुरानी मस्जिद हो उसके नीचे देवताओं की मूर्तियों की खोज के लिए सर्वे किए जा रहे हैं। ताज्जुब है कि सुप्रीम कोर्ट ने भी संसद द्वारा पारित विधि को मंजूर किया है जिसमें कहा गया है कि आजादी मिलने के समय जिस उपासना स्थल का जो स्वरूप था उसे वैसा ही कानूनी रूप से माना जाएगा.! हालांकि अयोध्या मंदिर के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने साफ साफ रूप से लिखा था कि इस मामले को अपवाद के रूप में माना जाएगा। परंतु जिस प्रकार मथुरा झ काशी और उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर पुरातत्व सर्वेक्षण के नाम पर जिस प्रकार कार्रवाई की जा रही है वह अदालती फैसले का सम्मान तो नहीं हैं। हाँ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ का बुलडोजर न्याय और उनका अलपसंख्यकों के प्रति दुराव ही प्रदेश में हो रही इन गैर कानूनी कार्रवाई को हवा दे रहा हैं। एक तरफ अल्पसंख्यकों के उपासना स्थलों को गैर कानूनी बताने की शासकीय कोशिश हो रही है वहीं बांग्ला देश में वहां के अल्पसंख्यकों हिन्दू समुदाय पर बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय की प्रताड़ना का विरोध लगभग एक जैसा ही है। अर्थात जो जहां बहुमत में है वह अपने से कमजोर को दबा रहा हैं। कहने को तो बांग्ला देश में भी लोकतंत्र और कानून का राज है, जैसा की भारत में, परंतु धार्मिक अतिरेक दोनों ही जगहों पर अत्याचार सा बन गया है। उदाहरण के तौर पर उत्तर प्रदेश और राजस्थान में अगर मस्जिदों और दरगाहों को हिन्दू उपासना स्थल पर निर्मित किए जाने का दावा किया जाता है, वहीं बांग्ला देश में इस्कॉन मंदिरों की भूमि को मुस्लिमों से छीने जाने का आरोप लगाया जाता हैं। ऐसा नहीं है कि गैर हिन्दू देश में, खासकर मुस्लिम राष्ट्रों में भी वहां के शासकों ने मंदिर निर्माण के लिए न केवल इजाजत दी वरन अन्य प्रकार से भी मदद दी है। यूनाइटेड अरब अमीरात, कतार आदि ऐसे ही मुस्लिम राष्ट्र है जहां हिन्दुओं ने मंदिरों का निर्माण किया हैं। अब अगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी श्री होसबोले बांग्ला देश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के लिए देश में आवाज उठाने की हांक लगा रहे हैं, तब उन्हें पहले अपने योगी जी से कहना चाहिए कि वे अल्पसंख्यकों के प्रति सद्भाव बनाए। अन्यथा बांग्ला देश के हिन्दुओं की रक्षा का आरएसएस का आवाहन निरुदेश ही साबित होगा -यानि मीडिया में एक और बयान ! बस उससे ज्यादा कुछ भी नहीं। आरएसएस की कट्टरता का एक उद्धरण झांसी रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर लगभग 500 से अधिक यात्रियों संघ की प्रार्थना कराई ह्रसदा भक्तवत्सले मतरभूमिह्व अब यह कोई धार्मिक प्रार्थना नहीं है, लेकिन यह एक ऐसे संगठन का गढ़ है जो अन्य धर्मावलंबियों के प्रति असहिष्णु है। अब प्लेटफॉर्म में कोच में नमाज अदा करने पर इस संगठन द्वारा आपत्ति जताई गई थी। तब ट्रेनों के कैंसिल होने के कारण प्रतीक्षारत यात्रियों को सीट दिलाने का आश्वासन देकर पंक्तिबद्ध खड़े करवाना और संघ के गान को आयोजित करना, गैर कानूनी नहीं पर उचित तो तनिक भी नहीं है।आरएसएस और उसके आनुसंगिक संगठनों द्वारा धर्म को लेकर जिस प्रकार कट्टरता का भाव सार्वजनिक क्षेत्रों में अभिव्यक्त होता है, वह भारत जैसे बहु धरमी और विभिन्न आस्थाओं वाले देश के लिए उचित नहीं है। अब हमें आजादी मिले हुए सात दशक हो गए हैं इसलिए लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए सभी को भारतवासी बनकर देश के संविधान के प्रति निष्ठावान रहना होगा। अन्यथा अफ्रीका में अनेक देश है जहां पर जातीय अथवा नस्लीय कारणों वहां सतत लड़ाई हिंसा जारी है। कुछ नेताओ के अहंकार के कारण लाखों लोगों का जीवन वहां नरक बन चुका है। भूख, बेरोजगारी, बलात्कार और सामूहिक हत्या वहां दिनचर्या बन गई है। येमान सूडान और मलावी आदि देशों में धार्मिक नस्लीय कट्टरता ने आम जनों का जीवन नरक कर दिया हैं। अगर हमने इसे वक्त रहते नहीं रोका तो भारत भी पाकिस्तान येमान और सूडान बन सकता है।

कांग्रेस के सामने चुनौतियों भरे कार्य

कांग्रेस को चुनावी रुझानों और मतदाताओं के बीच मूड में आने वाले तेजी से परिवर्तन को समझना होगा जो पार्टी का समर्थन और उसकी अस्वीकृति करते हैं- जैसा कि हम छह महीने के भीतर होने वाले चुनावों में देखते हैं। वही मतदाता जिन्होंने मई 2024 में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों को बहुत उत्साह से वोट दिया था, जो भाजपा और उसके सहयोगियों के प्रति अपनी घृणा के दर्शा रहे थे- जैसे कि हरियाणा और महाराष्ट्र में। भारत के मतदाता पिछले कुछ समय से कांग्रेस को ऊपर-नीचे कर रहे हैं और यह प्रवृत्ति पिछले डेढ़ साल में और भी स्पष्ट हो गयी है, विशेषकर मई 2023 में कर्नाटक चुनाव के समय से, जब लोगों ने भाजपा को सत्ता से बाहर करते हुए कांग्रेस को भारी बहुमत से जिताया था। इस अवधि के दौरान देश भर में लगभग हर छह महीने में मतदाताओं का मूड बदलता हुआ देखा गया है, खासकर कांग्रेस के पक्ष में या उसके खिलाफ। नवंबर 2023 में राजस्थान और मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव, अक्टूबर 2024 में हरियाणा चुनाव और अब नवंबर 2024 में महाराष्ट्र चुनाव में मिली असफलताओं ने स्पष्ट रूप से दिखा दिया है कि अगर कांग्रेस को देश भर में आगामी चुनावों में भाजपा से मुकाबला करना है तो उसके सामने महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिन्हें उसे करना ही होगा। कांग्रेस को चुनावी रुझानों और मतदाताओं के बीच मूड में आने वाले तेजी से परिवर्तन को समझना होगा जो पार्टी का समर्थन और उसकी अस्वीकृति करते हैं- जैसा कि हम छह महीने के भीतर होने वाले चुनावों में देखते हैं। वही मतदाता जिन्होंने मई 2024 में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों को बहुत उत्साह से वोट दिया था, जो भाजपा और उसके सहयोगियों के प्रति अपनी घृणा के दर्शा रहे थे- जैसे कि हरियाणा और महाराष्ट्र में, कुछ महीने बाद अक्टूबर और नवंबर में हुए चुनावों में भाजपा और सहयोगियों के पक्ष में मतदान किया, जो इंडिया ब्लॉक में कांग्रेस और उसके सहयोगियों के प्रति अपनी अस्वीकृति दर्शाते हैं। यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक रूझान है, जो प्रथम दृष्टया दर्शाता है कि अब वोटरों को किसी भी पार्टी या गठबंधन द्वारा हल्के में नहीं लिया जा सकता है। इस स्थिति में कांग्रेस के पास विपक्ष में किसी भी अन्य राजनीतिक दल की तुलना में सर्वाधिक दांव पर है, क्योंकि यह केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी है। कांग्रेस को वास्तव में वर्तमान चुनावी रुझानों को गहराई से समझने की आवश्यकता है, जो कुछ ही महीनों के भीतर अपने मूड को बदलने की प्रवृत्ति दिखाते हैं, जो अंततः पार्टी के चुनावी भाग्य को प्रभावित करते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले डेढ़ साल में मतदान के रूझान में बहुत भिन्नता देखी गयी है, जो क्षेत्र दर क्षेत्र और जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि बदलने के साथ ही बदल जाते हैं। कांग्रेस को न केवल इस रूझान की गहरी समझ की आवश्यकता होगी, बल्कि मतदाताओं के तेजी से बदलते व्यवहार के कारणों को भी समझना होगा। ग्रेस को सबसे पहले हार का विश्लेषण करने की आवश्यकता है, और फिर हार के कारण या जहां इसने कम प्रदर्शन किया है, उसकी पहचान की। हार का विश्लेषण करने के अलावा, उसे आत्मनिरीक्षण करने, अपने अभियान को तैयार करने, उम्मीदवारों के चयन, गठबंधनों के साथ सीट बंटवारे और मतदाताओं को स्पष्ट रूप से संदेश देने में पार्टी द्वारा की गयी रणनीतिक गलतियों की पहचान करने की आवश्यकता। कांग्रेस नेतृत्व वास्तव में क्या करना चाहता है का संदेश भी स्पष्ट रूप मतदाताओं तक संप्रेषित करना होगा। हाल के सभी चुनावों में कांग्रेस पार्टी को मिली असफलताओं का भी मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, क्योंकि कुल मिलाकर हार का श्रेय स्थानीय और क्षेत्रीय नेताओं को दिया गया है, जो गुटबाजी में लिप्त पाये गये और पार्टी में फूट दिखाई दी। इसके अलावा, उनके व्यवहार को ऐसा देखा गया जैसे कि उनका केवल स्वार्थ है। इसलिए, पार्टी के पास अपने क्षेत्रीय और स्थानीय नेताओं की प्रभावशीलता और विश्वसनीयता का आकलन करने का एक बड़ा काम है। इस आकलन का उपयोग जमीनी स्तर से संगठनात्मक नेटवर्क के पुनर्निर्माण में किया जा सकता है, जो पार्टी के लिए समय की मांग है। यह पहले से ही सर्वविदित है कि कांग्रेस ने बूथ स्तर की समितियों तक अपना ऊर्ध्वाधर नेतृत्व खो दिया है, जिसे उसने कभी हासिल किया था। स्थानीय नेटवर्क का पुनर्निर्माण- जैसे कि जिला, ब्लॉक और पंचायत स्तर की समितियां- सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई भी राज्य स्तरीय या राष्ट्रीय स्तर की समितियां मतदाताओं को मतदान केंद्रों तक नहीं ला सकती हैं।

दुनिया का सिरमौर बनने की ओर अग्रसर भारत

अंतर्राष्ट्रीय संगठन डेलायट ने अपनी हालिया रिपोर्ट में वर्ष 2030 तक भारत के चीन और अमेरिका जैसी विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़कर दुनिया के सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार के रूप में उभर कर सामने आने की आशा व्यक्त की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के मध्यम वर्ग का दायरा काफी तेजी से बढ़ रहा है जिसके कारण बाजार तक पहुंच रखने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। व्यापार की नीतियों में उदारीकरण और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ने का असर उपभोक्ता बाजार पर दिख रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और उत्पादों के निर्यात में बढ़ोत्तरी ने भी उपभोक्ता बाजार का आकार बढ़ाने में सहायता की है।

ललित गर्ग
लेखक

अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत एवं उसके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की साख एवं सीख के कारण भारत दुनिया का सिरमौर बनने की दिशा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में 5 दिन के विदेश दौरे में तीन देशों की यात्रा की और 31 ग्लोबल लीडर्स और वैश्विक संगठनों के प्रमुखों के साथ मुलाकात की। मोदी की विदेश यात्राओं से विश्व में भारत का न सिर्फ सम्मान बढ़ रहा है बल्कि दुनिया का हमारे देश के प्रति नजरिया भी बदल रहा है। भारत का हमेशा से मानना रहा है कि दुनिया के शीर्ष ताकतों को सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए। आर्थिक रूप से संपन्न देशों को छोटे-छोटे देशों के हितों का भी उतना ही ख्याल रखना होगा। प्रधानमंत्री के एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का मंत्र इस बात की ओर ही संकेत है। भारत में वैश्विक विकास को फिर से पटरी पर लाने, युद्धमुक्त दुनिया बनाने, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य और डिजिटल परिवर्तन जैसे वैश्विक चिंता के प्रमुख मुद्दों पर दुनिया की अगुवाई करने की क्षमता है। इस पहलू को अब दुनिया की तमाम बड़ी शक्तियां भी स्वीकार करने लगी हैं। मोदी ने बार-बार कहा है भारत वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से काम करता है, जिसमें छोटे-छोटे देशों के हितों को पूरा करने के लिए समान विकास और साझा भविष्य का संदेश भी निहित है, जो भारत की आशावादी एवं समतामूलक सोच को दर्शाता है। भारत को स्वर्णिम भारत, अच्छा भारत, रामराज्य का भारत या दुनिया का सिरमौर इसलिये कहा जाता है कि यह वो देश है जहाँ से दुनिया ने शून्य को जाना। खेल, पर्यटन और फिल्मों से जिसको पहचाना जाता है। जिसकी अंतरिक्ष में पहुँच, तकनीकी प्रतिभाओं से विश्व ने भी भारत का लोहा माना है। बिना रक्त क्रांति के जिसने पायी थी आजादी। भारत दुनिया को बाजार नहीं, एक परिवार मानता है। संतों के सान्निध्य में चलने वाली भारत की व्यवस्था पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शन हैं। मानव सभ्यता के 95 प्रतिशत समय तक भारत दुनिया को खनिज, मसाले और धातुओं के साथ ही धर्म, गणित एवं खगोलशास्त्र की अवधारणाएं देता रहा। जब सारी दुनिया भटकती है तब भारत उसका मार्ग प्रशस्त करता है। भारत टकराव और संघर्ष को मानवता के लिए खतरा मानता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि मौजूदा दौर में हमें अपने अस्तित्व ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए लड़ने की जरूरत है। भारत ने अपनी विदेश नीति के जरिए हमेशा ही ये संदेश दिया है कि आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, गरीबी, आतंकवाद, युद्ध और महामारी जैसी जिन सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना कर रही है, उनका समाधान आपस में लड़कर नहीं बल्कि मिलकर काम करके ही निकाला जा सकता है। आज दुनिया में ऐसी ही संवेदनशील अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण की चर्चा हो रही है जहां समाज कल्याण एवं जीडीपी विकास दोनों का सह-अस्तित्व हो और नागरिकों की प्रसन्नता सर्वोपरि हो। भारत ऐसी ही अर्थव्यवस्था यानी संवेदनशील वैभव के सदुपयोग को खुशहाल जीवन और दीर्घकालिक आत्मनिर्भर समाज का आधार मानते हुए आगे बढ़ रहा हैं। भारतीय सभ्यता सदा से धन और दान दोनों को सर्वोच्च मानती है। हमारे ऋषियों-मनीषियों ने वाकपटुता, सहायता करने की तत्परता, शत्रुओं से निपटने की बुद्धिमत्ता, स्मृति, कौशल, नैतिकता एवं राजनीति का ज्ञान आदि गुणों को सफल नेतृत्व का आधार बताया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन्हीं गुणों के बल पर भारत को दुनिया में अव्वल स्थान पर पहुंचाया हैं। भारत के पास सबसे मजबूत लोकतंत्र है, विविधता है, स्वदेशी एवं समावेश सोच, आदर्श जीवनशैली, वैश्विक सोच है और दुनिया इन्हीं आइडियाज में अपनी सभी चुनौतियों का समाधान देख रही है। आज अमेरिकी अपनी गिरती साख को लेकर चिन्तीत है। यूरोपीय संस्कृति ऐसी रही है, जिसमें उन वस्तुओं पर भी पैसा बहाया गया, जिनकी उन्हें कभी जरूरत ही नहीं थी। चीन ने कारोबार और नीतियों का ऐसा रास्ता अपनाया, जिसमें कोई नैतिकता नहीं। रूस अपने शत्रु को आंकने में गलती कर गया और एक अंतहीन से युद्ध में उलझकर रह गया। दुनिया में मची इस उथल-पुथल के बीच ऐसा लगता है कि केवल भारत ही ऐसी प्रमुख शक्ति है, जिसने ऐसा रास्ता चुना जो कूटनीतिक समझ और नैतिकता से भरा है। साथ ही, उसने एक स्थिर अर्थव्यवस्था के वैश्विक ब्रांड के रूप में खुद को स्थापित किया है, जिसके साथ दुनिया व्यापार करना चाहती है। ये सब इसी कारण संभव हुआ, क्योंकि हम अपनी संस्कृति से जुड़े हैं, हमारा नेतृत्व संस्कृति से जुड़ा एक महान कर्मयोद्धा कर रहा है। दुनिया पिछले हजारों सालों से सुखों के लिए दौड़ रही है लेकिन इस दौड़ में हार चुकी है। अब उसकी नजर भारत पर है। देश को अपनी सारी शक्ति एकजुट करनी होगी। सारी दुनिया में कट्टरपंथ और उदारता के बीच लड़ाई चल रही है। कपट और सरलता के बीच संघर्ष चल रहा है। देश को अपने मूल्यों को स्थापित करने के लिए सेनापति की भूमिका निभानी होगी और उसके लिये उसकी तैयारी भी है। वर्तमान में भारत आर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक तथा ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का सिरमौर बन रहा है, यह अच्छा संकेत है। अन्यान्य क्षेत्रों के साथ भारत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर है। सौर ऊर्जा उत्पादन में भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। इसलिए सारा संसार भारत की ओर बड़ी आशा और विश्वास के साथ देख रहा है। परन्तु अनेकानेक विशेषताओं एवं विलक्षणताओं के बीच कुछ विसंगतियां एवं विषमताएं भी हैं। भारत की अस्मिता का प्रतीक मातृशक्ति की आज सर्वत्र अवमानना की जा रही है। चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता से जूझता हुआ हमारा भारतीय समाज भोगवादी संस्कृति का आदी हो चुका है। अपने देश में भारत के हित में विचार करनेवाले, समाज की उन्नति के संबंध में चिंतन करनेवाले लोगों की कमी नहीं है। फिर भी आज देश की व्यवस्था में राष्ट्रभक्तों का अभाव दिखता है, संकीर्ण राजनीति एवं सत्ता की दौड़ में मूल्यों को धुंधलाने की स्थितियां कमजोर करती है। यही कारण है कि संपूर्ण देश में एक असंतोष की भावना दिखाई देती है। सरकारी यंत्रणाओं के प्रति जनमानस का विश्वास प्रायः लुप्त होता जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में नये परचम फहराने वाले युवाओं, घर को संस्कारों से संवर्धित करनेवाली नारीशक्ति, संपूर्ण भारत के जीवन को पोषित करनेवाले हमारे अन्नदाता किसान भाइयों तथा खेतों, कारखानों तथा सर्वत्र मजदूरी करनेवाले श्रमिकों, वन-संस्कृति का जतन करनेवाले वनवासी भगिनी-बंधुओं के आत्मविश्वास, लगन तथा परिश्रम के जागरण से भारत दुनिया में अव्वल होने की दिशा में अग्रसर है। देश का शिक्षित, प्रबुद्ध तथा समृद्ध समाज को दीन-दलितों, अशिक्षितों तथा असहाय लोगों के उत्थान के लिए आगे आना होगा।

मोहन की भागवत का नया अध्याय बच्चे बढ़ाओ

डॉ भागवत इन्हीं घनेरे नरों में से एक हैं। डॉ भागवत को नहीं पता कि शादी करना और विवाह करना कोई आसान काम नहीं है। यदि होता तो वे खुद शादी न कर लिए होते। उनके मित्र प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी ने तो शादी की भी लेकिन भाग खड़े हुए । वे तीन क्या ,एक बच्चा भी इस देश को नहीं दे पाए। समाज की संरचना में इस लिहाज से डॉ भागवत और डॉ मोदी जी का कोई योगदान नहीं है। इसलिए उन्हें ये कहने का भी अधिकार नहीं है कि लोग तीन बच्चे पैदा करें। इस देश को हम दो, हमारे दो का नारा देने वाली देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने शादी भी की और दो बच्चे भी देश सेवा के लिए दिए।

राकेश अचल
लेखक

वेदव्यास की श्रीमद् भागवत कथा में 18 हजार श्लोक, 335 अध्याय व 12 स्कंध हैं , लेकिन आरएसएस के डॉ मोहन भागवत की कथा में न श्लोकों की संख्या तय है और न अध्यायों की और न स्कन्धों की। ये लगातार घटते-बढ़ते रहते हैं। डॉ मोहन भागवत की भगवत कथा भारतीय संविधान की तरह लचीली है। डॉ भगवत ने अपनी भागवत में एक नया अध्याय जोड़ा है तीन बच्चे पैदा करो का । अब उनके इस नए अध्याय से पूरा देश आल्हादित भी है और चिंतित भी। संघ प्रमुख कहने को पशु चिकित्सक हैं किन्तु वे मानवता से ओतप्रोत हैं। उन्हें पशुओं से ज्यादा मनुष्यों की फिक्र रहती है । आजकल उन्हें बहुसंख्यक हिन्दू समाज के अल्पसंख्यक होने की चिंता सता रही है इसीलिए उन्होंने देश की जनता से आव्हान किया है कि हर कोई कम से कम ३ बच्चे तो पैदा करें ही , अन्यथा उनका वजूद मिट जाएगा। डॉ भागवत को शायद पता नहीं है कि आजकल बच्चे पैदा करना तो दूर शादी करना भी कठिन हो गया है । देश में बच्चों से ज्यादा बेरोजगारों की सख्या बढ़ रही है और बरोजगारों की शादी आसानी से नहीं होती।ये बेरोजगार तीन बच्चे पैदा करने के राष्ट्रयज्ञ में कैसे शामिल हो सकते हैं ?गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम चरित मानस में लिखा है कि - पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे अचरहिं ते नर न घनेरे। डॉ भागवत इन्हीं घनेरे नरों में से एक हैं। डॉ भागवत को नहीं पता कि शादी करना और विवाह करना कोई आसान काम नहीं है। यदि होता तो वे खुद शादी न कर लिए होते। उनके मित्र प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी ने तो शादी की भी लेकिन भाग खड़े हुए । वे तीन क्या ,एक बच्चा भी इस देश को नहीं दे पाए। समाज की संरचना में इस लिहाज से डॉ भागवत और डॉ मोदी जी का कोई योगदान नहीं है। इसलिए उन्हें ये कहने का भी अधिकार नहीं है कि लोग तीन बच्चे पैदा करें। इस देश को हम दो, हमारे दो का नारा देने वाली देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने शादी भी की और दो बच्चे भी देश सेवा के लिए दिए। यानि भागवत और मोदी के मुकाबले इंदिरा गाँधी का योगदान ज्यादा महत्वपूर्ण है। सवाल ये है कि डॉ भागवत को आबादी बढ़ने की सलाह देने की जरूरत आखिर पड़ी क्यों ? क्या डॉ भागवत समाजशास्त्री हैं ? क्या डॉ भागवत अर्थशास्त्री हैं ? नहीं हैं। वे पशु चिकित्स्क हैं। इसलिए उन्हें आबादी के बारे में बात करने की न पात्रता हासिल है और न किसी ने उन्हें ये अधिकार दिया है।

देश की आबादी 2024 में 144 करोड़ थी ,जो भविष्य में घटना नहीं है ,भले ही देश की प्रजनन दर घटकर २ प्रतिशत ही क्यों न हो जाये। आबादी बढ़ाने की फिक्र उन देशों की हो सकती है जिन देशों में लगातार आबादी घट रही है । भारत तो जनसंख्या के मामले में विश्व चैम्पियन है। नंबर वन ,यानि चीन से भी आगे। इस पर भी डॉ भागवत कह रहे हैं कि देश का काम केवल दो बच्चों से चलने वाला नहीं ही ,कम से कम 3 बच्चे हर विवाहित जोड़े को पैदा करना चाहिए। संघ प्रमुख डॉ मोहन भागवत लगता है अपने प्रधानमंत्री के हम उम्र प्रचारक तो हैं किन्तु हम ख्याल बिलकुल नहीं है। उन्हें माननीय प्रधानमंत्री जी की योजनाओं और चिंताओं का पता नहीं है ,यदि पता होता तो वे आबादी बढ़ाने की बात ही न करते । शायद किसी ने डॉ भागवत को ये नहीं बताया कि इस देश में आज भी सरकार को 85 करोड़ लोगों को पेट भरने के लिए मुफ्त में अनाज देना पड़ रहा है। यानि इस आबादी के एक बड़े हिस्से के पास न दो जून की रोटी है,न रहने को घर ,चिकित्सा ,शिक्षा और दीगर सुविधाओं की तो बात ही दूर है। ऐसे में यदि लोगों ने आबादी बढ़ाना शरू कर दी तो ये मुफ्तखोरों की तादाद और नहीं बढ़ा देंगे ! देश को तीन बच्चे पैदा करने का गुरु मंत्र देने वाले डॉ भागवत को अपना समान्य ज्ञान बढ़ाना चाहिए ,क्योंकि शायद वे नहीं जानते कि दुनिया की कुल आबादी का कोई 18 फीसदी हिस्सा तो अकेले भारत के पास है। डॉ भागवत को पशु चिकत्सा शिक्षा के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ की वो रिपोर्ट नहीं पढ़ाई गयी होगी जिसके मुताबिक दुनिया में दुनिया के 1 अरब गरीबों में से 23 करोड़ से ज्यादा लोग अकेले भारत में रहते हैं। इनमें भी बच्चों की संख्या सबसे ज्यादा यानि आधी है। डॉ भागवत को ये नहीं पता कि इस वर्ष की रिपोर्ट संघर्ष के बीच गरीबी पर केंद्रित है, क्योंकि 2023 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे अधिक संघर्ष हुए और युद्ध, आपदाओं और अन्य कारकों के कारण अब तक की सबसे अधिक संख्या यानी 11.7 करोड़ लोगों को अपने घरों को छोड़कर विस्थापित होना पड़ा। इनमें मणिपुर की विभीषिका में बेघर हुए लोग शामिल नहीं हैं। मुझे पता नहीं है कि डॉ भागवत ने आधुनिक जनसंख्या विज्ञान किस विश्व विद्यालय से पढ़ा है ? मोहन भागवत ने कहा, आधुनिक जनसंख्या विज्ञान कहता है कि जब किसी समाज की जनसंख्या (प्रजनन दर) 2.1 से नीचे चली जाती है, तो वह समाज दुनिया से नष्ट हो जाता है जब कोई संकट नहीं होता है। इस तरह से कई भाषाएं और समाज नष्ट हो गए हैं. जनसंख्या 2.1 से नीचे नहीं जानी चाहिए। मै डॉ मोहन भागवत के ज्ञान को कोई चुनौती देना नहीं चाहता,मेरी हैसियत भी नहीं है चुनौती देने की । लेकिन एक बालक बुद्धि के हिसाब से मै भी एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी की तरह जानना चाहता हूँ कि वह अधिक बच्चे पैदा करने वालों को क्या देंगे. क्या वह अधिक बच्चे पैदा करने वालों के बैंक खातों में 1500 रुपये देंगे ? क्या वह इसके लिए कोई योजना लाएंगे ? बहरहाल 3 बच्चे पैदा करने के मश्विरे के बारे में मै तो सोचने से रहा क्योंकि मेरे यहां तो फुलस्टाप लग चुका है ,लेकिन जो अभी इस उद्यम में लगे हैं ,वे सोचें ,समझें और खुद कोई निर्णय करे। डॉ भागवत की बातों में बिना समझे न आ जाएँ ,अन्यथा उनका तीसरा बच्चा भी मुमकिन है उस कतार में बैठा हो जिसे पांच किलो मुफ्त का अनाज खाकर जीवित रहना पड़ता है।

लोकतंत्र बचाने के लिए ईवीएम विरोधी आंदोलन

कांग्रेस ने इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन द्वारा मतदान कराये जाने के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन करने का फैसला लिया है, जो पारदर्शी एवं निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया के लिये बेहद जरूरी हो गया है। पिछले कुछ समय से राजनीतिक दलों के अलावा अनेक लोगों और स्वयंसेवी संगठनों ने इसके खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है परन्तु भारतीय जनता पार्टी के सबसे बड़े हितरक्षक बने केन्द्रीय चुनाव आयोग ने इस सम्बन्ध में उठने वाली हर मांग को अनसुना किया है। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस विषय पर भाजपा का ही साथ दिया है जो एक तरह से जनता के विचारों की अनदेखी करना कहा जा सकता है। शुक्रवार को दिल्ली में हुई कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में फैसला लिया गया कि 26 दिसम्बर को कर्नाटक के बेलगाम से इस आंदोलन की शुरूआत होगी। इस दिन महात्मा गांधी के उसी शहर में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करने के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं, जिसने देश की तकदीर को पलटकर रख दिया था। कर्नाटक सरकार उस घटना को बड़े पैमाने पर मनाने जा रही है। ईवीएम के खिलाफ प्रस्तावित आंदोलन को उसी शहर से प्रारम्भ करना गांधीजी द्वारा स्वतंत्रता के लिये किये गये संघर्ष को नये सिरे से याद करना और एक बड़ी हालिया जरूरत को पूरा करने की दिशा में लड़ाई छेड़ना है। कोई पूछ सकता है कि क्या ईवीएम इतना बड़ा मुद्दा है कि उसके खिलाफ ऐसा बड़ा कदम उठाया जाये? हाल के सियासी घटनाक्रमों को देखें तो कहा जा सकता है कि यह इस वक्त का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है। देश जिन दुश्वारियों से गुजर रहा है उसका प्रमुख कारण ईवीएम के जरिये होने वाले चुनाव हैं जो पूरी तरह से भाजपा के पक्ष में नियोजित हो रहे हैं और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ताकत प्रदान कर रहे हैं। ईवीएम पर सम्पूर्ण आधिपत्य चुनाव आयोग का है अतः कोई दावे से यह तो नहीं कह सकता कि ये मशीनें सत्ता पक्ष को कितना और कैसे सहयोग कर रही हैं लेकिन पिछले कुछ चुनावों में, जिनमें लोकसभा और विधानसभाएं शामिल हैं, जो दृश्य प्रचार के दौरान दिखाई देता रहा और जो परिणाम आए, वे गहन संदेह पैदा करते हैं। यह शक शर्तिया तौर पर ईवीएम की हेराफेरी को इंगित करते हैं। इसकी शुरूआत 2022 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों से हुई जिसके परिणामों से संदेह पुख्ता होता चला गया। उस चुनाव में सारी परिस्थितियां और माहौल साफ-साफ भाजपा के खिलाफ दिखाई दे रहा था जिसके कई कारण थे। प्रमुख थे- किसानों व महिलाओं पर हुए अत्याचार और कोरोना काल में लोगों की बदहाली। फिर भी नतीजे भाजपा के पक्ष में गये तो इसकी लगभग पुष्टि हुई कि ईवीएम के जरिये धांधलियां हुई हैं। ईवीएम इसलिये क्योंकि मतगणना की पूर्व संध्या पर कई मशीनें स्ट्रांग रूम से बाहर पाई गई थीं। मतगणना के दौरान कई मशीनों की बैटरी 99 फीसदी तक चार्ज पाये जाने से शक गहराया। जिन क्षेत्रों में भाजपा के प्रति सर्वाधिक नाराजगी थी वहां भाजपा के उम्मीदवारों की जीत ने इस संदेह पर मुहर लगाई। 2014 के पहले, यानी नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पूर्व तक जो भाजपा ईवीएम को लोकतंत्र का हत्यारा कहती थी और जिनके एक प्रवक्ता जीवीएल नरसिम्हा राव ने भारी-भरकम किताब लिखकर इस तरीके से मतदान के दोष गिनाये थे, वही अब ईवीएम की सबसे बड़ी पक्षधर है। पिछले दो-ढाई वर्षों में जितने भी मतदान हुए हैं (लोकसभा व विधानसभा के) उनके परिणामों ने इसके प्रति शक को पुख्ता ही किया है। विपक्ष का दावा है कि वर्तमान लोकसभा में ईवीएम की हेराफेरी से लगभग 80 सीटें भाजपा ने जीती हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि यदि मशीनों का दुरुपयोग न होता तो आज भाजपा व उसका गठबन्धन एनडीए सत्ता में नहीं रहता और न ही मोदी पीएम होते। जनादेश की जैसी डकैती हुई है उससे इस आंदोलन का महत्व समझा जा सकता है। लोकतंत्र में उसे ही सरकार चलाने का अधिकार होता है जिसके पक्ष में जनता ने फैसला सुनाया हो- यहां तो उल्टा हुआ है। तिस पर यदि निष्पक्ष चुनाव कराने वाली एजेंसी यानी केन्द्रीय चुनाव आयोग ही किसी एक दल के साथ खड़ा हो और शीर्ष न्यायालय भी न सुने तो विपक्षी दलों के सामने जनता के बीच जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रहता। मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार से कई बार समय विपक्षी दलों ने गुहार लगाई पर उन्हें समय तक नहीं मिला। वहीं सुप्रीम कोर्ट वीवीपैट मिलान से भी इंकार करता है जो इस गड़बड़ी को रोकने का जवाब हो सकता है। कोर्ट कुछ ही संख्या में मिलान के लिये तैयार हुआ पर वह प्रतिशत नगण्य है। वह तो यह मानने के लिये ही तैयार नहीं कि मशीनें हैक हो सकती हैं।

संक्षिप्त खबरें

प्लांट कोरेन्टाइन और एफएसएसएआई लैब से सम्बंधित वस्तुओं को छोड़ आयात निर्यात शुरू

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। बगहा के वाल्मीकिनगर त्रिवेणी वाल्मीकिनगर लैंड कस्टम ने कार्य करना शुरू कर दिया है। लेकिन फिलवक्त उन सामानों की निर्यात या आयात की मंजूरी नहीं मिली है जिसके लिए प्लांट कोरेंटाइन या एफएसएसएआई लैब से सम्बंध रखता हो। बतादें की वाल्मीकिनगर त्रिवेणी लैंड कस्टम (भन्सार) के लिए गत कई वर्षों से सरकार,विभाग और समाजसेवियों के द्वारा प्रयास किए जा रहे थे।इसको धरातल में उताड़ने के लिए इंडो नेपाल के वरीय अधिकारियों के बीच कई दौड़ की वाताएं भी हुई।बतादें की गत डेढ़ वर्ष पहले आयात निर्यात शुरू की गई थी लेकिन कुछ तकनीकी व्यवधान के वजह से इसे बंद कर दिया गया था। लेकिन केंद्रीय मंत्री के पहल पर वाल्मीकिनगर स्थित जलसंसाधन विभाग के सर्किट हाउस में सीमा शुल्क आयुक्त डॉ यशोवर्धन पाठक समेत सम्बंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर आ रही बाधाओं को दूर करने के सफल प्रयास किए गए। फिलवक्त में सीमा शुल्क के द्वारा तय मानक के अनुसार आयात निर्यात की शुरूआत की गई है।सीमा शुल्क अधिकारी सूत्रों की माने तो जब सभी मूलभूत व्यवस्थाएं उपलब्ध हो जाएंगी तो लैंड कस्टम सुचारू रूप से आयात निर्यात की इजाजत स्वतः मिल जाएगी।

संभावित मुख्यमंत्री दौरे को लेकर अधिकारियों की वाल्मीकिनगर में हलचल बढ़ी

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की 15 दिसंबर को संभावित दौरे को लेकर जिला भर के वरीय अधिकारियों की हलचल वाल्मीकिनगर में अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई है।समझा जाता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार वाल्मीकिनगर से सूबे भर का यात्रा शुरू करेंगे । हालांकि इस दौरान वाल्मीकिनगर के संतपुर सोहरिया पंचायत में ग्राम विकास की कुछ योजनाओं को अमलीजामा पहनाए जाने की चर्चा जोड़ों पर है। स्रोतों से ज्ञात जानकारी के मुताबिक वाल्मीकिनगर से 15 वी यात्रा बिहार के अन्य क्षेत्रों के लिए शुरू करेंगे। इस दौरे से पहले मुख्यमंत्री बिहार में 14 यात्राएं कर चुके है। हालांकि इस बात की पुष्टि अधिकारियों के द्वारा नहीं की गई है। इधर इस क्षेत्र के पार्टी कार्यकताओं समेत स्थानिय लोगों ने मुख्यमंत्री के दौरे के कयास से उत्साहित नजर आ रहे है।

एसएसबी और पुलिस की जॉइंट ऑपरेशन में साढ़े 7 किलो गांजा समेत तस्कर गिरफ्तार

बगहा। बगहा के रामनगर थाना क्षेत्र में गुप्त सुचना पर एसएसबी 65 वी और रामनगर पुलिस की सयुंक्त कार्रवाई में करीब साढ़े 7. 6 किलो गाजा के साथ तस्कर को गिरफ्तार किया गया है । जब्त गांजा की अंतराष्ट्रीय कीमत लाखों में आँकी जा रही है । दरअसल सीमा की सुरक्षा में सरहद पर बंधुत्व कों लेकर तैनात एसएसबी आज अपने स्थापना दिवस पर बेहद चौकस है इसी बीच गुप्त सूचना मिलने पर एक तस्कर कों सीमावर्ती नेपाल से गाजा लेकर पंजाब में सप्लाई करने जाने पर धर दबोचा गया है । एसएसबी 65 वीं बटालियन के डीप्टी कमांडेंट आर बी सिंह और सहायक ज्ञान प्रकाश के साथ रामनगर पुलिस ने एक विशेष टीम बनाकर छापेमारी शुरू की तो तस्कर बैगनुमा झोला में गाजा लेकर पकड़ा गया जिसे जवानों ने दबोच लिया । गिरफ्तार तस्कर की पहचान कटीहार जिला के मनिहारी थाना क्षेत्र निवासी मनोज कुमार के रुप में हुई है । ऐसे में अब गिरफ्तार तस्कर से रामनगर पुलिस पूछताछ समेत आगे की कार्रवाई में जुटी है । बता दें एसएसबी आज सीमा पर स्थापना दिवस मना रही है ऐसे में यह सफलता उनके शौर्य और कार्य व्यवहार में सीमा पर तस्करी को रोकने में कारगर कदम है।

स्कूली बच्चों के साथ एसएसबी ने स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली

बगहा। इंडो नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में तैनात एसएसबी 21 वी बटालियन गंडक बराज के अधिकारियों,जवानों और ग्रामीणों द्वारा स्वक्ष भारत पखवारा के तहत स्वच्छता अभियान चलाया गया।ज्ञात हो कि हर वर्ष भारत में 01 से 15 दिसंबर तक स्वक्ष भारत पखवारा मनाया जाता है।इस दौरान एसएसबी द्वारा तरह तरह के अभियान चला कर लोगों को जागरूकता फैलाने का काम करती है।इसी क्रम में वाल्मीकिनगर स्थित भारत नेपाल सीमा पर सीमा सुरक्षा में तैनात एसएसबी 21 वी बटालियन बी समवाय गंडक बराज के कंपनी कमांडर सह निरीक्षक सुरेश कुमार के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान के तहत साफ सफाई की गई।

तरैया में भी बनेगा 2 नया सब स्टेशन, घरेलू, व्यावसायिक व कृषि विद्युत व्यवस्था होगी सुदृढ़ : राजीव प्रताप रुड़ी

पहले से 45 विद्युत सब स्टेशन कार्यरत, 5 नये सब स्टेशन की अनुशंसा

- तरैयां प्रखण्ड के अरदेवा और पचरौर में बनेगा नया सब स्टेशन
- अमनौर के नारायणपुर और मढ़ौरा के नौतन में भी नया विद्युत सब स्टेशन
- तकनीकी समस्या से विद्युत आपूर्ति प्रभावित न होने की दूरगामी व्यवस्था

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। । सारण सांसद राजीव प्रताप रुडी का दूरदर्शी सोच और कुशल कार्यनीति का लाभ अब पूरे जिला की जनता को प्राप्त हो रहा है। यही कारण है कि गुणवत्तापूर्ण निर्बाध विद्युत व्यवस्था सुदृढ़ की गई है ताकि आम जन की दिनचर्या प्रभावित न हो। सांसद के प्रयास से पहले ही जिला में 45 सब स्टेशन स्थापित है। अब 5 नये सब स्टेशन की अनुशंसा किया गया है। इसके बनने के बाद सारण में विद्युत सब स्टेशनों की संख्या 50 हो जायेगी जिससे निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

जिला की विद्युत व्यवस्था को गुणवत्तापूर्ण और निर्बाध बनाये रखने के लिए सांसद रुडी पहले ही सारण के हर क्षेत्र को सुचारु विद्युत आपूर्ति के लिए दो सर्किट बनाकर जोड़ने की व्यवस्था कर रखी की। तरैयां प्रखण्ड के अरदेवा और पचरौर में, अमनौर प्रखण्ड के नारायणपुर तथा मढ़ौरा प्रखण्ड के नौतन में नया विद्युत सब स्टेशन स्थापित हो जाने से यह इस क्षेत्र के लिए अलग से डेडीकेटेड पावर सब-स्टेशन हो जायेगा।

इस संदर्भ में सांसद रुडी ने कहा कि सांसद रुडी ने बताया कि कुछ वर्षों पूर्व तक सारण में विद्युत आपूर्ति सुचारु नहीं हो पा रही थी। विद्यार्थियों, व्यवसायों, किसानों और तमाम लोग को इसके कारण काफी कष्ट उठाना पड़ रहा था। रोजमर्रा के अधिकतर काम बिजली से ही संचालित होते है और प्रतिदिन उपयोग में आने वाले उपकरण भी बिजली से ही चलते है। ऐसे में बिजली की वह उपयोगिता को देखकर बिहार सरकार के ऊर्जा विभाग और केंद्रीय परियोजनाओं का लाभ दिलाने के लिए मेरे तरफ से प्रयास जब किया गया तो इसका सुफल अब देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि विद्युत उपकेंद्र के स्थापित हो जाने स्थानीय निवासियों को काफी लाभ होगा। इससे विद्युत आपूर्ति में व्यापक सुधार होगा और गुणवत्तापूर्ण निर्बाध बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित हो जायेगी।

हृदय रोग से ग्रसित जिले के 05 बच्चे अहमदाबाद के लिए रवाना

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) ।जिले के अनुमंडलिय अस्पताल नरकटियागंज के हृदय रोग से ग्रसित 03 बच्चे, मैनाटांड़ से 01 तथा बगहा एक से 01कुल 05 बच्चे अपने अभिभावक के साथ आईजीआईसी हृदय रोग संस्थान पटना रवाना हुए। जहाँ से ये बच्चे अन्य जिलों से आए बाल हृदय मरीजों के साथ अहमदाबाद के लिए एकसाथ रवाना होंगे। अस्पताल उपाधीक्षक डॉ संजीव कुमार ने हरी झंडी दिखाकर एम्बुलेंस रवाना करते हुए बताया की राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत बच्चों की आँगनबाड़ी केंद्र एवं सरकारी स्कूलों में चिकित्सकों के द्वारा समय समय पर जाँच की जाती जिसमे हृदय रोग से ग्रसित बच्चों को जिले में रेफर किया जाता है उसके बाद आवश्यक कागजात की प्रक्रिया के बाद पटना आईजीआईसी या अहमदाबाद के सत्य साईं हॉस्पिटल में शल्य चिकित्सा कराई जाती है। उन्होंने बताया की शल्य चिकित्सा के बाद गंभीर हृदय रोग से पीड़ित बच्चों को अब नया जीवन मिलेगा। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के जिला समन्वयक रंजन मिश्रा ने बताया की नवंबर 2024 माह में 22 बच्चों को पटना भेजा गया है। सभी बच्चों का हार्ट का सर्जरी श्री सत्य साई हॉस्पिटल अहमदाबाद में कराया जाएगा। पटना से शाम के समय सभी बच्चों एवं उनके अभिभावक का फ्लाइट से ले जाया जाएगा ' साथ में एक चिकित्सक भी इनके साथ जा रहे हैं '

मुख्यमंत्री बाल हृदय योजना के तहत जन्मजात हृदय रोगियों का निःशुल्क इलाज होता है

जिले के सिविल सर्जन डॉ विजय कुमार ने बताया की मुख्यमंत्री बाल हृदय योजना के तहत जन्मजात हृदय रोगियों का निःशुल्क इलाज कराया जाता है।

रोगियों की पहचान आरबीएसके की टीम द्वारा की जाती है। बाद में जिला स्वास्थ्य समिति द्वारा उक्त रोगियों को एंबुलेंस से आइजीआइएमएस पटना भेजा जाता है।

यहां संबंधित रोगियों की स्क्रीनिंग की जाती है। समस्या पाए जाने पर रोगियों को फ्लाइट के माध्यम से अहमदाबाद भेज कर उनका समुचित इलाज, भोजन, रहने की व्यवस्था कराया जाता है।

विश्व दिव्यांगता दिवस पर उड़ान प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

बनियापुर । प्रखंड के प्रखंड संकुल संसाधन केंद्र बनियापुर के परिसर मे विश्व दिव्यांगता डीवीएस के अवसर पर प्रखंड स्तरीय दिव्यांग छात्र छात्राओं के बींच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया,जिसका विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर बी ई ओ भाग 2 रामेश्वर यादव द्वारा किया गया ।जिस कार्यक्रम मे दिव्यांग छात्र छात्राओं के बींच 100 मीटर दौड़,चित्रकला वही श्रावण बाधित दिव्यांग के लिए उड़ान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।सफल प्रथम द्वितीय तृतीय को पुरस्कृत किया गया,कायक्रम मे 16 दिव्यांग छात्रों ने भाग लिया,श्रवण दिव्यांग प्रतियोगिता के 100 मीटर दौड़ मे आयुष कुमार सिंह म वि सहाजितपुर चित्र कला मे अमरजीत कुमार मवि भिट्ठी सहाबुद्दीन को सम्मानित किया गया,वही शेष को सांतावना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।चयनित प्रतिभागी 3 दिसंबर को दिव्यांगता दिवस के कार्यक्रम मे छपरा शामिल होगे, जहा बी आर पी सदन प्रसाद श्रीनकांत पाण्डेय शंभू राम साधनसेवी बिपिन बिहारी लाल नसरुद्दीन डी डी ओ मोहम्मद जलालुद्दीन एमडीएम प्रभारी बीर बहादुर चौधरी आदि शामिल थे।

65 वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल, बेतिया द्वारा नागरिक कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत टूर गाइड, इको टूरिज्म और होम स्टे प्रशिक्षण का उद्घाटन समारोह आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) ।ससशस्त्र सीमा बल 65 वाहिनी बेतिया द्वारा नागरिक कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत 30 ग्रामीण बेरोजगार युवकों एवं युवतियों के लिए 10 दिवसीय टूर गाइड, इको टूरिज्म और होम स्टे प्रशिक्षण का उद्घाटन समारोह श्री नंदन सिंह मेहरा, कमांडेंट, 65 वाहिनी सशस्त्र सीमा बल बेतिया के मार्ग दर्शन मे किया गया । इस कार्यक्रम में हरनाटांड़ तथा आस-पास गाँव के 30 युवकों एवं युवतियों को चयनित कर उन्हे हरनाटांड़ के सामुदायिक भवन के प्रांगण मे यह प्रशिक्षण दिया जायेगा । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री कोजा राम लोमरोड़, द्वितीय कमान अधिकारी 65 वाहिनी ने कहा कि, यह प्रशिक्षण ब्रजीना फाउंडेसन के सहयोग से चलाया जाएगा जिसमे भाग लेने वाले युवकों एवं युवतियों को टूर गाइड, इको टूरिज्म और होम स्टे प्रशिक्षण दिया जाएगा । इस प्रशिक्षण से स्थानीय युवक एवं युवती स्वावलंबी बनेंगे तथा अपने विकास के साथ साथ इस क्षेत्र का भी विकास कर पाएंगे । इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य वाल्मीकि टाइगर रिजर्व में बढ़ते पर्यटकों को ध्यान में रखते हुये ग्रामीण लोगों का बौद्धिक विकास करना है जिससे जीविका के साधन उपलब्ध हो सके । इस वाहिनी के द्वारा

बहुत से कल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है इसके अलावा वाहिनी के द्वारा आगामी दिनो मे और भी कल्याणकारी कार्यक्रम कराए जाएंगे ।

इस कार्यक्रम के अवसर पर महोदय द्वारा आयोजित होने वाले बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, ग्रामीण बालिकाओं को उअढऋमे भर्ती होने से संबन्धित दिशानिदेशों से भी भालिभांति अवगत कराया गया ।

इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में श्री कोजा राम लोमरोड़, द्वितीय कमान अधिकारी 65 वाहिनी, श्री आर. बी. सिंह, उप-कमांडेंट, श्री सत्यम कुमार, रेंज पदाधिकारी वन विभाग हरनाटांड़, डा. कृष्णामोहन राय, सुनैना देवी मेमोरियल हास्पिटल, शारदा प्रसाद, बौद्धिक विचार महासभा हरनाटांड़, महेश्वर काजी, अनुसूचित जनजाति अध्यक्ष, दीपेन्द्र शाह, मुखिया हरनाटांड़, संजय काजी मुखिया देवलरिया पंचायत, खूबलाल वरखरिया, मुखिया नौतनवा, रवीद्र प्रसाद, भारतीय थारु कल्याण महासभा सीक्रेटरी, मिस इन्दु, चेयर परसन, केयर एण्ड कंजर्व नेचर फाउंडेसन, मिस तन्वी शुक्ल, मुख्य संचालक अधिकारी ब्राजीना फाउंडेसन, , नव प्रशिक्षु, ग्रामीण तथा सशस्त्र सीमा बल 65 वाहिनी के बलकर्मी उपस्थित थे ।

अब प्रत्येक प्रखंड से एक-एक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का एनक्वास प्रमाणीकरण कराने का लक्ष्य

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। सारण जिले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा आम लोगों को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए अहम कदम उठाए जा रहे हैं। विभाग ने प्रत्येक प्रखंड से एक-एक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर को एनक्वास (नेशनल क्वालिटी असुरेंस स्टैंडर्ड) प्रमाणीकरण दिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह प्रमाणीकरण मिलने पर स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा और लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी। जिले के 20 प्रखंडो से एक-एक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर को एनक्वास के लिए तैयार किया जा रहा है।

राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के तहत सर्टिफाइड किया जाएगा

जिला स्वास्थ्य समिति के डीपीएम अरविन्द कुमार ने बताया कि अब तक सारण जिले के दो स्वास्थ्य केंद्रों , यूपीएचसी मासूमगंज और एचडब्लयूसी फुलवरिया को एनक्वास का प्रमाण पत्र मिल चुका है, दिघवारा प्रखंड शीतलपुर डीह हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का स्टेट टीम द्वारा असेस्मेंट किया जा चुका है। अब सभी अनुमंडल क्षेत्रों से एक-एक एचडब्ल्यूसी को भी इस प्रमाणीकरण के लिए तैयार किए जा रहा हैं। इस प्रक्रिया के तहत इन केंद्रों को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के तहत सर्टिफाइड किया जाएगा, ताकि आम लोगों को उच्च स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। यह कदम मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए उठाया गया है, जिससे हर व्यक्ति को समुचित इलाज और स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें।

स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है आंतरिक मूल्यांकन:

जिला स्वास्थ्य समिति के डीपीसी रमेश चंद्र कुमार ने बताया कि फिलहाल तीन सेंटर राष्ट्रीय गुणवत्ता आवश्वासन मानक के तहत प्रमाणीकरण को लेकर तैयार है। जिसमें मांझी के मटियार स्थित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, सोनपुर का गोविन्दचक और अमनौर प्रखंड के अपहर का एचडब्ल्यूसी तैयार है। जिसका आंतरिक मूल्यांकन किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि इसकी तैयारी को लेकर सभी स्वास्थ्य कर्मी को अलग-अलग जिम्मेदारी दी गयी है। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के चेकलिस्ट के अनुसार कार्य किया जा रहा है। व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने पर विशेष फोकस किया जा रहा है। जिसमें सीएचओ, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, बीएचएम, बीसीएम, केटीएस, एसटीएस, एसटीएलएस, डाटा ऑपरेटर को अलग-अलग कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

मरीजों और स्वास्थ्य संस्थानों के बीच विश्वास का निमार्ण

राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत, स्वास्थ्य सेवाओं के सभी पहलुओं जैसे- चिकित्सा, नर्सिंग, प्रशासन, और रोगी देखभाल की गुणवत्ता को मानक के अनुरूप तैयार किया जाता है। ताकि स्वास्थ्य संस्थानों में आने वाले सभी मरीजों को उच्च गुणवत्ता के साथ उचित सलाह और उसका सही उपचार मिल सकें। इसके अलावा यह मानक स्वास्थ्य कर्मियों की शिक्षा और प्रशिक्षण के स्तर को भी सुधारने में काफी मददगार साबित होता हैं, जिससे उनकी दक्षता बढ़ती है।

सारण एसपी ने भुवनेश्वर में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक महानिरीक्षक सम्मलेन 2024 में दिया व्याख्यान

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। भुवनेश्वर में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस महानिदेशक/ महानिरीक्षक सम्मलेन-2024 में डॉ कुमार आशीष, पुलिस अधीक्षक सारण द्वारा पूरे देश में नए कानून बी एन एस के तहत गंभीर शीर्ष पहली सजा (रसूलपुर थाना के धनाडीह गांव में हुए तिहरे हत्याकांड से संबंधित कांड संख्या -133/ 24 में 14 दिनों मे अनुसंधान पूर्ण करते हुए गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप पत्र समर्पित किया गया था तदोपरांत माननीय न्यायालय में त्वरित विचारण के बाद घटना के 50वे दिन माननीय न्यायालय द्वारा दोनों दोषी अभियुक्तों को उम्रकैद सहित आर्थिक दंड की सजा सुनाई गई) करवाने में अपनाए गए प्रक्रियाओं/तरीकों के संदर्भ में प्रेजेंटेशन दिया गया। जिसपर वहां उपस्थित प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, पुलिस महानिदेशक बिहार एवं उपस्थित सभी पुलिस महानिदेशक ों/महानिरीक्षकों द्वारा काफी प्रशंसा करते हुए इस मॉडल को अन्य जगहों पर भी लागू करने का सुझाव दिया गया।

इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, पुलिस महानिदेशक बिहार आलोक राज सहित सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशक/ पुलिस महानिरीक्षक सहित अन्य अधिकारीगण की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कायस्थ परिवार द्वारा मनाया जाएगा धूमधाम से डॉ राजेंद्र प्रसाद का जयंती सह सम्मान समारोह

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर। छपरा में चित्रांश परिवारों के द्वारा 3 दिसंबर को भारत का प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद का जयंती धूमधाम से मनाया जाएगा।उक्त बातो की जानकारी जयंती मनाने में आयोजक मंडल के संस्थापक सदस्यीय टीम के राजेश कुमार सिन्हा, अभिजीत श्रीवास्तव, प्रिंस राज तथा मार्ग दर्शक मण्डल डॉ विद्या भूषण श्रीवास्तव, मुकुंद मोहन राजू, कोर कमिटी सदस्य अजय सहाय,मनीष कुमार सिन्हा, ब्रजेंद्र किशोर, राजेश वर्मा और सुमन कुमार (सोनू) तथा अजीत कुमार सहाय ने संयुक्त रूप से बताया कि कायस्थ परिवार, छपरा द्वारा भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जयंती के शुभ अवसर पर ह्वराजेंद्र प्रसाद जयंती समारोह सह चित्रांश सम्मान 2024 का आयोजन किया जाएगा ।

यह भव्य कार्यक्रम हमारी सांस्कृतिक विरासत और महान व्यक्तित्वों के योगदान को सम्मानित करने का एक अवसर है। इस कार्यक्रम में समाज के उत्कृष्ट योगदानकताओं को सम्मानित भी किया जाएगा। कार्यक्रम 3 दिसंबर को समयः संध्या 5:30 बजे स्थानः पार्टी क्लब, गोपेश्वर नगर में आयोजित होगा।

एक नजर डालते है कायस्त समाज

गौरतलब है कि कायस्थ समाज भारत का एक महत्वपूर्ण और प्राचीन समाज है, जो मुख्य रूप से प्रशासनिक, शैक्षिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध है। कायस्थों का ऐतिहासिक योगदान प्रशासनिक कार्यों, न्याय व्यवस्था, साहित्य, कला, और शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इस समाज के लोग अक्सर उच्च शिक्षा और पेशेवर कार्यों में सक्रिय होते हैं। हालांकि, आज के समय में समाज में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जिनका सामना करना पड़ता है।

कायस्थ समाज ने भारतीय समाज में सुधार और प्रगति के लिए विभिन्न पहल की हैं। इसके साथ ही, कायस्थों के योगदान ने समाज को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

कायस्थों के द्वारा समाज को दिशा दिखाने के लिए किए गए कार्य

कायस्थों के द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान के साथ शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। ऐतिहासिक रूप से कायस्थों ने प्रशासन और लेखन के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाई है, और इसके परिणामस्वरूप समाज में शिक्षा का स्तर ऊंचा रहा है। कई कायस्थ परिवारों ने अपनी पीढ़ियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया, जिससे समाज में जागरूकता और सुधार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वही समाज ने भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई कायस्थों ने कला, साहित्य, संगीत, और नृत्य जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है, जिससे समाज की सांस्कृतिक पहचान को बल मिला है। साथ ही कायस्थ समाज ने हमेशा सामाजिक समानता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा दिया है। विभिन्न सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एकता और समानता को बढ़ावा देने के लिए कई कायस्थ संगठनों ने काम किया है। तथा समाज के पिछड़े वर्गों, विकलांगों और जरूरतमंदों के लिए कायस्थों ने कई चैरिटी और सहायता कार्यक्रमों की शुरूआत की है। विकलांग और अंध विद्यालयों को सहायता राशि देना, अनाथ बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना, और अन्य समाजिक कल्याण कार्यों के माध्यम से कायस्थों ने समाज के उत्थान में योगदान किया है।महिला सशक्तिकरण में कायस्थ समाज ने महिलाओं को बराबरी के अधिकार देने और उन्हें सशक्त बनाने के प्रयास किए गए हैं। समाज में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने और महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए कई कायस्थ परिवारों और संगठनों ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

बताते चले कि कायस्थ परिवार छपरा सारण के द्वारा सामाजिक संस्था की स्थापना 2 अक्टूबर 2023 लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती के अवसर पर किया गया।

बाल विवाह, दहेज प्रथा उन्मूलन और नशामुक्ति को लेकर हुआ नुक्कड़ नाटक

प्रात : किरण, संवाददाता

जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, बेतिया के तत्वाधान में जिले के विभिन्न पंचायतों के पंचायत सरकार भवन/पंचायत भवन, हाट-बाजार में गीत-संगीत, नाटक का मंचन कर लोगों को किया जा रहा है जागरूक एवं प्रेरित।बेतिया(घनश्याम) । जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, पश्चिम चम्पारण के तत्वाधान में बाल विवाह, दहेज प्रथा उन्मूलन, नशामुक्ति आदि को लेकर जिले में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज विपिन हाईस्कूल के प्रांगण में नारायण युवा कला जत्था, मसौढ़ी, पटना के उम्दा कलाकारों द्वारा नुक्कड़ नाटक, गीत-संगीत के माध्यम से छात्र-छात्राओं को जागरूक किया गया। इसके साथ ही उक्त नुक्कड़ नाटक टीम द्वारा बेतिया सदर प्रखंड के बरवत प्रसराईन, अहवर मंझरिया एवं पिपरा पकड़ी में नाटक का मंचन कर ग्रामीणों को जागरूक किया गया।

जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि नुक्कड़ नाटक की टीम द्वारा नौतन प्रखंड के गहिरी, झखरा, पकड़िया, बैरिया प्रखंड के सूर्यपुर, बगही बघम्बरपुर, लौकरिया, नरकटियागंज प्रखंड के गोखुला, शिकारपुर, रखही चम्पापुर, मैनाटांड़ प्रखंड के सकरौल, इनरवा, सुखलही, गौनाहा प्रखंड के बाजड़ा, रूपौलिया, धमौरा, बगहा-02 प्रखंड के वाल्मीकिनगर, संतपुर सोहरिया, हरनाटांड़, बगहा-02 प्रखंड के पतिलार, सिसवा बसंतपुर, बसवरिया एवं रामनगर प्रखंड के परसौनी, भावल तथा सोहसा पंचायत के पंचायत सरकार भवन/पंचायत भवन, हाट-बाजार में चयनित नुक्कड़ नाटक की टीम द्वारा नाटक, गीत-संगीत के माध्यम से लोगों को जागरूक एवं प्रेरित किया जायेगा।

इस अवसर पर वरीय उप समाहर्ता-सह-जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी रोचना माद्री सहित विपिन हाईस्कूल के शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं, स्थानीय ग्रामीण उपस्थित रहे।

जेपीयू के शिक्षकों ने उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन के पारिश्रमिक के लिए चलाया हस्ताक्षर अभियान

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर : सांबर को जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के शिक्षकों ने उत्तरपुस्तिका मूल्यांकन के पारिश्रमिक हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाया। जिसे लेकर शिक्षकों का प्रतिनिधि मण्डल सोमवार को जेपीयू के कुलपति प्रो. प्रमेन्द्र कुमार वाजपेयी से मिला। कुलपति के साथ ही कुलसचिव प्रो. नारायण दास, परीक्षा नियंत्रक डॉ. अशोक कुमार मिश्रा, वित्त पदाधिकारी सुधांशु मिश्रा एवं अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अजित कुमार तिवारी भी मौजूद रहे। विदित हो कि विगत पाँच वर्षों से उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन का पारिश्रमिक शिक्षकों को नहीं दिया गया है। कुलपति द्वारा प्रतिनिधि मंडल को आश्वस्त किया गया कि जल्द ही भुगतान कर दिया जाएगा क्योंकि उस सम्बंध में फाइलें आगे बढ़ चुकी हैं। साथ ही प्रतिनिधि मण्डल द्वारा शिक्षकों के पदोन्नति के सम्बंध बातचीत की गई, जिसपर कुलपति ने कहा कि पदोन्नति की प्रक्रिया भी जारी है, जल्द ही आप सभी को पदोन्नति मिलने वाली है। प्रतिनिधि मंडल में डॉ. जितेन्द्र कुमार, डॉ. दिनेश पाल, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह एवं डॉ. संदीप कुमार यादव शामिल थे।

बालू कारोबारी मर्डर केस के आरोपी की हत्या

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । भोजपुर के संदेश थाना क्षेत्र के तीर्थकॉल गांव में सोमवार को बालू कारोबारी देवराज राय हत्या में शामिल अभियुक्त की गोली मारकर हत्या कर दी। बदमाशों ने युवक को काफी करीब से सिर में गोली मारी है।

हत्या के बाद शव छिपाने की नियत से बदमाशों ने उसे झाड़ी में फेंक दिया। इसके बाद बकरी चरवाहा ने शव को देखने के बाद इसकी जानकारी परिजनों को दी। घटना की सूचना मिलते ही परिजन मौके पर पहुंचे। युवक की हत्या के बाद परिवार वालों में अफरा-तफरी का माहौल रहा। मृतक शख्स बालू कारोबारी देवराज राय हत्या मामले का आरोपी था, जब वह फरार था तब पुलिस ने घर की कुर्की भी थी।

मृतक संदेश थाना क्षेत्र के रेपुरा गांव निवासी बलिराम सिंह का 25 वर्षीय बेटा श्री राम सिंह है। वह बालू घाट पर ट्रक लोड करने का काम करता था। इधर, घटना की जानकारी देते हुए मृतक शख्स के पिता बलिराम सिंह ने बताया कि रविवार की रात खाना खाने के बाद वो तीर्थकॉल गांव स्थित बालू घाट उ-15 पर काम करने गया था। काफी लेट होने के बाद उससे फोन पर बात भी हुई थी।

उसने कहा था कि हम जल्दी घर जा आयेंगे। इसी बीच उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई। बकरी चराने गए लोगों ने उसे देखा और सूचना दी। सूचना पाकर मौके पर भीड़ लग गई, उसके बाद परिजनों और पुलिस को जानकारी दी गई। बदमाशों ने उसे काफी करीब से गोली मारी है। पिता ने बताया कि गांव में एक बुलेट बाइक की चोरी हुई थी। उसी में श्रीराम पर बाइक चोरी का झूठा आरोप लगाया जा रहा था। हत्या किसने और क्यों की है ये, पुलिस बताएगी। परिवार टूटकर बिखर गया है।अरढ परिचय कुमार ने बताया कि पिछले साल 6 नवंबर को पटना के रानी तालाब थाना क्षेत्र के थाना गेट पर हथियारबंद अपराधियों ने बालू कारोबारी देवराज राय को गोलियों से छलनी कर हत्या कर दी थी। इसके बाद पुलिस ने रानी तालाब थाना में प्राथमिकी कराई गई थी, जिसमें मृतक श्री राम सिंह नामजद आरोपी था।हत्या के बाद से मृतक शख्स फरार चल रहा था। पुलिस ने आगे की कार्रवाई करते हुए घर की कुर्की की थी, लेकिन उसके बाद भी मृतक शख्स पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ा।

बाल हृदय योजना अंतर्गत जिला भोजपुर से हृदय रोग से ग्रसित पीड़ितों को पटना किया गया रवाना

प्रात किरण संवाददाता

आरा ।जिले में बाल हृदय योजना अंतर्गत जिला स्वास्थ्य समिति, भोजपुर से हृदय रोग से ग्रसित पीड़ितों जगदीशपुर के अतहर कुरैशी (6) साल), बीटू कुमार (6 साल), एवं मोहम्मद आरिश अंसारी (7) महीना) को उनके अभिभावक के साथ एम्बुलेंस से पटना रवाना किया गया।बाल हृदय योजना के तहत जन्मजात हृदय रोग वाले बच्चों का बिहार एवं बिहार के बाहर बिल्कुल मुफ्त इलाज कराया जाता है। इस योजना अंतर्गत अबतक जिले के 120 बच्चों की पहचान कर ली गई है। पटना के इंदिरा गांधी हृदय रोग संस्थान में जॉचोपरांत उन्हे अलग अलग बैच में इलाज हेतु श्री सत्य साई हृदय रोग संस्थान अहमदाबाद स्थित अस्पताल भेजा जा रहा है। इसमे से 43 बच्चे सफल इलाज प्राप्त कर वापस आ गए है तथा 39 बच्चों को दवाई से ठीक किया जा रहा है। बाल हृदय योजना के संचालन हेतु राज्य सरकार के संस्थान आईजीआईसी एवं आईजीआईएमएस को अस्पताल के रूप में चिन्हित किया गया है। उपरोक्त के अतिरिक्त राज्य के बाहर बाल हृदय रोगियों के लिए निशुल्क चिकित्सा (सर्जरी सहित) सुविधा श्री सत्य सोई हार्ट हॉस्पिटल अहमदाबाद द्वारा किया जा रहा है। बच्चों की अन्य स्वास्थ्य अवस्थाओ में भी कार्यक्रम के निदेर्शानुसार जिला स्वास्थ्य समिति, भोजपुर अथवा अपने नजदीकी पीएचसी या सीएचसी पर चलंत चिकित्सा दल से स्वास्थ्य लाभ निशुल्क ले सकते है।

बच्चों में होने वाले जन्मजात रोगों में हृदय में छेद होना एक गंभीर समस्या है। एक अध्ययन के अनुसार जन्म लेने वाले 1000 बच्चों में से 9 बच्चे जन्मजात हृदय रोग से ग्रसित होते हैं, जिनमें लगभग 25: नवजात को प्रथम वर्ष शल्य क्रिया की जरूरत होती है। समुचित इलाज के संबंध में दवा एवं इससे संबंधित अन्य व्यय, बच्चे एवं उनके अभिभावकों के आवासन एवं आवागमन पर होने वाले व्यय का वहन सरकार स्वयं करती है।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना, विकार युन बच्चों का समुचित इलाज एवं मानसिक विकास पैदा करना है। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अन्तर्गत जिले के सभी प्रखण्डों में चलन्त चिकित्सा दल कार्यरत है। चलन्त चिकित्सा दलों को बच्चों के स्वास्थ्य जाच हेतु आगनवाड़ी केन्द्रों एवं सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में स्क्रीनिंग (निशुल्क जांच) और बीमारी की पहचान के बाद उनको रेफर करना होता है।कार्यक्रम अंतर्गत 0-18 वर्ष के बच्चों के स्वास्थ्य जांच हेतु जिले के 15 चलंत चिकित्सा दल जिसमे 02 आयुष चिकित्सक, 01 एएनएम एवं एक फार्मासिस्ट होते हैं।

शराब कारोबारियों को छोड़नेवाले पुलिस कर्मियों को एसपी ने किया निलंबित

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । भोजपुर के धोबहां थाना क्षेत्र से शराब बरामदगी के मामले में आखिरकार थानाध्यक्ष संजीव कुमार राम पर निलंबन की गाज गिर गई। पुलिस अधीक्षक राज ने अवैध शराब संबंधित मामले में लापरवाही के आरोप में थानाध्यक्ष समेत तीन पुलिसकर्मी को निलंबित कर दिया है। इस कार्रवाई के बाद पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया है।

निलंबन पुलिस कर्मियों में धोबहां थानाध्यक्ष संजीव कुमार राम, प्रशिक्षु दारोगा चंद्र प्रकाश पंडित एवं गृह रक्षक घनश्याम कुमार शामिल है। वहीं, गृह रक्षक पर अनुबंध रद्द करने की कार्रवाई की जा रही है। इसकी जानकारी भोजपुर पुलिस अधीक्षक राज ने दी है।

बताया जाता है कि धोबहां क्षेत्र अंतर्गत शराब बरामद किया गया था। साथ ही एक धंधेबाज को भी पकड़ा गया, लेकिन पुलिसकर्मियों ने उसे छोड़ दिया था। उसी के आलोक में पुलिस अधीक्षक राज के पास लिखित शिकायत दर्ज कराई गई थी। इसके बाद एसपी ने एक टीम का गठन किया।

गठित टीम ने जांच के बाद अपना मंतव्य पुलिस अधीक्षक राज को सौंपा। जांच में अवैध शराब प्रकरण मामले

संक्षिप्त खबरें

सांसद ने बाबा हरिहरनाथ मंदिर के बगल में आयोजित रामायण मंचन का किया शुभारंभ

प्रात किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।सोनपुर बाबा हरिहरनाथ मंदिर के बगल मे हो रहे रामायण मंचन का आखरी दिन का समापन कार्यक्रम का सारण सांसद राजीव प्रताप रूडी और विधायक मंटू सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया इस अवसर पर उनको मंदिर कमिटी द्वारा अंग वस्त्र और मंदिर का प्रतीक चिन्ह देकर उनका स्वागत किया ।

इस अवसर पर एडिसनल एसपी राजकिशोर जी डीएसपी नवल किशोर प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह मंदिर सचिव विजयलाला ठउछ रविप्रकाश मंदिर उपाध्यक्ष विनोद सम्राट कोषाध्यक्ष निर्भय सिंह कार्यपालक रंजीत कुमार मिथलेश सिंह सोनपुर थानाध्यक्ष राजनदन हरिहरनाथ प्रभारी स्वर्णा सुप्रिया रामानंद सिंह मोनू सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित थे इस अवसर पर मंदिर पुजारी सुशील चंद्र शास्त्री पवन बाबा सदानंद बाबा बमबम बाबा सहित अनेक अधिकारी उपस्थित थे ।

कार्यक्रम का आयोजन एनडीसी द्वारा किया गया है इस अवसर पर सांसद रूडी ने कहा की मंदिर मे आने के बाद बहुत अच्छा लगता है रामायण मंचन मे काफी लोग जुट रहे है और लोग झूम रहे है।

मनचितवा पुल के समीप खाई में गिरी कार,युवती सहित दो की मौत

दरियापुर।स्थानीय थाना क्षेत्र के मनचितवा पुल के पास अनियंत्रित कार खाई में गिर जाने से एक युवती सहित दो लोगों की मौत हो गई।वहीं तीन लोग घायल हो गए।मृतकों में समस्तीपुर जिले के कपूर्री ग्राम थाना क्षेत्र के रूपनारायण गांव के रामबाबू राम का 21 वर्षीय पुत्र संजीव कुमार राम व महाराष्ट्र के पनवेल थाना क्षेत्र के असली खुर्द के अकील अहमद की 23 वर्षीया पुत्री फिजा बानो शामिल है।घायलों में समस्तीपुर बेला के विनोद कुमार राम का 20 वर्षीय पुत्र अमरजीत कुमार,इसी गांव के साधु राम का 25 वर्षीय पुत्र चिटू कुमार व 29 वर्षीय मिथुन कुमार शामिल है।घटना सोमवार की अहले सुबह लगभग चार बजे की बताई जाती है।पुलिस को किसी राहगीर ने घटना की सूचना दी।इसके बाद इंस्पेक्टर सह थानाक्ष्यक्ष कामेश्वर प्रसाद पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुंच कर स्थानीय लोगों की मदद से गढ्ढे में फंसे सभी लोगों को निकालने का काम शुरू किया।फिर सभी को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया।लेकिन इस बीच दो लोगों की मौत हो चुकी थी।अन्य तीन घायलों का इलाज अस्पताल में कराया गया। पुलिस ने मृतकों को पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेजा।बताया जाता है कि सभी आपस में एक मित्र की तरह थे।सभी रविवार को दिन में कार से सोनपुर मेला पहुंचे। जहां देर रात तक मेला घूमने के बाद सुबह में सभी कार से समस्तीपुर लौट रहे थे।मनचितवा के पास तीखा मोड़ है।रात्रि में कुहासा भी था।रास्ते से अनजान होने के कारण उनकी कार मानचितवा के पास खाई में गिर गई।विदित हो की शीतलपुर परसा पथ पर मनचितवा के पास विगत दो दशकों में दो दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।साथ ही दर्जनों लोग घायल भी हो चुके हैं।पिछले साल इसी महीने में बस्ती जलाल के प्रमोद सिंह की पत्नी व बेटे की मौत हो गई थी।मां बेटा कार से ही मकेर जा रहे थे।तभी इसी हादसे की तरह उनकी भी कार पुल की रेलिंग से टकरा कर दुर्घटना ग्रस्त हो गई और मां बेटे की मौके पर ही मौत हो गई।

बीएसएफ का महिला दल राफ्टिंग करता हुआ महुली गंगा घाट पहुंचा

प्रातः किरण संवाददाता

आराः बड़हरा प्रखंड में अपने प्रेरणादायक कार्यों और अभूतपूर्व समर्पण के साथ के साथ टीम पहुंची महुली गंगा घाट* बीएसएफ का महिला दल सोमवार को राफ्टिंग करता हुआ महुली गंगा घाट पहुंचा। महुली गंगा घाट पर जिला गंगा समिति भोजपुर के जिला परियोजना पदाधिकारी अमित कुमार सिंह के नेतृत्व में जिला गंगा समिति के युवा टीम ने बीएसएफ ऑल- वूमेन राफ्टिंग टीम की भव्य स्वागत किया । अमित कुमार सिंह ने बताया कि टिहरी गढ़वाल के देवप्रयाग से पश्चिम बंगाल के गंगा सागर के लिए रवाना हुई। यह दल 53 दिन में ढाई हजार किलोमीटर की दूरी तय करेगा। इस मौके पर उन्होंने कहा कि गंगा हमारी सांस्कृतिक विरासत है और देश धरोहर का प्रतिनिधित्व भी करती है। यह पहली बार है कि जब एक महिला टीम गंगा नदी में राफ्टिंग कर स्वच्छ गंगा और महिला सशक्तीकरण का संदेश दे रहीं हैं। जिला गंगा समिति के टिम के सदस्यों ने सभी महिला जवानों को इस साहसिक यात्रा के सफल होने की कामना की। इस दौरान महिला दल ने सभी सदस्यों को प्रतीक चिह्न भेंट किया गया ।

अमित कुमार सिंह ने बताया कि बीएसएफ की महिला टीम के सदस्यों में भोजपुर जिले की ब्यूटी कुमारी भी इस टीम का हिस्सा है जो जिले के लिए गौरव की बात है ब्यूटी कुमारी बड़हरा प्रखंड के करजा भूसौला गांव की रहने वाली है जो बीएसएफ के एक जवान है और इस यात्रा की हिस्सा है बीएसएफ की महिला राफ्टिंग टीम की और से असिस्टेंट कमांडेंट विकास कुमार ने कहा कि हमें सौभाग्य मिला है कि हम अपने महिला टीम के साथियों के द्वारा पूरे यात्रा में लोगों को गंगा को निर्मल और स्वच्छ बनाने के लिए जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं इस टीम की नेतृत्व प्रिया मेनन और प्रियंका कुमारी के द्वारा किया जा रहा है ।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मां गंगा क्लब कुदरिया के सचिव मनीष कुमार सिंह कोषाध्यक्ष राहुल सिंह नागा बाबा युवा क्लब के अध्यक्ष सनी सिंह, और नूरपुर युवा क्लब के सदस्य हरिओम सिंह अध्यक्ष टिंकू कुमार पीयूष कुमार अमन कुमार , पवन कुमार सोनू गोद जीतू मल्लाह,आदित्य सिंह, सुंदरम कुमार,मुरारी तिवारी मनीष तिवारी इत्यादि युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

भोजपुर जिला पदाधिकारी से अभिषेक मेहता ने किया मुलाकात

भोजपुर के विकास को लेकर दिया ज्ञापन

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । भोजपुर जिला पदाधिकारी तनय सुल्तानिया उनके कार्यालय में शिष्टाचार मुलाकात किया। मुलाकात के दौरान मुख्य रूप निम्नलिखित योजना पर चर्चा हुई। भोजपुर जिला अंतर्गत आरा नगर मुख्यालय में केंद्रीय पुस्तकालय का निर्माण जल्द से जल्द शुरूआत करने कि मांग रखा जो पहले स्वीकृत है।इआरा नगर मुख्यालय अन्तर्गत गोपाली चौक पर घंटा घर निर्माण कार्य शुरूआत कराये। आरा नगर मुख्यालय अन्तर्गत सम्राट अशोक कन्वेंशन हॉल का निर्माण कार्य जल्द जल्द प्रशासनिक स्तर निर्माण कार्य शुरूआत करने कि मांग रखा। इये सभी मांग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी द्वारा चलाए जा रहे महत्वपूर्ण योजना में शामिल है।

जो नौजवान छात्रों सहित भोजपुर के सभी समाज के कल्याण के लिए और शाहाबाद क्षेत्र के मुख्यालय आरा विकसित के तरफ एक कदम आगे बढ़ेगा। जो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सपना है कि बिहार को अब विकसित कर देना है। जिला पदाधिकारी ने आश्वासन दिया कि जल्द से जल्द

लॉरेंस गैंग के नाम पर पप्पू यादव को धमकाने वाला आरा से गिरफ्तार

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । पूर्णिया सांसद पप्पू यादव को 24 घंटे में जान से मारने की धमकी देने वाले युवक को पुलिस ने आरा से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी शाहपुर थाना क्षेत्र के डुमरिया गांव का रहने वाला रामबाबू यादव है। पूर्णिया पुलिस आरोपी रामबाबू अपने साथ ले गई है। आरोपी ने धमकी देते वक्त खुद को लॉरेंस बिश्नोई की बिहार टीम का मेंबर बताया था। पप्पू यादव से लॉरेंस से माफी मांगने की बात कही थी। जिसका वीडियो भी वायरल हुआ था। हालांकि उसने पप्पू यादव को धमकी क्यों दी इसका खुलासा अभी तक नहीं हुआ है। आपको बता दें बीते 2 महीनों से लगातार पप्पू यादव को धमकियां मिल रही हैं।बीते शुक्रवार को सांसद पप्पू यादव को वाट्सएप मैसेज के जरिए 24 घंटे के भीतर उनकी हत्या किए जाने की धमकी दी गई है। सांसद के प्रवक्ता राजेश यादव ने बताया कि धमकी पाकिस्तान के नंबर से रात में दी गई। जिसमें लिखा खा कि आखिरी 24 घंटे में तेरी हत्या कर देंगे। हमारे साथी की तैयारी मुकम्मल है। हमारे साथी तेरे बहुत पास पहुंच गए हैं। तुम्हारे गार्ड भी नहीं बचा सकेंगे। तुझे हैप्पी बर्थ डे लॉरेंस भाई और उनकी टीम की तरफ से। पूर्णिया सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव इन्जॉय योर लास्ट डे।पूर्णिया सांसद पप्पू यादव को 24 घंटे में जान से मारने की धमकी देने वाले युवक को पुलिस ने आरा से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी शाहपुर थाना क्षेत्र के डुमरिया गांव का रहने वाला रामबाबू यादव है। पूर्णिया पुलिस आरोपी रामबाबू अपने साथ ले गई है। आरोपी ने धमकी देते वक्त खुद को लॉरेंस बिश्नोई की बिहार टीम का मेंबर बताया था। पप्पू यादव से लॉरेंस से माफी मांगने की बात कही थी। जिसका वीडियो भी वायरल हुआ था। हालांकि उसने पप्पू यादव को धमकी क्यों दी इसका खुलासा अभी तक नही हो पाया है।

प्रदूषण नियंत्रण दिवस के अवसर पर भोजपुर सिविल सर्जन के नेतृत्व में लिया गया संकल्प

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । आरा सदर अस्पताल में प्रदूषण नियंत्रण दिवस दिवस के अवसर पर,भोजपुर सिविल सर्जन कार्यालय के प्रांगण में पर्यावरण रक्षा हेतु संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में जिला अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ के एन सिन्हा ने कहा कि आज पर्यावरण खराब होने के कारण विश्व में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है। पर्यावरण को खराब करने में इंडस्ट्रियल धुआं, वाहन के धुआं, फसल जलाना ,कचरा ,पेड़ की कमी आदि कारण है। पर्यावरण बिगड़ने और प्रदूषण बढ़ने से पहले आंखों में कई तरह की बीमारी होती है, सांस की समस्या होती है और बाद में सांस की बीमारी, हृदय की बीमारी होती है तथा कैंसर का भी खतरा बाद में होता है ।इसलिए सभी से अनुरोध है कि पर्यावरण की रक्षा करें, अधिक से अधिक पेड़ लगाए, पेड़ों की रक्षा करें ।

सफाई रखें और सार्वजनिक वाहन का ही ज्यादा प्रयोग करें।कई देशों में तो अधिकांशत लोग साइकिल ही चलाते हैं। इसके बाद भोजपुर सिविल सर्जन डा. शिवेंद्र कुमार सिन्हा ने सभी को पर्यावरण बचाने हेतु संकल्प पत्र पढ़कर संकल्प लेने हेतु कहे। कार्यक्रम में ल्ले स्कूल की तमाम छात्राओ के साथ सिविल सर्जन कार्यालय के कर्मी उपस्थित थे। विशेष रूप से उपस्थित थे डीएएम अश्विनी कुमार , आईसीडीएस के डॉ राजीव कुमार ,अविनाश कुमार, कुमारी प्रियंका ,सुरेंद्र सिंह ,सुधीर सिंह, नागेंद्र चौधरी और एनसीडी के स्वास्थ्य कर्मी आदि।

भाई के बाद बहन बनी रसायनशास्त्र में असिस्टेंट प्रोफेसर

आरा। शहर के चंदवा हाउसिंग कॉलोनी निवासी नन्द जी राम और शकुंतला देवी की बेटी सुषमा कुमारी ने बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग की ओर से ली जा रही असिस्टेंट प्रोफेसर की बहाली में सफलता प्राप्त कर अपने माता पिता और गांव का नाम रोशन किया है। सुषमा रसायन विज्ञान में प्रोफेसर बनी है। सुषमा ने बताया कि उसका सपना शुरू से ही प्रोफेसर बनने का था।इसके लिए उसने काफी मेहनत की।

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के पीजी विभाग से रसायन विज्ञान की पढ़ाई करने के बाद पीएचडी की।वर्ष 2020 में आई बहाली में शामिल हुई।जिसके बाद सफलता भी मिली। बता दें कि सुषमा के बड़े भाई डॉ राकेश कुमार रंजन भी भौतिकी में असिस्टेंट प्रोफेसर में चयनित हुए है। भाई के प्रोफेसर बनने के बाद बहन भी सफलता का परचम लहराने में कामयाब रही।

सुषमा ने बताया कि समाज के वैसे विद्यार्थी जो अब तक कुछ नहीं कर पा रहे है उन्हें शिक्षित करने का प्रयास किया जाएगा। रसायन विज्ञान में शोध के स्तर में भी सुधार की कोशिश रहेगी। बताया कि मेरे माता पिता का सपना था कि मैं कुछ बड़ा करूं। मैने उनके परिश्रम का मान रखा और माता-पिता के सपनों को साकार कर दिया। मालूम हो कि सुषमा की शादी सासाराम में पदस्थापित डी एसपी दिलीप कुमार से हुई है। अच्छे घर और पति की अच्छी नौकरी रहने के बाबजूद सुषमा ने दृढ़ संकल्प के साथ अपने सपनों को पूरा किया। सुषमा की माने तो नून रोटी खाकर भी बेटी को पढ़ाना चाहिए और यह कभी बेकार नहीं जाता।

योग को अपनाकर रहें निरोग:डॉ.जुगल किशोर

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। शहर के शुभ नारायण नगर मझौंवा स्थित शांति-स्मृति संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर चल रहे योग-व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का समापन सोमवार को हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि भारत स्वाभिमान के पूर्व जिला प्रभारी सह होम्योपैथी संगठन के अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर, विद्यालय के निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र एवं प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस मौके पर डॉ. जुगल किशोर ने कहा कि आज के दौर में योग बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक के लिए आवश्यक है। योग के माध्यम से ही हम निरोग रह सकते हैं। कई गंभीर बीमारियों का इलाज भी योग है। इसलिए आप प्रतिदिन कुछ समय निकालकर योग करें और स्वस्थ समाज का निर्माण करें। प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि हाल के बर्षो में पश्चिमी देशों ने भी योग के महत्व को जाना है। प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हमारे देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भव्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पुराने जमाने में ऋषि-महर्षि योग के बल पर ही सैकड़ो वर्ष तक जीवित रहते थे।विद्यालय के निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र ने बताया कि विद्यालय में रजत जयंती के अवसर पर चल रहे 45 दिवसीय विभिन्न विधाओं के प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत आज योग व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ। इस दौरान योग-व्यायाम प्रशिक्षण में भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। योग-व्यायाम में जो भी बच्चे प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए हैं। उन्हें रजत जयंती वर्ष के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। विद्यालय के योग शिक्षक शशि भूषण सिंह ने प्रशिक्षण में चालन क्रिया के तहत (ग्रीवा चालन, घुटना संचालन, स्कंध चालन), योगासन के तहत खडे होकर किये जाने वाले आसन के तहत (ताडासन, वृक्षासन, अर्द्ध चक्रासन), बैठकर किए जाने वाले आसन के तहत (भद्रासन, वज्रासन, वक्रासन), उदर के बल लेटकर किये जाने वाले आसन के तहत (मकरासन, भुजंगासन, शलभासन), पीठ के बल लेट कर किए जाने वाले आसन के तहत (सेतूबंधासन, पवनमुक्तासन, श्वासन) का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान बच्चो को कपालभाति (प्राणायाम), अनुलोम-विलोम प्राणायाम (नाडीशोधन), शीतली प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम, ध्यान एवं संकल्प का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावे यौगिक जॉगिंग का 12 स्टेप का अभ्यास कराया गया। वही सूर्य नमस्कार आसन का संपूर्ण अभ्यास कराया गया तथा इसकी निपुणता प्रदर्शन में देखा गया।

खुशहालपुर मे धान के बोझा में लगी आग

दो बिगहा के 60000 मुल्य के धान की फसल जलकर खाक

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। खुशहालपुर मे कल रात को धान के बोझा मे भयानक आग लग गयी.ग्रामीणों के लाख प्रयास के बाद भी बिगन राम के दो बिगहा के सभी धान के बोझे जलकर स्वाहा हो गये.घंटो बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी पहुंची तो आग पर काबु पाया गया.

आग लगी की घटना की सूचना मिलते ही भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य व आरा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी क्यामुद्दीन अंसारी खुशहालपुर पहुंच कर आग लगी का जायजा लिया. इस मौके पर आग लगी के पीड़ित बटाईदार किसान बिगन राम व स्थानीय लोगों ने बतलाया कि असमाजिक तत्वों द्वारा आग लगाई गयी है जिससे बिगन राम के दो बिगहे के सभी धान के बोझे जलकर खाक मे मिध गये.बिगन राम ने 8000 प्रति बिगहा के दर से दो बिगहा नगदी खेत लेकर धान की फसल लगायी थी.धान उगाने मे हजारों खर्च करने के बाद उनके सालो की कमाई जलकर नष्ट हो गयी.इस आगलगी कांड से लगभग 60000 मुल्य की धान नष्ट हो गयी। भाकपा माले नेता क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि कल आग लगी थी पर आज दोपहर तक अंचल कार्यालय आरा से कोई भी कर्मचारी, अधिकारी घटना स्थल पर नहीं पहुंचे जिससे स्थानीय लोगों मे आरा उ.ड.के प्रति काफी गुस्सा था.भाकपा माले नेता नेता जिला प्रशासन से मांग की है कि बिगर राम के जले धान के बोझे का जांच करते हुए उचित मुआवजा शीघ्र दे.

भाकपा माले नेता क्यामुद्दीन अंसारी के साथ आरा जिला पार्षद प्रतिनिधि हरिफन राम,जिला पार्षद भीम यादव,भाकपा माले नेता रामाकान्त पासवान, इनौस नेता हिम्मत यादव भी थे.

भोजपुर जिला अधिकारी ने शाहपुर प्रखंड के अंतर्गत बिलौटी पंचायत का किया भ्रमण

प्रातः किरण संवाददाता

आरा ।जिला पदाधिकारी, भोजपुर द्वारा शाहपुर प्रखंड के अंतर्गत बिलौटी पंचायत का भ्रमण किया गया। इस दौरान उन्होंने बिलौटी में स्थित तालाब का निरीक्षण किया और इसके सौंदर्यीकरण के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने तालाब के चारों ओर हरियाली बढ़ाने के उद्देश्य से पेड़-पौधे लगाने, खेल और मनोरंजन को बढ़ावा देने के लिए तालाब के समीप एक खेल मैदान विकसित करने तथा जीविका के माध्यम से तालाब में बतख शेड का निर्माण कराने का निर्देश दिया। इसके अलावा, तालाब के पास स्थित एक जर्जर भवन को तोड़कर उसकी जगह जीविका पुस्तकालय बनाने का आदेश दिया गया।निरीक्षण के दौरान उन्होंने मध्य विद्यालय, बिलौटी का भी जायजा लिया और वहां संचालित आंगनबाड़ी केंद्र को बेहतर बनाने के लिए माइनिंग फंड का उपयोग करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इससे बच्चों और समुदाय के विकास में सहायता मिलेगी। भ्रमण के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी, जगदीशपुर और संबंधित विभागों के अधिकारी भी उपस्थित थे।

आयुक्त नीलाम पत्र वाद की प्रगति पर किया समीक्षा बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । आरा जिला पदाधिकारी सभागार में आयुक्त, पटना प्रमंडल, पटना की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नीलाम पत्र वाद की प्रगति पर समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक के दौरान आयुक्त,पटना प्रमंडल,पटना ने जिलांतर्गत नीलाम पत्र वाद की संख्या को अंतिम रूप से तय करने के निर्देश दिए और इसे प्राथमिकता के साथ निपटाने पर जोर दिया।

समीक्षा के क्रम में पंजी 9 और 10 का नियमित मिलान सुनिश्चित करने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने का आदेश दिया गया। आयुक्त ने यह भी निर्देश दिया कि जिलांतर्गत सभी नीलाम पत्र पदाधिकारियों के बीच वादों का समानुपातिक बंटवारा किया जाए, जिससे कार्यभार संतुलित रहे और लंबित वादों का त्वरित निष्पादन हो सके। इसके अलावा, लंबित वादों के निस्तारण में तेजी लाने के लिए दफा 7 के अंतर्गत नोटिस, डिस्ट्रेस वारंट और बॉडी वारंट जारी करने की प्रक्रिया को सक्रिय रूप से लागू करने के निर्देश दिए गए।

आयुक्त ने सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल में सात अतिविशिष्ट विभाग का किया शुभारंभ

प्रातः किरण संवाददाता

गया।मगध प्रमंडल आयुक्त आय प्रेम सिंह मीणा द्वारा प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना अंतर्गत सुपरस्पेशलिटी अस्पताल में सात अतिविशिष्ट विभाग न्यूरोसर्जरी, न्यूरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, नियोनेटोलॉजी, यूरोलॉजी, सी०टी०वी०एस०, कार्डियोलॉजी में से दो विभाग यूरोलॉजी एवं न्यूरोसर्जरी के इन्डोर एवं ओप्रेशन थियेटर का शुभारम्भ किया गया है।जिससे आमजन जो इस कार्य के लिए पटना जाते थे पटना नहीं जाना पडेगा।

सेन्ट्रल सेट्रीलाइजेसजन सर्विस डिपार्टमेंट एवं अस्पताल अति महत्वपूर्ण अंग है।जिससे किसी भी शल्य कार्य में उपयोग होने वाले इंस्ट्रुमेंट को स्टेरिलाइज किया जायेगा। यह एडवांस टेक्नोलॉजी पर आधारित है। इस चिकित्सा संस्थान में अव्यवस्थित सभी शल्य कक्ष के इंस्ट्रुमेंट को सेट्रीलाइज किया जायेगा। इस सुपरस्पेशलिटी अस्पताल में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी आधारित आठ शल्य कक्ष का निर्माण किया गया है।जिसमें कार्यरत चिकित्सकों के द्वारा भर्ती मरीज जिन्हें शल्य क्रिया की जरूरत होगी उन्हें सुविधा दी जायेगी। अमृत फमार्सी एम ओ एच एफ डब्ल्यू भारत सरकार की अति महत्वपूर्ण इंनोएभीट कार्य है। इसके तहत 5200 सर्जिकल एवं दवाएं 60% छुट पर दिया जायेगा।अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में आज दीदी की रसोई और सफाई व्यवस्था का शुभारंभ किया गया है। इससे 251 लोगों को जीविकोपार्जन का साधन मिला है।जिसमें में 210 को जीविका दीदियों को सफाई एवं 30 को रसोई के कार्य से जोड़ा गया है। इस अवसर पर अस्पताल के सुपरिटेंडेंट डॉ. के.के. सिन्हा ने जीविका दीदियों द्वारा तैयार भोजन की सराहना की है।

जिला परियोजना प्रबंधक, आचार्य मम्मट ने भोजन और सफाई व्यवस्था में लगी जीविका दीदियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा, ह्लआप पूरी निष्ठा और लगन से अपनी जिम्मेदारी निभाएं ह्व इस अवसर पर जिला एवं प्रखंड जीविका टीम भी उपस्थित थी। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति जीविका द्वारा संचालित दीदी की रसोई एक महिला सामुदायिक संगठन-आधारित पहल है। इसका उद्देश्य अस्पतालों और अन्य संस्थानों में स्वच्छ और स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं को रोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है।गया जिले में पहले से ही दीदी की रसोई के माध्यम से पाँच अस्पतालों और सभी 14 डॉ. भीमराव अंबेडकर आवासीय विद्यालयों में बच्चों को स्वच्छ और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। मगध मेडिकल कॉलेज में दीदी की रसोई के आरंभ के साथ, अस्पतालों में इसकी संख्या अब छह हो गई है। पहले से यह सुविधा सदर अस्पताल मानपुर अनुमंडल अस्पताल शेरघाटी अनुमंडल अस्पताल टेकारी प्रभावती अस्पताल गया टाउन और गौतम बुद्ध कुष्ठ आश्रम में उपलब्ध है।

यह पहल न केवल बेहतर स्वच्छता और गुणवत्तापूर्ण भोजन सुनिश्चित करती है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके आर्थिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कुर्था नगर परिषद कार्यालय में की गई सामान्य बोर्ड की बैठक

■ पूर्व की योजनाओं को रद्द करते हुए नए एजेंडों पर वार्ड पार्षदों ने लगाई मुहर

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) लगातार डेट पर डेट के बाद सोमवार को कुर्था नगर पंचायत कार्यालय में हंगामा के साथ सामान्य बोर्ड की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता मुख्य पार्षद नागेंद्र कुमार के द्वारा किया गया उक्त बातों की जानकारी देते हुए उपमुख्य पार्षद रविंद्र कुमार प्रसाद ने बताया कि लगातार कार्यपालक पदाधिकारी व मुख्य पार्षद के द्वारा बोर्ड के बैठक को लेकर डेट पर डेट दी जा रही थी इसके बाद सोमवार को विभिन्न वार्ड पार्षदों ने बैठक करने को लेकर कार्यपालक पदाधिकारी को कहा इसके बाद नगर पंचायत के मुख्य पार्षद व कार्यपालक पदाधिकारी बैठक छोड़कर सड़क पर जाने लगे इसके बाद हम तमाम वार्ड पार्षदों ने कार्यपालक पदाधिकारी का घेराव किया इसके बाद कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत कार्यालय में पहुंचे और बोर्ड का बैठक आयोजित की गई उपमुख्य पार्षद रविंद्र कुमार प्रसाद ने बताया कि कुर्था नगर पंचायत कार्यालय में बोर्ड के सामान्य बैठक आयोजित किया गया उक्त बैठक में सभी वार्ड पार्षदों ने पूर्व के एजेंडों को रद्द करते हुए नया एजेंडों पर मुहर लगाई साथ ही उपमुख्य पार्षद रविंद्र कुमार ने बताया कि नगर पंचायत के विभिन्न वार्डों में कई विकासात्मक कार्य लंबित हैं ।

कहीं नाली गली की समस्या है तो कहीं पीसीसी सड़क की समस्या है लेकिन इन सारे मामलों को नजर अंदाज कर कार्यपालक पदाधिकारी व मुख्य पार्षद मनमाने तरीके से विभिन्न योजनाओं में राशि खर्च करना चाहते हैं जिसके वजह से कई विकासात्मक कार्य बाधित हो जाएंगे जिसका हमलोगों ने पूर्व से ही विरोध किया जिसके वजह से लगातार सामान्य बोर्ड की बैठक करने से मुख्य पार्षद व कार्यपालक पदाधिकारी परहेज करते रहे उन्होंने कहा कि मुख्य पार्षद व कार्यपालक पदाधिकारी के मिली भगत से यह सारे मनमाने कार्य करने की योजना बनाई जा रही है लेकिन उनके किसी भी मनमाने तरीके वाली योजनाओं को हमलोग स्वीकार नहीं करेंगे इसके लिए हमें चाहे आंदोलन ही क्यों न करना पड़े उन्होंने कहा कि जब तक सभी वार्ड पार्षदों के सहमति के बिना कोई भी योजना पारित होती है तो हम लोग इसका पुरजोर तरीके से विरोध करेंगे और सड़क पर आंदोलन करने से भी परहेज नहीं करेंगे इस मौके पर वार्ड पार्षद शैलेश कुमार, संजू कुमारी, सीमा देवी, नगीना राम, राजेश यादव, रजनी कुमारी, नीतीश कुमार, मोहम्मद तनवीर आलम, सोहनी देवी, सबला देवी समेत कई वार्ड पार्षद शामिल थे।

251 बहनों की सामूहिक शादी को लेकर केतार में जागरूकता अभियान

प्रातः किरण संवाददाता

गया।कन्या विवाह एवं विकास सोसाइटी के सचिव विकास कुमार माली ने आगामी 1 मार्च 2025 को 251 बहनों की सामूहिक शादी को सफल बनाने के लिए केतार प्रखंड के परसोडीह पंचायत भवन के प्रांगण में जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम की शुरूआत संस्था के सचिव विकास कुमार माली ने अपने कार्यकर्ता के साथ परसोडीह के महामाया मंदिर में पूजा-अर्चना से की है।

इसके बाद स्थानीय जनप्रतिनिधियों और सैकड़ों ग्रामीणों ने उनका भव्य स्वागत किया गया है। आयोजित कार्यक्रम में बाल विवाह, भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों पर चर्चा की गई है।

साथ ही, सोसाइटी द्वारा गढ़वा के दानरो नदी स्थित छठ घाट पर आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह कार्यक्रम के लिए जरूरतमंद कन्याओं का जल्द से जल्द निबंधन कराने की अपील की गई है।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सोसाइटी के झारखंड प्रदेश समन्वयक अजय वर्मा, आकाश दीप भारती, महजबीन खान, पूर्व मुखिया अनिल पासवान, समाजसेवी नागेंद्र ठाकुर, दिलीप कुमार, विकास तिवारी, विभूति शरण पांडे, विवेक कुमार, अंजू कुमारी गुप्ता, रेणु देवी और रानी देवी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

कुर्था बाजार में फुटपाथ पर दुकान से लगता है प्रतिदिन जाम

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) लग्न का मौसम शुरू होते ही कुर्था बाजार में आये दिन जाम लगने के कारण जहां लोगों को पैदल चलना भी दूभर हो गया है. वहीं व्यवसायियों को व्यवसाय करने में भी काफी परेशानी उठानी पड़ रही है. कस्बाई बाजार होने के कारण भीड़- भाड़ बढ़ने के साथ ही जहां जाम रुक- रुक कर लगती रहती है, वहीं कई दुकानदारों द्वारा सड़क पर ही ठेला लगाकर दुकान खोल दिए जाने व सड़क के दोनों ओर सब्जी विक्रेताओं व ठेला वेंडरों के द्वारा सड़क को अतिक्रमण कर दुकान सजा दिए जाने के कारण जाम का सिलसिला जो सुबह से शुरू होता है. वह देर शाम तक चलते रहता है. बाजार में जाम रहने के कारण लोगों को खरीददारी करने में भी बड़ी दुर्घटना की प्रबल संभावना बनी रहती है. इसके बावजूद भी प्रशासन मुकदर्शक बना हुआ है. जैसे ही बड़े वाहन बाजार में प्रवेश करते हैं वैसे ही जाम का सिलसिला शुरू हो जाता है और रुक रुक कर लंबी जाम लगी रहती है. कभी-कभी वाहन चालक अपने में ही तू-तू, मैं-मैं कर लेते हैं. सब्जी विक्रेताओं के कारण सड़क पूरी तरह से संकरी हो जाती है जिसके कारण आये दिन जाम का सिलसिला लगा रहता है. जाम से निजात के लिए कई बार स्थानीय लोगों ने प्रशासन से गुहार लगा चुके हैं।

शिक्षा मंत्री ने किया महाबोधि मंदिर का दर्शन किया महाबोधि मंदिर समिति की प्रशंसा

गया।मंत्री शिक्षा विभाग बिहार सरकार द्वारा आज महाबोधि मंदिर का दर्शन किया गया। महाबोधि महाविहार के सीनियर मोंक डॉक्टर मनोज भंते द्वारा मंदिर गर्वगृह में पूजा अर्चना करवाया। खादा देकर उनका स्वागत किया। माननीय मंत्री ने मंदिर की साफ सफाई व्यवस्था देकर काफी खुशी प्रकट किया है उन्होंने सचिव बीटीएमसी को धन्यवाद देते हुए कहा कि काफी अच्छी व्यवस्था महाबोधि महाविहार में की गई है। हर जगह साफ सफाई का पूरा इंतेजाम है। इस अवसर सचिव बीटीएमसी डॉ महाश्वेता महारथी, सदस्य बीटीएमसी डॉक्टर अरविंद कुमार सिंह, जिला शिक्षा पदाधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

पीड़ित को मिलेगा उचित मुआवजा :विधायक

प्रातः किरण संवाददाता

गया।नगर प्रखण्ड के कण्डी मे रविवार को संजय पासवान के खलिहन मे रखे लगभग दो एकड़ के धान के फसल में आग लग जाने से फसल जलकर राख हो गया था,सोमवार को बेलागंज विधायक मनोरमा देवी स्थल पर पहुंचकर घटना की जायजा ली एवं पीड़ित परिवार को आर्थिक सहयोग कर,सम्बंधित को पीड़ितों को उचित मुआवजा दिलाने के निदेशित की है।इस मौके पर लोजपा प्रखण्ड अध्यक्ष भुनेश्वर पासवान,ओमप्रकाश कुमार सुबोध यादव इत्यादि मौजूद थे।

विश्व एड्स दिवस पर रक्तदान शिविर का सफल आयोजन

गया।विश्व एड्स दिवस के अवसर पर अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज, गया में एनसीसी राष्ट्रीय कैडेट कोर और एनएसएस राष्ट्रीय सेवा योजना के वालंटियरों द्वारा एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। यह शिविर मानव सेवा और सामाजिक जागरूकता के उद्देश्य से आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में छात्रों, शिक्षकों, और कैडेट्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक और 6/6 कंपनी, 6 बिहार बटालियन एनसीसी, गया के एएनओ डॉ धनंजय कुमार ने अपना रक्तदान कर किया गया है।

इस शिविर में डॉ निधि त्रिपाठी सहायक प्राध्यापक ए. एम. कॉलेज, गया और डॉ प्रियंका कुमारी सहायक प्राध्यापक गया कॉलेज, गया के साथ साथ, एनसीसी कैडेट्स मुन्ना कुमार, विकास कुमार, सोनू कुमार, बाबू विकास, गौरव कुमार, सरोज कुमार, शिवम कुमार, शुभम कुमार, अनुज कुमार, और रुपाली कुमारी ने रक्तदान कर इस सेवा कार्य को सफल बनाया गया है।

इस कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ राकेश राय एवं डॉ मोहन सिंह, और 6 बिहार बटालियन एनसीसी गया के बीएचएम भगत सर, सीएचएम भोला सिंह, और हवलदार राकेश कुमार भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में कुल 65 एनसीसी कैडेट्स ने भाग लिया और अपनी सहभागिता से इसे एक प्रेरणादायक आयोजन बनाया।

नव गठित कार्यकारिणी के सदस्यों का सम्मान सह प्रमाणपत्र वितरण समरोह का हुआ आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

गया।अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमिटी के निदेशानुसार तथा बिहार प्रदेश कॉंग्रेस कमिटी द्वारा अनुमोदित गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी के सदस्यों को सम्मान तथा प्रमाणपत्र वितरण समारोह का आयोजन गया जिला कॉंग्रेस कमिटी कार्यालय प्रांगण में संपन्न हुआ है।इस कार्यक्रम की शुरूआत भारतीय संविधान के प्रस्तावना को पढ़ कर सभी उपस्थित सदस्यों ने संविधान को अक्षुण्ण रखने तथा पार्टी संगठन को और सशक्त बनाने का संकल्प दोहरा कर हुआ है।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ गगन कुमार मिश्रा ने किया है।

इस कार्यक्रम को बिहार प्रदेश कॉंग्रेस कमिटी के प्रदेश प्रतिनिधि सह प्रवक्ता प्रो विजय कुमार मिट्ठू, पूर्व विधायक मोहम्मद खान अली, पूर्व जिला अध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद यादव, राम उदय प्रसाद, सादुलालाह फारुकी, वजीरगंज विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी डॉ शशि शेखर सिंह, टिकारी विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी सुमंत्र कुमार, गया नगर निगम के उप महापौर चिंता देवी, डॉ परशुराम मिश्रा, महिला कॉंग्रेस अध्यक्ष लाछो देवी, युवा कॉंग्रेस अध्यक्ष विशाल कुमार ने सभी जिला के उपाध्यक्ष, महासचिव, सचिव, एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को बारी- बारी से माला, पार्टी का प्रतीक पट्टी, तथा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया है।नवनियुक्त उपाध्यक्ष में राम प्रमोद सिंह, बाबूलाल प्रसाद सिंह, युगल किशोर सिंह, ओंकार नाथ सिंह, विद्या शर्मा,गिरेनदर कुमार, मदीना खातून, प्रदीप कुमार शर्मा, जगदीश प्रसाद यादव, दामोदर गोस्वामी, शशि कांत सिन्हा, धर्मेंद्र कुमार निराला राजीव कुमार सिंह उर्फ लबी सिंह महासचिव में दीपिका मिश्रा सय्यार, विपिन बिहारी सिन्हा,श्रीकांत शर्मा, अमरजीत कुमार, टिंकू गिरी, नवीन कुमार, शिव कुमार चौरसिया, कोषाध्यक्ष बैजू प्रसाद, उप कोषाध्यक्ष उदय शंकर पालित, महासचिव ओंकार शक्ति, सचिव अर्जुन प्रसाद, मुनि किशोर सिंह, भगवान प्रसाद, आदि को सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर उपस्थित नेताओ ने राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी राष्ट्रीय महासचिव प्रियांका गाँधी, बिहार कॉंग्रेस प्रभारी मोहन प्रकाश, बिहार प्रदेश कॉंग्रेस कमिटी के लोकप्रिय अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए,इनके दिशानिर्देश पर पार्टी का प्राचार, प्रसार करेंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के द्वारा विश्व एड्स दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

गया।राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, गया कॉलेज ,गया के द्वारा विश्व एड्स दिवस के अवसर पर प्रधानाचार्य प्रोफेसर डॉ सतीश सिंह चंद्र के दिशा निर्देश पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।इस कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक ,पेंटिंग प्रतियोगिता, क्विज कंपटीशन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।इस कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ राजेश कुमार मिश्र ने बताया कि प्रत्येक वर्ष एड्स के प्रति समाज में जागरूकता लाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा 1 दिसम्बर को एड्स दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व एड्स दिवस का विषय :ह्वटेक द राइट पाथः माय हेल्थ- माय राइट्सह्व पर आधारित था। बिहार के 38 जिलों में से 20 जिले सर्वाधिक एड्स प्रभावित है, जिसमें गया जिला भी शामिल है। एड्स एक लाइलाज बीमारी है, जो एच आई वी वायरस से फैलती है।एड्स से सुरक्षा केवल जागरूकता के आधार पर ही की जा सकती है। एड्स से बचाव के उपाय और एड्स फैलने के कारणों पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया है। एड्स रोगी के प्रति समाज में फैली हुई कुरीतियों को भी दूर करने के लिए नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया गया है। एड्स जागरूकता पर आधारित पेंटिंग प्रतियोगिता में विभिन्न विभागों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया है। कार्यक्रम का संचालन यूनिट 2 के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ रवि के द्वारा किया गया है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों में मोहम्मद इश्तियाक आलम, सौरव कुमार, आर्यन कुमार ,विनायक कुमार,कुंदन कुमार ,राहुल कुमार, हर्ष कुमार ,सत्यम मौर्य स्मृति कुमारी, आरुही कुमारी ,पल्लवी कुमारी, रेवी कुमारी, मधु कुमारी, आशुतोष कुमार ,आकाश कुमार, रोहित रंजन, पंकज कुमार आदि उपस्थित थे।

बदले हुए नंबर से चलेगी पटना-मुंबई सुविधा एक्सप्रेस तथा रक्सौल-लोकमान्य तिलक अंत्योदय एक्सप्रेस

हाजीपुर। पटना और सीएसएमटी, मुंबई के बीच परिचालित की जाने वाली गाड़ी सं. 82355/82356 पटना-सीएसएमटी सुविधा एक्सप्रेस तथा रक्सौल और लोकमान्य तिलक टर्मिनल मुंबई के मध्य परिचालित की जाने वाली गाड़ी सं. 15547/15548 रक्सौल-लोकमान्य तिलक अंत्योदय एक्सप्रेस मार्च, 2025 से बदले हुए नंबर से परिचालित की जाएगी जिनका विवरण निम्नानुसार है ।1. गाड़ी सं. 82355 पटना-सीएसएमटी सुविधा एक्सप्रेस दिनांक 02.03.2025 से बदले हुए नंबर एवं नाम 22359 पटना-सीएसएमटी सुपरफास्ट एक्सप्रेस द्वारा परिचालित की जाएगी । 2.गाड़ी सं. 82356 सीएसएमटी-पटना सुविधा एक्सप्रेस दिनांक 04.03.2025 से बदले हुए नंबर एवं नाम 22360 सीएसएमटी-पटना सुपरफास्ट एक्सप्रेस द्वारा परिचालित की जाएगी । 3.गाड़ी सं. 15547 रक्सौल-लोकमान्य तिलक अंत्योदय एक्सप्रेस दिनांक 03.03.2025 से बदले हुए नंबर 22553 रक्सौल-लोकमान्य तिलक अंत्योदय एक्सप्रेस द्वारा परिचालित की जाएगी । 4.गाड़ी सं. 15548 लोकमान्य तिलक-रक्सौल अंत्योदय एक्सप्रेस दिनांक 06.03.2025 से बदले हुए नंबर 22554 लोकमान्य तिलक-रक्सौल अंत्योदय एक्सप्रेस परिचालित होगी।

तर्कपूर्ण विचारों की प्रस्तुति ही निबंध लेखन की आत्मा होती है: डॉ. उमाशंकर

प्रातः किरण संवाददाता

गया। अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज गया के हिंदी विभाग एवं राजनीति शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया हू। ह्यनिबंध लेखन प्रतियोगिता के प्रभारी डॉ. उमाशंकर सिंह प्राध्यापक, हिंदी विभाग ने बताया कि देवी अहिल्याबाई होलकर की तीन सौवीं जयंती के उपलक्ष में 5 दिसंबर 2024 को मगध विश्वविद्यालय मनोविज्ञान विभाग में आयोजित निबंध प्रतियोगिता हेतु महाविद्यालय स्तरीय छात्र-छात्राओं के चयन के लिए आज इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है । इस प्रतियोगिता में विषय की समझ, प्रासंगिकता, तर्कपूर्ण विचारों की प्रस्तुति, मौलिकता रचनात्मकता तथा भाषा प्रवाह व शैली आदि के आधार पर निबंध का मूल्यांकन किया जाएगा। राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉक्टर किशोर पासवान की देखरेख में इस प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिसमें 50 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया है। प्रतिभागियों में स्नातक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी संकाय के ताशु कुमारी, सुजीत कुमार, मुस्कान कुमारी, सुषमा, खुशी, रोशनी, पलक, आयुष, ज्योति, सावनी, गोलू, अंकित, अंकुश, शिल्पी, सोनम, खुशबू, मौसम, नीतीश, आयुष,आशुतोष, पूजा, प्रभा, राजु कुमार आदि प्रमुख थे। इस निबंध प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉक्टर राजेश कुमार सिंह ने सभी सहयोगियों तथा प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया तथा बताया कि प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को महाविद्यालय की ओर से प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार दिया जाएगा।

शिलान्यास का शिलापट देखकर ही लोगों को करना पड़ रहा है संतोष

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) स्थानीय प्रखंड क्षेत्र के कुर्था बेनीपुर पथ इतनी जर्जर है कि लोगों को आवागमन में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है जबकि उक्त सड़क मार्ग जिले के तीन प्रखंड को जोड़ती है बावजूद उक्त सड़क की हालत देखकर राज्य सरकार की बातें भी समझ से परे नजर आती है जी हां हम बात कर रहे हैं कुर्था बेनीपुर सड़क मार्ग का जिसका शिलान्यास विगत 23 अक्टूबर 2024 को कुर्था के राजद विधायक बागी कुमार वर्मा के द्वारा कर दी गई थी बता दें कि बिहार सरकार ग्रामीण कार्य विभाग मुख्यमंत्री ग्रामीण सड़क उन्नयन योजना अंतर्गत बारा से पोंदिल पथ का शिलान्यास एक माह पूर्व हुई थी जिसकी लंबाई 4.700 किलोमीटर है जबकि इसकी प्रकलित राशि 53374 लाख है हालांकि उक्त पथ को लेकर संवेदक मगध इंजीनियरिंग वर्क्स कार्य एजेंसी कार्य अभियंत्रण ग्रामीण कार्य विभाग कार्य प्रमंडल अरवल को दी गई है बावजूद अब तक उक्त सड़क मार्ग में एक माह बाद भी निर्माण कार्य प्रारंभ नहीं हो सका जिसके वजह से उक्त सड़क मार्ग से आने जाने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है सड़क पर जगह-जगह उभरे बड़े-बड़े गड्ढे ने मानो लोगों को खासा परेशान कर दिया है हालांकि उक्त सड़क मार्ग से जिले के तीन प्रखंड के लोग का आबागमन होता है छोटे से लेकर बड़े वाहनों का परिचालन उक्त सड़क पर होता है जहां दर्जनों की संख्या में सवारी वाहनों पर सवार होकर यात्रा करते हैं लेकिन उक्त सड़क मार्ग से जैसे ही गाड़ी गुजरती है लोगों की सांस अटक जाती है जिस तरीके से सड़क की हालत जर्जर है उसे स्पष्ट होता है कि कभी भी उक्त सड़क मार्ग पर किसी भी तरह की अप्रिय घटना घट सकती है लेकिन इस मामले में अब तक किसी ने सजगता नहीं दिखाई है हालांकि एक माह पूर्व तो शिलान्यास के शीलापट लगा दी गई थी उस दौरान कहा भी गया था कि महज 10 दिन के अंदर कार्य प्रारंभ कर दी जाएगी लेकिन एक माह बीत जाने के बाद भी सड़क निर्माण का कार्य प्रारंभ नहीं होने से लोगों में विभागीय अधिकारियों के प्रति काफी रोष देखा जा रहा है।

शेरघाटी थाना से पुलिस पदाधिकारी का बाइक हुआ चोरी ,2 घंटे के अंदर हुआ बरामद

शेरघाटी।थाना परिसर से एक पुलिस पदाधिकारी के बाइक चोरी के होते ही आसपास के लोगों में आग से फैल गई मालूम हो कि रविवार को तकरीबन 4:00 बजे थाना मोड़ पर वाहन जांच की जा रही थी। वहीं वाहन जांच के दौरान कई वाहन को थाने के अंदर लगाए जा रहे थे। इस दौरान एक व्यक्ति थाना में घुसाआता और एक पुलिस पदाधिकारी के पल्सर बाइक को थाना से घसीटकर कर बाहर निकाल लेता है। और तार काट कर भागने में सफल हो जाता है, तभी पुलिस पदाधिकारी थाना पहुंचे और गाड़ी को देखा तो गायब पाया गया। उन्होंने तुरंत सीसीटीवी कैमरे की पड़ताल की जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि एक युवक बाईक को घसीटकर बाहर ले जा रहा,तभी पुलिस ने इसकी पड़ताल शुरू कर दी और छापेमारी करते हुए दो घंटे के अंदर ही बार भरारी गाँव के मथुरा दास के घर से बरामद किया गया।इसके बाद बाइक चोरी करने वाला आरोपी कमलदीप कुमार को गिरफ्तार किया गया। अजीत कुमार ने बताया कि बाइक को बरामद कर लिया गया है ।

मकर संक्रांति के एक माह पूर्व से ही सज गई तिलकुट की दुकानें

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) मकर संक्रांति आने में अब शेष दिन बच गए हैं ऐसे में प्रखंड क्षेत्र कुर्था मानिकपुर मोतीपुर समेत विभिन्न बाजारों व गांव कस्बो में भी अस्थाई तिलकुट की दुकानें पूरी तरह से सज गई है हालांकि तिल के दामों में हुए मामूली वृद्धि के बाद तिलकुट के दामों में थोड़ी इजाफा हुई है हालांकि जगह-जगह पर खुले तिलकुट की दुकान से आ रही सोनी महक ने मानो पूरे बाजार को गुलजार कर दिया है बता दे की मकर संक्रांति आने को अब शेष दिन बच गए हैं ऐसे में एक माह पूर्व से ही प्रखंड क्षेत्र के बाजार में तिलकुट की अस्थाई दुकानें सज चुकी है जहां आए दिन खरीदारों की भीड़ उमड रही है इस बाबत तिलकुट विक्रेताओं ने बताया कि इस वर्ष तिल के दामों में थोड़ी वृद्धि होना हो जाने के कारण तिलकुट के दामों में थोड़ी उछाल आई है इस संबंध में तिलकुट विक्रेता ने बताया कि गुड़ के तिलकुट 200 रुपए से लेकर 220 रुपए तक बिक रही है वहीं चीनी के तिलकुट 180 रुपए से 200 रुपए जबकि खोआ भरी तिलकुट 300 रुपए से 350 रुपए प्रति किलो की दर पर बेची जा रही है हालांकि इन दिनों लोग अब अपने रिश्तेदारों के यहां भी तिलकुट ले जाना बेहद पसंद कर रहे हैं बता दे की मकर संक्रांति के दौरान राज्य के कई शहरों से तिलकुट बनाने वाले कारीगर कुर्था पहुंचते हैं जहां एक माह लगातार तिलकुट बनाने का कार्य करते हैं इसके बाद उन कारीगरों को मकर संक्रांति के समापन के दौरान तिलकुट दुकानदारों के द्वारा ससम्मान विदाई भी दी जाती है।

पटना-नई दिल्ली क्लोन स्पेशल एवं मुजफफरपुर-आनंद विहार क्लोन स्पेशल अब चलेगी दिसंबर माह के अंत तक

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर । यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये पटना से नई दिल्ली एवं मुजफ्फरपुर से आनंद विहार के लिए चलायी जा रही क्लोन स्पेशल के परिचालन अवधि में विस्तार किया जा रहा है । अब ये दोनों क्लोन स्पेशल दिसंबर, 2024 के अंत तक परिचालित की जाएगी जिनका विवरण निम्नवत है । 1.गाड़ी सं. 02393 पटना-नई दिल्ली स्पेशल (संपूर्ण क्रांति क्लोन स्पेशल) के परिचालन अवधि में विस्तार करते हुए इसे अब पटना से 01.12.2024 से 31.12.2024 तक प्रत्येक गुरूवार को छोड़कर चलाया जायेगा । 2.गाड़ी सं. 02394 नई दिल्ली-पटना स्पेशल (संपूर्ण क्रांति क्लोन स्पेशल) के परिचालन अवधि में विस्तार करते हुए इसे अब नई दिल्ली से 02.12.2024 से 01.01.2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को छोड़कर चलाया जायेगा । 3.गाड़ी सं. 05283 मुजफ्फरपुर-आनंद विहार क्लोन स्पेशल के परिचालन अवधि में विस्तार करते हुए इसे अब मुजफ्फरपुर से 02.12.2024 से 31.12.2024 तक प्रतिदिन चलाया जायेगा ।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

एक्सिस बैंक ने शुरू किया हर राह दिल से ओपन अभियान

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। एक्सिस बैंक ने अपने प्रशंसित दिल से ओपन अभियान का अगला अध्याय शुरू किया है। यह नवीनतम संस्करण हर राह दिल से ओपन बैंक के 1 लाख से अधिक बैंकरों के समर्पण को मान्यता प्रदान करता है, जो ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। ट्रांजैक्शन बैंकिंग के युग में बैंकिंग के लिए ग्राहकों को सर्वोपरि रखने वाले विजन पर जोर देते हुए यह कैम्पेन बैंक के गर्मजोशी, सहानुभूति, दयालुता और खुलेपन जैसे आदर्श मूल्यों को और मजबूती से दशार्ता है। बैंक के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर राजीव आनंद ने कहा, नया अभियान हर राह दिल से ओपन पांच फिल्मों के माध्यम से जीवंत किया गया है, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग ग्राहक सेगमेंट पर केंद्रित है।

ये फिल्में दिखाती हैं कि कैसे एक्सिस बैंक के कर्मचारी बैंक की 5,577 शाखाओं के व्यापक नेट-वर्क में विविध वित्तीय जरूरतों और आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह अभियान सिटी इंटीग्रेशन के सहकर्मियों को जोड़ने के साथ एक्सिस बैंक के मजबूत कार्यबल का भी जश्न मनाता है, जो विविध ग्राहक जरूरतों को पूरा करने की इसकी क्षमता को बढ़ाता है।

औरंगाबाद की बेटियों ने जज बनकर जिले का नाम किया रौशन

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था पृथ्वीराज चौहान चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा न्यायिक सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाली कुमारी निश्चया को उनके आवास पर जाक-र ट्रस्ट के सदस्यों ने सम्मानित किया। जीप औरंगाबाद के पूर्व अध्यक्ष सह ट्रस्ट के अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह के नेतृत्व में उपाध्यक्ष प्रोफेसर ज्ञानेश्वर प्रसाद सिंह, संयोजक जगदीश सिंह,वरीय सदस्य रामप्रवेश सिंह,राम भजन सिंह,संजय कुमार सिंह,कन्हैया सिंह,प्रवक्ता सुरेश विद्यार्थी सहित अन्य लोगों ने कुमारी निश्चया को पुष्प गुच्छ एवं शब्दकोष भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा कि यह औरंगाबाद जिले के लिए गौरवान्वित करने वाला विषय है कि एक ही वर्ष में दो-दो महिलाएं जज बनकर न्यायपालिका को मजबूत स्तंभ प्रदान करने में अपनी सहभागिता निभाने के लिए आ गई हैं।

यह भी कहा कि नारी सशक्तिकरण के निमित यह अत्यंत ही हर्षान्वित करने वाला विषय है। निश्चया ने कहा स्वाध्याय अगर प्रबल रूप से किया जाए तो कोई भी राह कठिन नहीं है। बड़ी से बड़ी मंजिल को प्राप्त की जा सकती है। विदित हो कि निश्चया के पिता नीलमणि जी औरंगाबाद कृष्णा मेमोरियल ट्रस्ट के व्यवस्थापक हैं सामाजिक कार्यों में हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया करते हैं।

रंगदारी के लिए बालू घाट कर्मियों पर फायरिंग, हथियार के साथ दो गिरफ्तार

गोलीबारी काण्ड को भोला यादव गिरोह ने दिया अंजाम

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) : नासरीगंज थाना क्षेत्र के सबादला बाबा बालू घाट व जय मां तरणी बालू घाट में बीते रात गोलियों की गड़गड़ाहट से दहल उठा । आरोपितों की ओर से घाट में घुस कर अंधाधुंध फायरिंग की गयी। हालांकि गोलीबारी में बालू घाट पर कार्यरत सभी कर्मी बाल-बाल बच गए। यह वारदात रविवार की रात करीब साढ़े दस बजे की है। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। गोलीबारी में इस्तेमाल देसी कट्टा भी बरामद कर लिया गया है। छानबीन के दौरान घटनास्थल से पुलिस को तीन खोखे मिले हैं। गिरफ्तार अभियुक्त के पास से एक बड़ा राइफल, एक देशी कार्बाइन. दो देशी कट्टा, ब्यालिस जिन्दा कारतूस, छह खोखा, एक 7.65 का खाली मैगजीन तथा पैतालिस हजार नगद रुपए के साथ एक खाली मैगजीन बरामद किया गया। एसपी ने बताया की नासरीगंज थानाध्यक्ष को बीती रात सूचना मिली की छह नंबर बाबा बालू घाट बी.डी. इंटरप्राइजेज में कुछ अज्ञात अपराधकर्मियों के द्वारा फायरिंग करते हुए काउंटर से एक लाख रू० नगद, मोबाइल एवं लैपटॉप लूट लिया गया है। बताया की पुलिस को गुप्त सूचना मिली की काराकाट थाना क्षेत्र के सिकरिया गाँव में मनीश कुमार के घर पर भोला यादव एवं गिरोह के कुछ सदस्य मौजूद हैं। सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए बिक्रमगंज एसडीपीओ कुमार संजय के नेतृत्व में एक टीम की गठन किया गया। जिसमे काराकाट थानाध्यक्ष फूलदेव चौधरी, कछवां थानाध्यक्ष मितेश कुमार, नासरीगंज थानाध्यक्ष अमित कुमार सहित अन्य पुलिस बल द्वारा सीसीटीवी फुटेज व प्रत्यक्षदर्शियों के बयान पर अपराधियों की धरपकड़ के लिए छापेमारी किया गया। जिसमे दो अपराधकर्मियों के साथ भारी मात्रा में कारतूस व जिंदा कारतूस बरामद किया गया। उन्होंने कहा की पुलिस द्वारा सिकरियां गांव में मनीश कुमार के घर पर छापामारी की गई । पुलिस ने काराकाट थाना क्षेत्र के सिकरिया गांव निवासी रंगबहादुर सिंह के पुत्र मनीश कुमार और सिकरिया गांव के ही उमेश सिंह के पुत्र उदय कुमार उर्फ रंजन कुमार को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा की उदय कुमार उर्फ रंजन कुमार के घर से भोला यादव का एक कार बरामद किया गया है। भोला यादव एक कुख्यात अपराधकर्मी है, जिसके गिरोह में मनीश कुमार, उदय कुमार उर्फ रंजन कुमार, दिनेश साह सक्रिय सदस्य हैं । जिनकी संलिप्तता उक्त काण्ड में भी पाई गई है। उक्त काण्ड में संलिप्त भोला यादव और दिनेश साह पुलिस के गिरफ्त से बाहर है। कांड में संलिप्त सभी की गिरफ्तारी के लिए उनके संभावित ठिकानों पर छापामारी की जा रही है उन्हे बहुत जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

डीएम की अध्यक्षता में हुई सीडब्ल्यूजेसी एवं एमजेसी से संबंधित समन्वय-सह-समीक्षात्मक बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा । जिला पदाधिकारी तरनजोत सिंह की अध्यक्षता में सोमवार को जिला मुख्यालय स्थित झल्लू बाबू सभागार में समन्वय-सह-समीक्षात्मक बैठक आहुत की गई। बैठक में विधि शाखा के समीक्षा के क्रम में सीडब्ल्यूजेसी एवं एमजेसी से संबंधित माननीय उच्च न्यायालय पटना में दायर वादों को यथाशीघ्र निष्पादित करने का निदेश दिया गया। साथ ही जिन विभागों का सीडब्ल्यूजेसी एवं एमजेसी वाद संबंधित है, उन्हें यथाशीघ्र एसओएफ तैयार करने का निदेश दिया गया। मुख्यमंत्री जनता दरबार, सी.पी ग्राम, आयुक्त कार्यालय के प्राप्त परिवाद पत्र एवं जिला जनता दरबार से संबंधित परिवाद का निष्पादन करने हेतु संबधित पदाधिकारियों को निदेश दिया गया। विशेषकर मुख्यमंत्री जनता दरबार और सी.पी. ग्राम से लंबित मामलों सी.पी. ग्राम में लंबित मामलों के निष्पादन हेतु निदेश दिया गया।

शिक्षा विभाग की समीक्षा के क्रम में जिला शिक्षा पदाधिकारी को अपर समाहर्त्ता, राजस्व से समन्वय स्थापित कर विद्यालय भूमि अतिक्रमण के लंबित मामलों के निष्पादन हेतु निदेश दिया गया। डीपीओ, मनरेगा को मरनेगा से बन रहे आंगनबाड़ी केन्द्रों के निर्माण कार्य में प्रगति लाने हेतु निदेश दिया गया। साथ ही हर घर नल का जल योजना की जांच कर योजना को अच्छादित करने का निदेश कार्यपालक अभियंता, पीएचईडी को दिया गया। वहीं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के क्रम में आयुष्मान कार्ड बनाने में प्रगति लाने एवं इस कार्य में एएनएम तथा आशा का सहयोग लेने हेतु सिविल सर्जन, मधेपुरा को निदेश दिया गया। निमार्णाधीन डब्ल्यूपीयू को पूर्ण करने का निदेश दिया गया साथ ही डब्ल्यूपीयू को क्रियान्वित करने का निदेश दिया गया। पंचायत सरकार भवन निर्माण हेतु शेष बचे पंचायतों में भूमि चिन्हित करने का निदेश डीसीएलआर, मधेपुरा/उदाकिशुनगंज का निदेश दिया गया। साथ ही पंचायत सरकार भवन निर्माण हेतु प्रस्तावित भूमि के अतिक्रमण मामलों के निष्पादन हेतु डीसीएलआर, मधेपुरा/उदाकिशुनगंज को निदेश दिया गया। कृषि विभाग की समीक्षा के क्रम में खाद्य एवं बीज आमजनों को उचित मूल्य पर प्राप्त हो इसके लिए जिला कृषि पदाधिकारी, मधेपुरा को निदेश दिया गया। महाप्रबंधक, उद्योग को विश्वकर्मा योजना में प्रगति लाने हेतु निदेश दिया गया। नीलाम पत्र पदाधिकारी को अपने-अपने अधीन वादों को पोर्टल पर ऑनलाईन अपलोड करने तथा नीलाम पत्र वाद की सुनवाई करने तथा नियमानुसार बी/डब्ल्यू एवं डी/डब्ल्यू निर्गत करने का आदेश दिया गया।

कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद, मधेपुरा को नगर निकाय में साफ-सफाई सुनिश्चित करने का निदेश दिया गया साथ ही कुड़े-कचरे को डम्पिंग साईड में ही फेंकने का निदेश दिया गया। वहीं पुल निगम की समीक्षा के क्रम में संबंधित अभियंता को अनुमंडल पदाधिकारी, मधेपुरा से समन्वय स्थापित कर अतिक्रमण हटाने का निदेश दिया गया तथा कार्य में प्रगति लाने का निदेश दिया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त अवधेश कुमार आनंद, अपर समाहर्ता अरूण कुमार सिंह, अपर समाहर्ता, वि.जॉ शिशिर कुमार मिश्र, जिला आपूर्ति पदाधिकारी शंकर शरण, अनुमंडल पदाधिकारी, मधेपुरा, जिला शिक्षा पदाधिकारी, मधेपुरा, सिविल सर्जन, मधेपुरा समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित हुए।

आईपीएस ,आईजी विकास वैभव एवं बिहार के चर्चित उद्योगपति सह समाजसेवी निशिकांत सिन्हा का फूल माला ,गुलदस्ता एवं अंग वस्त्र से भव्य स्वागत किया गया

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास)। जन कल्याण सेवा समिति के अध्यक्ष संजय कुमार सिंह एवं संरक्षक सत्यनारायण स्वामी के नेतृत्व में कुशवाहा सभा भवन सासाराम के पास आईपीएस ,आईजी विक-ास वैभव एवं बिहार के चर्चित उद्योगपति सह समाजसेवी निशिकांत सिन्हा का फूल माला ,गुलदस्ता एवं अंग वस्त्र से भव्य स्वागत किया। फजलगंज स्टेडियम जन संवाद कार्यक्रम के पश्चात निशिकांत सिन्हा का जन संवाद कार्यक्रम कुशवाहा सभा भवन सासाराम में भी हुआ। उन्होंने बताया कि हमारे बिहार के लोग इतना मेहनती होते हुए भी आज बिहार पिछड़ा हुआ है इसके लिए हम सभी को मिलकर विचार करना होगा एवं समाधान ढूंढना होगा ' संजय कुमार सिंह ने बताया कि बिहार की विकास के लिए कि आज के दौर में बिहार को आईपीएस विकास वैभव एवं निशिकांत सिन्हा जैसे व्यक्तित्व की अति आवश्यकता है ' इस अवसर पर उपस्थित थे -सत्यनारायण स्वामी,संजय कुमार सिंह, उषा सिंह, संध्या सिंह, मधु सिंह,निलम साहू ,जय प्रकाश सिंह, अमित राठौर,आलोक रंजन,ज्ञानेन्द्र कुमार ज्ञानू, शिवकुमार सिंह, महेंद्र ओझा ,डॉक्टर एसएन सिंह, रामचंद्र सिंह ,डॉक्टर विमल सिंह, उमाशंकर सिंह, अनिल कुमार सिंह ,सूबेदार मेजर श्री भगवान सिंह, योगिंदर कुशवाहा, वीरेंद्र कुशवाहा , निर्भय सिंह अधिवक्ता, सत्येंद्र प्रसाद साह, रूबी कुमारी,ईश्वरचंद सिंह,बीरेंद्र सिंह, प्रमिला कुमारी, ,प्रिया कुमारी,शिव कुमार मौर्य, धनंजय सिंह ,मनोज कुमार विश्वकर्मा , विरेद्र सिंह अनिल, डॉ जे के तिवारी, सुनीता पांडेय, परवीन कुमारी,प्रिया कुमारी, रीना सिंह, राजेश्वर कुशवाहा तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे ।

जिला विधिज्ञ संघ में शोक सभा आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद।जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद में वरीय अधिवक्ता पूर्व सचिव रंजीत कुमार सिंह के निधन होने पर शोकसभा आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय और संचालन महासचिव जगनरायण सिंह ने किया एवं प्रधान जिला जज के इजलास में भी एक शोक सभा प्रधान जिला जज राजकुमार वन के अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि वक्ताओं ने कहा कि मधुभाषि, व्यवहार कुशल, सरल स्वभाव के रंजीत कुमार सिंह का जन्म 14 जुलाई 1942 में हुई थी उन्होंने 28 अगस्त 1970 से जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद में वकालत प्रारम्भ किया था जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के रघुनंदन बार भवन निर्माण में उनका अतुलनीय योगदान था उन्होंने कुछ साल पूर्व अपनी सारी विधि पुस्तक जिला विधिज्ञ संघ के पुस्तकालय को दे दिया था। इस अवसर पर उपस्थित थे अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संजय सिंह, लोक अभियोजक पुष्कर अग्रवाल, स्पेशल पीपी कुमार योगेन्द्र नारायण सिंह, रसिक बिहारी सिंह, राकेश कुमार सिंह उर्फ पप्पू, परशुराम सिंह, नागेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार, उदय कुमार सिन्हा, कामता प्रसाद सिंह,सुर्दशन यादव, रविन्द्र सिंह, अनील कुमार सिंह, प्रमोद कुमार सिंह, ओमप्रकाश कुमार, दिलीप सिंह, सुजीत सिंह, अंजनी सिंह,पवन सिंह, प्रदीप कुमार सिंह सुनील कुमार सहित अन्य उपस्थित थे इस शोक सभा के बाद सभी अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य से विरत रहने का फैसला लिया।

महिला हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए मानव श्रृंखला का किया गया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। सहयोगी संस्था द्वारा 16 दिवसीय अभियान के अंतर्गत पटना के विभिन्न क्षेत्रों में मानव श्रृंखला, उम्मीद की रोशनी, और पुलिस उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इन आयोजनों का उद्देश्य समाज में महिला हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाना और सुरक्षा, समानता, और अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक करना था।

मानव श्रृंखला: छात्र-छात्राओं की भागीदारी से जागरूकता का प्रसार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मठियापुर के 100 छात्र-छात्राओं ने मानव श्रृंखला में उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने ह्लमहिला हिंसा के खिलाफ हम सबकी आवाज,ह्व ह्लअसमानता से समानता, सबकी गिनती एक समान,ह्व और ह्लमुझे नहीं, मेरे अधिकारों को सुरक्षित करेंह्व जैसे प्रभावशाली नारों के साथ समाज को जागरूक किया। मानव श्रृंखला के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि महिलाओं के अधिकार और समानता के प्रति हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

पुलिस उन्मुखीकरण कार्यक्रम: महिला सुरक्षा पर विशेष ध्यान

1 दिसंबर 2024 को रूपसपुर थाने में सहयोगी संस्था ने पुलिस उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में महिला हेल्पडेस्क की प्रभारी निशा कुमारी और अंजू कुमारी, मुंशी रंजन कुमार, रघुरामपुर की वार्ड सदस्य सरोज देवी, हथियाकांध की वार्ड सदस्य गुड़िया देवी, और अन्य पंचायतों की महिलाएं एवं किशोरियां शामिल हुईं। थाना अध्यक्ष रणविजय कुमार ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित किया और महिला सुरक्षा के महत्व पर बल दिया।

उम्मीद की रोशनी: संदेशों के साथ एकजुटता का प्रदर्शन

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर उम्मीद की रोशनी का आयोजन किया गया, जिसमें 50 प्रतिभागियों ने मोमबत्तियां और बैनर लेकर सड़कों पर जागरूकता फैलाई। दिन सवेरा, रात अंधेरा, हर पल हो सुरक्षा हक हमारा, ये रात हमारी है, ये शहर हमारा है, और घर हो या शहर के रास्ते, सुरक्षित हो सबके वास्ते जैसे संदेशों के माध्यम से महिला सुरक्षा और समानता के लिए आवाज उठाई गई।इन कार्यक्रमों को सफल बनाने में सहयोगी संस्था की कार्यकारी निदेशक रजनी और उनकी टीम के सदस्यों, निर्मला, बिंदु, रूबी, प्रियंका, शारदा, लाजवंती, मोनिका, मनोज, रौनक, उषा, धर्मेंद्र, और साक्षी, ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने पीएमओ रोडमैप लक्ष्य 2 कैपासिटी डेवलपमेंट के तहत संविदा कर्मचारियों के लिए आयोजित किया प्रशिक्षण शिविर

पटना । राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (क्षे. सं. प्र.), भारत सरकार, पटना के द्वारा पीएमओ रोडमैप लक्ष्य 2 कैपासिटी डेवलपमेंट के तहत कार्यालय के संविदा कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन ,उप महानिदेशक, रोशन लाल साहू के द्वारा सोमवार को किया गया। यह प्रशिक्षण शिविर एक माह तक राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (क्षे. सं. प्र.), भारत सरकार, पटना में आयोजित किया जाएगा।

इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र कार्य में लगे कर्मियों का क्षमता विक-ास, संचार कौशल, टीम निर्माण, नेतृत्व विकास, सॉफ्टवेयर दक्षता आदि में निपुण करना है। इससे सर्वे कार्य के लिए प्रशिक्षित, दक्ष लोगों की टीम तैयार होगी और राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय अपने पेशेवर लक्ष्य को प्राप्त करने एवं डाटा के गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार करने में सफल होगा।

बच्चों को जागरूक होना जरूरी: पैनल अधिवक्ता

औरंगाबाद। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा शिक्षा का अधिकार, किशोर न्याय परिषद्, पॉक्सो अधिनियम, बच्चों की यौन अपराध से बचाव तथा बच्चों से सम्बन्धित अन्यान्य कानून पर जानकारी के साथ-साथ बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके तहत बिभिन विद्यालय के बच्चों के बीच पॉक्सो अधिनियम की विभिन्न धाराओं एवं उसके तहत आम जनों की कर्तव्य के साथ-साथ शिक्षा के अधिकार जिसे भारतीय संविधान के द्वारा मौलिक अधिकार घोषित किया गया है के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराया गया। किशोर न्याय व्यवस्था से सम्बन्धित कई जानकारियां तथा नये बने कानूनों की विस्तृत परिचर्चा करते हुए भारत सरकार के द्वारा 27 नवंबर 2024 को प्रारम्भ किये गये बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत बाल विवाह से सम्बन्धित कानूनों एवं बाल विवाह के दुष्परिणाम से उपस्थित लोगो को जागरूक किया गया। अपने सम्बोधन में पैनल अधिवक्ता द्वारा उपस्थित बचों को कहा गया की सभी अपने अधिकार को जानिये इससे ज्यादा आप अपने कर्तव्य को अगर जान लेते हैं तो आपको अपना अधिकार भी प्राप्त हो जायेगा। शिक्षा का अधिकार, किशोर न्याय परिषद्, पॉक्सो अधिनियम, बच्चों की यौन अपराध से बचाव तथा बच्चों से सम्बन्धित अन्यान्य कानून पर जानकारी के साथ-साथ बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत व्यापक जागरूकता कार्यक्रम चलाने तथा विद्यालय के बच्चों को भी शिक्षित करने के उद्देश्य से राजर्षि विद्या मंदिर अनुग्रह इंटर विद्यालय,अनुग्रह कन्या इंटर विद्यालय औरंगाबाद, में इससे सम्बन्धित कार्यक्रम का आयोजन किया गया पैनल अधिवक्ता सतीस कुमार स्नेही, राकेश रंजन मो निजामुद्दीन, श्रीमती चन्द्रकान्ता कुमारी, संतोष कुमार राणा सरोज कुमार सिंह ने अलग अलग विद्यालय में काफी संख्या में उपस्थित बच्चों को जानकारी उपलब्ध कराया गया जिससे बच्चों के बीच बुनियादी कानूनों की जानकारी के साथ-साथ अपने कर्तव्य के बोध का पालन करने का निश्चय लिया गया। रोहित कुमार अविनाश कुमार पाठक कुमारी ममता पारा विधिक स्वयं सेवक जिन्हें अब अधिकार मित्र कहा जाता है के द्वारा सहयोग किया गया।

दाकिशुनगंज में नौ पैक्सों के लिए मतदान आज

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज में मंगलवार यानी आज होने वाले पैक्स चुनाव की सारी तैयारियां पूरी कर ली गई है। यहां पर नौ पैक्सो के लिए मतदान होना है। जहां विभिन्न पदों के लिए 33 अभ्यर्थियों के भाग्य का फैसला होना है। प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह बीडीओ गुलजारी पंडित ने मतदान कर्मियों को सभी सामग्री देकर मतदान केन्द्रों के लिए रवाना किया। बीडीओ गुलजारी पंडित ने बताया कि उदाकिशुनगंज प्रखंड में नौ पैक्सों के लिए कुल 33 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। पैक्स चुनाव के लिए उदाकिशुनगंज में 33 मतदान कर्मियों को विभिन्न मतदान केन्द्रों पर लगाया गया है। वहीं 12 मतदान कर्मियों को रिजर्व में रखा गया है। बीडीओ ने बताया कि उदाकिशुनगंज प्रखंड के नौ पैक्सों में होने वाले मतदान में जोतैली पैक्स में 2509 मतदाता, बीड़ी रणपाल पैक्स में 2662 मतदाता, रहटा - फनहन पैक्स में 2058 मतदाता, किशुनगंज पैक्स में 2674 मतदाता, रामपुर खोड़ा पैक्स में 1866 मतदाता, शाहजादपुर पैक्स में 3249 मतदाता, बुधामा पैक्स में 1403 मतदाता, नयानगर पैक्स में 1708 मतदाता, पिपड़ा - करौती पैक्स में 2236 मतदाता मंगलवार यानी आज मताधिकार का प्रयोग करेंगे। वहीं उदाकिशुनगंज के नौ पैक्सों में कुल 33 अभ्यर्थी चुनाव मैदान में अपने - अपने भाग्य को अजमा रहे हैं। प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह बीडीओ गुलजारी पंडित ने बताया कि चुनाव को लेकर सारी तैयारियां पूरी कर ली गई है। चुनाव कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के साथ संपन्न कराया जायेगा।

जदयू के पूर्व प्रत्याशी और पार्टी के पूर्व विधानसभा सदस्यों एवं विधानसभा क्षेत्र प्रभारियों की बैठक संपन्न

सासाराम(रोहतास) : आज परिसदन सासाराम में जनता दल यूनाइटेड रोहतास के पूर्व प्रत्याशी और पार्टी के पूर्व विधानसभा सदस्यों एवं विधानसभा क्षेत्र प्रभारियों की एक बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता पार्टी के रोहतास जिला अध्यक्ष श्री अजय सिंह कुशवाहा ने की तथा बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में पार्टी के प्रमंडल प्रभारी श्री राज किशोर प्रसाद उपस्थित रहे। बैठक का मुख्य उद्देश्य आगामी 7 दिसंबर को होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलन के सफलता के लिए आवश्यक बिंदुओं पर विचार विमर्श करना और ठोस निष्कर्ष निकलना था।इस क्रम में सभा स्थल के रूप में फजलगंज सासाराम स्थित स्टेडियम का चयन किया गया लोगों के कार्यक्रम स्थल पर निर्धारित तिथि और समय पर पहुंचने की व्यवस्था उनके भोजन की व्यवस्था और आगंतुक अतिथियों के समुचित सम्मान तथा उनके कार्यक्रम की व्यवस्था के बारे में विचार विमर्श किया गया और निर्णय लिए गए।साथ ही बैठक में उपस्थित लोगों ने सभा स्थल का निरीक्षण भी किया ।

शॉट सर्किट से धान फसल में लगी आग

मसौढ़ी ! नगर मुख्यालय स्थित गंगाचक मालिकाना मुहल्ले में अनुज यादव व मनोज यादव के खलिहान में धान से भरी पुंज में आग लगने से हजारों रुपये के धान की फसल जलकर राख हो गई। स्थानीय लोगों की सूचना पर अग्निशमन की गाड़ी पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।और सभा स्थल के साजसज्जा एवं वहां लोगों के बैठने खाने और पानी पीने के समुचित व्यवस्था पर विचार विमर्श कर उचित निर्णय लिए।

निष्पक्ष व शांति पूर्ण मतदान संपन्न कराने को लेकर प्रशासन कटिबद्ध : एडीएम

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज में मंगलवार यानी आज होने वाले पैक्स चुनाव की तैयारी को लेकर एडीएम शिशिर कुमार मिश्रा ने अधिकारियों के साथ बैठक कर समीक्षा की। उन्होंने कहा कि प्रशासन शांति पूर्ण और निष्पक्ष मतदान कराने को लेकर कटिबद्ध है। मतदान में व्यवधान डालने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि पैक्स चुनाव को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से संपन्न कराना हम सबों की जिम्मेवारी है। मतदान में लगे अधिकारियों और कर्मियों को सही ढंग से कर्तव्य का पालन करना होगा। एडीएम ने मतदान कर्मियों को नसीहत के साथ चेतावनी भी दी। उन्होंने कहा कि गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। वहीं सोमवार को प्रखंड मुख्यालय के सभागार में चुनाव में तैनात किये गये मजिस्ट्रेट और पुलिस पदाधिकारियों के साथ एडीएम और जिला शिक्षा पदाधिकारी ने बैठक की। इस दौरान उन्होंने ने कहा कि चुनाव के दौरान किसी तरह की घटना हो तो तुरंत बड़े अधिकारियों को इसकी सूचना दें। वहीं, जोनल और पेट्रोलिंग मजिस्ट्रेटों को लगातार बूथों का निरीक्षण करने को कहा। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को बूथ पर अशांति फैलाने वालों के साथ सख्ती से निपटने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान बताया गया कि पैक्स चुनाव को लेकर चार स्तर पर सुरक्षा की व्यवस्था की गई है।इसमें बूथ पर मजिस्ट्रेट और पुलिस की स्थायी तैनाती के अलावा दूसरे लेयर पर पेट्रोलिंग मजिस्ट्रेट, तीसरे लेयर में जोनल दंडाधिकारी और चौथे लेयर में सुपर जोनल दंडाधिकारी की तैनाती की गई है। मंगलवार को उदाकिशुनगंज प्र-खंड क्षेत्र की 9 पैक्सों के लिए मतदान कराया जायेगा। इन पैक्सों के कुल 33 बूथों पर 20 हजार से अधिक मतदाता वोट डालेंगे। बताया गया कि सुबह सात बजे से संध्या 4.30 बजे तक वोट डाले जाएंगे। वहीं बुधवार को प्र-खंड मुख्यालय में बनाये गये मतगणना भवन में वोटों की गिनती की जाएगी। मौके पर मुख्यालय डीएसपी, परिवहन डीएसपी, एसडीपीओ अविनाश कुमार, बीडीओ गुलजारी कुमार पंडित, सीओ हरिनाथ राम, थानाध्यक्ष विनोद कुमार सिंह सहित अन्य पदाधिकारी और कर्मी मौजूद थे।

सड़क हादसे में बाल-बाल बचे काराकाट बीडीओ

अनियंत्रित ट्रक ने बीडीओ की गाड़ी में मारी जोरदार टक्कर, गाड़ी की परखच्चे उड़े

- तीन दिसंबर को होनी है काराकाट में पैक्स की चुनाव के लिए मतदान, बूथ भ्रमण पर निकले थे बीडीओ

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) : सोमवार की सुबह इटवा बाल स्थित राईशमील के समीप करीब 8:30 बजे चुनाव ड्यूटी में भ्रमण के दौरान इज्ड सड़क दुर्घटना के शिकार हो गए। जिसमे बीडीओ व ड्राइवर सहित एक अन्य घायल बताए जा रहे है। ज्ञात हो की काराकाट में 3 तारीख को पैक्स चुनाव के लिए मतदान होनी है। जिसको लेकर बीडीओ सुबह बूथ पर जा रहे थे की अचानक उनके गाड़ी की सामने से एक अनियंत्रित ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दिया। जिसमे बीडीओ की वाहन पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। बताया की बीडीओ की चालक ने ट्रक से बचने की काफी प्रयास किया लेकिन स्टेरिंग फेल हो जाने की वजह से गाड़ी को नियंत्रण नही कर पाया गाय। जिससे सामने से आ रही ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दिया। हादसा इतना जोरदार था की बीडीओ की सरकारी गाड़ी की परखच्चे उड़ गए।

घटना में घायल ड्राइवर रितेश कुमार व लोरीबंध गांव निवासी स्वर्गीय ललन सिंह के पुत्र रंजीत सिंह बताए जा रहे है। दोनो घायलों की इलाज सासाराम सदर अस्पताल में चल रहा है। बीडीओ राहुल कुमार सिंह ने बताया की पैक्स चुनाव के लिए 3 दिसंबर को मतदान होनी है। जिसको लेकर मतदान केंद्र पर जा रहे थे। जिस दरमियान यह हादसा हो गया।

उन्होंने कहा की गाड़ी की स्टेरिंग फेल होने के कारण चालक ने अपना नियंत्रण खो बैठा जिससे सामने से आ रही एक अनियंत्रित ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दिया जिसमे चालक सहित एक अन्य घायल हो गए है। जिनका इलाज सासाराम के सदर अस्पताल में चल रहा है।

काराकाट पैक्स चुनाव के लिए प्रचार प्रसार बंद 16 पैक्सों में 35054 मतदाता आज करेंगे मतदान

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) । काराका प्र-खंड में 3 दिसंबर 2024 को पैक्स चुनाव के लिए मतदान की तिथि निर्धारित है । पैक्स चुनाव के लिए प्रत्याशियों के प्रचार प्रसार रविवार की शाम चार बजे समाप्त हो गया । प्रचार प्रसार समाप्त होते ही चुनावी शोर समाप्त हो गया । निवार्ची पदाधिकारी सह बीडीओ राहुल कुमार सिंह ने बताया कि चुनाव प्रचार समाप्त ही गया है । 3 दिसंबर को शांतिपूर्ण मतदान के लिए सारी प्रशासनिक तैयारी पूरी कर ली गई है ।

गौरतलब हो कि प्रखंड में 16 पंचायतों में पैक्स का चुनाव होगा । सिकरियां पैक्स निर्विरोध होने के कारण वहां चुनाव नहीं होगा । निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि 16 पैक्सों में कुल 35 हजार 54 मतदाता मतदान करेंगे ।

प्रखंड के अमरथा पैक्स में कुल 3740 मतदाता, काराकाट में 1998 मतदाता, किरही में 2191, गम्हरियां में 2729, चिकसील में 2452, जयश्री में 1947, दनवार में 1577, देव में 1852, धनहरा में 2131, बाराडीह में 2100, बुढ़वल में 1673, बेनसागर 2889, मुंजी में 2293, मोथा में 2275, सकला में 1507, सोनवर्षा में 1700 मतदाता मतदान करेंगे । निवार्ची पदाधिकारी ने बताया कि 16 पैक्सों पर कुल 59 बूथ बनाया गया है। सभी मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण मतदान के लिए सारी प्रशासनिक तैयारी पूरी कर ली गई है ।

संक्षिप्त खबरें

हिस्सेदारी की विवाद पर देवर ने भाभी के साथ कि बेरहमी से मारपीट

जमुई [झाझा] जमीन में हिस्सेदारी को लेकर घर पर दो छोटे छोटे बच्चों के साथ रह रही एक महिला को उसके देवर ने बच्चों के सामने बेरहमी से मारपीट करते हुए घायल कर दिया। घटना थानाक्षेत्र के महापुर गांव की है। महिला के मायके वालों को जानकारी मिलने पर घायल महिला के भाई ने उसे उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया जहां उसका बेहतर इलाज किया गया। घायल महिला की पहचान रेखा देवी के रूप में है। घायल महिला के भाई ने बताया कि घायल अवस्था मे मेरी बहन ने मारपीट को लेकर जानकारी दिया जिसमें उसने बताया कि हिस्सेदारी के विवाद को लेकर उसका देवर रविशंकर यादव देर शाम को नशे की हालत में घर मे जबरन घुसकर दोनो छोटे बच्चों के सामने लात घुसा, पांव में पहने जूता से मारपीट किया। महिला का पति दैनिक मजदूरी का का काम बेंगलुरु में करता है। घायल महिला ने बताया कि इससे पूर्व में देवर मेरे साथ कई बार मारपीट किया है।

लक्ष्मीपुर प्रखंड अंतर्गत 10 पैक्सों में स्वच्छ निष्पक्ष शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव सम्पन्न

02 नये चेहरे के साथ 08 पुराने पैक्स अध्यक्ष का कब्जा बरकरार

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/लक्ष्मीपुर जिले लक्ष्मीपुर प्रखंड मुख्यालय में मतगणना के दौरान पत्रकारों को प्रवेश होने से रोका गया। वहीं प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रेम प्रकाश ने बताया कि पत्रकार लोगों को मतगणना से बाहर रखा गया है। आप लोग बाहर से न्यूज कवरेज करें। ऐसा पहली बार हुआ है कि मतगणना से पत्रकारों को बाहर रखा गया है। वहीं लक्ष्मीपुर प्रखंड मुख्यालय में प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रेम प्रकाश, अंचलाधिकारी रविकांत और एसडीपीओ सतीश सुमन के नेतृत्व मतगणना अपराह्न 4:30 बजे से एक साथ 10 पैक्सों का प्रारंभ हो गया था। मटिया पैक्स से मुकेश यादव ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी महेश मंडल को मात्र 16 मतों से हराकर चौथी बार लगातार मटिया पैक्स के अध्यक्ष पद पर अपना कब्जा बरकरार रखा है। गौरा पैक्स से बहादुर यादव ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी राजेंद्र प्रसाद राय को 63 मतों से हराकर विजयी हुए। मड़ैया पैक्स से सुरेन्द्र यादव ने निवर्तमान अध्यक्ष बिशुनदेव यादव को 87 मतों से हराकर पहली बार मड़ैया पैक्स अध्यक्ष पद पर आसीन हुए हैं। नजारी पैक्स से वर्तमान पैक्स अध्यक्ष श्याम सुंदर दास ने जदयू नेता ललन कुमार उर्फ ललन दास को 211 मतों से हराकर चौथी बार लगातार नजारी पैक्स अध्यक्ष पद पर अपना कब्जा बरकरार रखा है। हरला पैक्स से निर्वतमान अध्यक्ष नरेश यादव उर्फ भगत जी की धर्मपत्नी श्रीमती रूणा देवी ने संतोष कुमार मंडल को 63 मतों से पराजित किया है ककनचौर पैक्स से परमेश्वर यादव ने बालदेव प्रसाद यादव को 127 मतों से हराकर तीसरी बार लगातार अध्यक्ष पद पर काबिज हुआ है। मोहनपुर पैक्स से निवर्तमान अध्यक्ष कुमारी सुलोचना को बहादुर यादव ने 295 मतों से हराकर पहली बार मोहनपुर पैक्स अध्यक्ष पद पर विराजमान हुए हैं। खिलार पंचायत अंतर्गत नावाबांघ पैक्स से मदन यादव ने विजयकांत यादव को 404 मतों से हराया। दिग्घी पैक्स से लगातार तीसरी बार सुनील यादव ने 755 मतों के भारी अंतर से दरोगा यादव को हराया। इस प्रकार 02 नये चेहरे के साथ 08 पुराने पैक्स अध्यक्ष ने अपना-अपना कब्जा बरकरार रखा है।

निर्वाचन पदाधिकारी ने की पैक्स चुनाव को लेकर बैठक

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] सोमवार को प्रखंड क्षेत्र के 11 पंचायतो में मंगलवार को होने वाले पैक्स चुनाव को लेकर प्रखंड कार्यालय के सभागार में निर्वाचन पदाधिकारी सह बीडीओ रविजी की अध्यक्षता में मतदान के लिए नियुक्त पदाधिकारी के साथ बैठक किया। निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि चुनाव को लेकर जिला के वरीय अधिकारी के द्वारा जो भी दिशा निर्देश दिया गया है उस दिशा निर्देश को चुनाव कार्य मे नियुक्त हर पदाधिकारी पूरी ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करे। एसएचओ ने कहा कि हर बूथ पर सुरक्षा को लेकर पुलिस पदाधिकारी एवं जवान मौजूद रहेंगे। इसके अलावे जिस क्षेत्र में चुनाव होगा उस क्षेत्र में पुलिस की गश्ती भी होते रहेगा। जिसमें एसएचओ संजय कुमार सिंह सहित बीईओ सहित अन्य विभाग के पदाधिकारी मौजूद रहे। हर बूथ पर ससमय मतदान की प्रकिया पूरी करे और सुरक्षा के बीच मतदान पेटी को प्रखण्ड कार्यालय लाये। किसी भी बूथ पर कोई परेशानी हो तो तुरंत इस बात की जानकारी मुझे दे। निर्वाचन पदाधिकारी ने उपस्थित पदाधिकारी को दिशा निर्देश देते हुए बताया की अपने अपने क्षेत्र में पैक्स चुनाव निष्पक्ष और शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न करवाये। किसी भी बूथ पर धारा 144 का उल्लंघन न हो। बूथ पर मतदाता के अलावे अन्य किसी भी लोगों को रहने न दे।

अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष का किया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

जनता दल यूनाइटेड जिला कार्यालय में जदयू अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के नव नियुक्त जिला अध्यक्ष शाहिद अख्तर उर्फ गुड्डू राईन का स्वागत किया गया। जिला अध्यक्ष नचिकेता मंडल, प्रदेश महासचिव सौरभ निधि, जमालपुर प्रखंड अध्यक्ष मुनिलाल मंडल, बरियारपुर प्रखंड अध्यक्ष मिथलेश मंडल, मुंगेर सदर अध्यक्ष सुजीत मंडल, नगर कार्यकारी अध्यक्ष श्री राकेश मंडल, कोषाध्यक्ष सह प्रवक्ता विमलेंदु राय, पार्टी के नेता कृष्ण कुमार जी, मनीष झा, सद्दाम हुसैन, ने शाहिद अख्तर को माला एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। जिला अध्यक्ष नचिकेता मंडल ने प्रदेश अध्यक्ष अशरफ अंसारी का धन्यवाद दिया और विश्वास जताया कि गुड्डू राईन के नेतृत्व में संगठन पुनः मजबूत होगा । सौरव निधि ने कहा कि गुड्डू को शुभकामना देता हूं और आग्रह करता हूं कि माननीय मुख्यमंत्री ने अकलियतों के लिए जो काम किया है उसका संदेश लेकर अकलियत समाज में जाएं और भावना से उठ कर विकास का साथ दें। गुड्डू राईन ने जिलाध्यक्ष नचिकेता मंडल और अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशरफ अंसारी का अपने मनोनयन के लिए शुक्रिया अदा करते हुए आश्वस्त किया कि एनडीए के नेतृत्व में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पिछले 19 अनवरत वर्षों से अकलियत के लिए जो काम किया है उसका संदेश लेकर एक एक मुसलमान के घर तक जाऊंगा और अकलियतों को पुनः जेडीयू के साथ जोड़ने का काम करूंगा।

पालीगंज में सुमन गुरु जी के तत्वावधान में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

पालीगंज में सरस्वती वंदना की प्रस्तुति भाव नृत्य के साथ सुप्रिया राज की टीम के द्वारा किया गया। छोटे उस्ताद सिंगिंग में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः विभोर, सौम्या विनायक एवं अन्य भारती ने प्राप्त किया शास्त्रीय संगीत की प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय क्रमशः सत्यम राज, अनीशा शर्मा व संस्कार ने प्राप्त किया। अगली कड़ी में भाव संगीत की प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः दिव्या लक्ष्मी अभिजीत प्रकाश एवं अमित कुमार अकेला ने प्राप्त किया बाकी सभी प्रतिभागियों को संतान पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया । उक्त कार्यक्रम में अरविंद कुमार अकेला एवं उदित नारायण जी ने तबला नाल पर संगत किया। वही जज की भूमिका में रजनीश कुमार मिश्रा नॉलेज उपाध्याय मदन शर्मा जी एवं जितेश कुमार ने सहभागिता ली। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राजा बाबू के द्वारा किया गया। संगीत सरिता के प्रमुख श्री सुमन गुरु जी का इस कार्यक्रम को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि सभी बच्चों में संगीत एवं संस्कार स्थापित हो। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से शिवम राज, करण एवं संगीतालय के सभी बच्चे की सहभागिता रही।

पूर्व विधायक के आकस्मिक मौत से राजनीतिक गलियारों में शोक

हंसमुख एवं मिलनसार मिजाज के थे पूर्व विधायक गणेश पासवान

प्रात : किरण संवाददाता

- मौत की खबर के बाद परिवार एवं गांव सिशुआ में शोक
- वर्ष 2000 से 2005 तक समता पार्टी से चुनाव जीतकर सुल्तानगंज से थे विधायक

तारापुर (मुंगेर) ।तारापुर एवं सुल्तानगंज के राजनीतिक क्षितिज में अपना लंबे समय तक स्थान बनाने वाले तारापुर विधानसभा क्षेत्र के सिशुआ गांव निवासी 88 वर्षीय पूर्व विधायक गणेश पासवान का सोमवार के अहले सुबह निधन हो गया । गौरतलब है कि पूर्व विधायक स्वर्गीय श्री पासवान 2000से 2005 तक सुल्तानगंज विधानसभा क्षेत्र से समता पार्टी के विधायक रहे थे । स्वर्गीय श्री पासवान विधायक बनने से पहले बिहमा पंचायत से लगभग 36 वर्ष तक मुखिया भी रहे । इनका जन्म सिशुआ गांव स्थित वर्ष 1936 में हुआ था । पिछले कुछ महीनो से ये बीमार चल रहे थे । इनका इलाज भी चल रहा था । पूर्व विधायक श्री पासवान अपने पीछे भड़ापूरा परिवार में तीन पुत्र एवं चार पुत्रियां छोड़ गए हैं । इनकी एक पुत्रवधू ब्यूटी विश्वास जो वर्तमान में जिला परिषद मुंगेर की उपाध्यक्ष पद पर काबिज है । इनके पुत्र सुदर्शन कुमार ने बताया कि घटना काफी दुखद है मेरे पिताजी काफी जिंदादिल और मिलनसार व्यक्ति के रूप में घर गांव एवं संपूर्ण क्षेत्र भर में चर्चित थे । आगे कहा कि मेरे पिता स्वर्गीय पासवान को बड़ा ही सरल एवं सहज स्वभाव होने के कारण क्षेत्र के लोगों ने जात-पात से ऊपर उठकर इनको अपना मानते थे । रात्रि में अचानक इनकी तबीयत बिगड़ने के बाद परिवार के लोगों ने उन्हें इलाज के लिए डॉक्टर के पास लेकर गए जहां चिकित्सकों ने इलाज के दौरान इन्हें मृत घोषित कर दिया। वापस घर आते ही परिवार सहित पूरे गांव में कोहराम मच गया। इनके निधन से परिजनों सहित आस पड़ोस के लोगों का रो रो कर बुरा हाल है । क्षेत्र में पूर्व विधायक के चाहने वाले लोगों में जमुई के लोकप्रिय सांसद अरुण भारती पूर्व मंत्री शकुनी चौधरी विधायक राजीव कुमार सिंह मिथिलेश कुमार सिंह जितेंद्र कुशवाहा मंटू यादव पूर्व मुखिया कुमार प्रणय जितेंद्र शर्मा इत्यादि लोगों ने गहरा दुख एवं शोक प्रकट किया है इनका अंतिम संस्कार दोपहर बाद उत्तरवाहिनी गंगा सुल्तानगंज श्मशान घाट पर होगी। इसके पूर्व पूर्व विधायक का शव यात्रा सिशुआ गांव से निकलकर तारापुर होते हुए श्मशान घाट सुल्तानगंज के लिए निकला । शव यात्रा में उनके चाहने वाले हजारों लोग मौजूद रहे।

अज्ञात अपराधियों ने चाकू घोंपकर राजद नेता का किया हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)।हरपुर थाना क्षेत्र के बेलबिहमा गांव निवासी 55 वर्षीय राजद के वरिष्ठ नेता श्यामसुंदर यादव को अज्ञात अपराधियों ने रविवार की देर रात घर के बाहर दरवाजा पर सो रहे अवस्था में ही चाकू घोंपकर कर हत्या कर देने का मामला सामने आया है । जानकारी के अनुसार सोमवार के अहले सुबह जब घर परिवार के लोग जगकर बाहर दरवाजा के पास पहुंचा तो चौकी पर सो रहे पिता खून से लतपथ मृत पड़े थे । पिता को देखते ही परिवार में कोहराम मच गया । बता दें कि सुबह का समय में हल्ला होते ही आस परोस के लोग स्वर्गीय श्याम सुंदर यादव को देखने उनके घर पर उमर पड़े । इधर स्वर्गीय श्री यादव का बड़ा पुत्र कुंदन यादव अपने पुराने घर पर सो रहे थे । पिता की हत्या की खबर सुनते ही इन्होंने हरपुर पुलिस को घटना की जानकारी तत्क्षण दिया । जहां मौके पर पहुंची हरपुर पुलिस ने घटना की जानकारी परिवार के लोगों से विस्तार से पूछताछ किया । इधर पुलिस को परिवार के लोगों ने बताया कि हम सभी लोग दरवाजा बंद कर घर के भीतर सो रहे थे , और पिताजी घर के बाहर दरवाजे पर सोए थे , जहां देर रात्रि में अज्ञात अपराधियों ने पिताजी को चाकू घोंपकर कर उनकी हत्या कर अपराधी फरार हो गए । परिवार के किसी भी लोगों का गांव में किसी से कोई विवाद भी नहीं था । इधर हरपुर पुलिस हत्या को लेकर कई बिंदुओं पर गंभीरता पूर्वक जांच कर रही है । जिसमें यह खुलासा हो सके की हत्या किसने और किस वजह से किया गया है । समाचार लिखे जाने तक मृतक के परिजनों ने अब तक पुलिस को नामजद अभियुक्त को लेकर किसी तरह का कोई आवेदन हरपुर पुलिस को नहीं दिया है । इधर हरपुर पुलिस ने परिजनों के सहयोग से लाश को अपने कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए मुंगेर भेजा गया।

ईसीआरकेयू ने बाइक रैली निकालकर रेलकर्मियों के बीच झोंकी ताकत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] सोमवार को पूर्व मध्य रेलवे सहित सभी जोनों में रेलवे में यूनियन की मान्यता प्राप्ति को लेकर 4-6 दिसम्बर को होने वाले चुनाव के लिए अलग अलग यूनियन के द्वारा झाझा के रेल विभागों में किये जा रहे चुनावी प्रचार थम गया। बाइक रैली में बड़ी संख्या में ईसीआरकेयू के लोग यूनियन की जीत को लेकर जमकर नारेबाजी भी किया। रेलकर्मी की जो भी मांग है उसे अवश्य हमारी यूनियन पूरा करेगी। ईसीआरकेयू एक नाम नही बल्कि रेलकर्मियों की पहचान है इसलिए रेलकर्मी इस चुनाव में अपना कीमती मत ईसीआरकेयू के पक्ष में करते हुए अपनी पहचान को बरकरार रखे और संगठन को मजबूती प्रदान करे। अंतिम दिन भी अलग अलग यूनियन के पदाधिकारियों , सदस्यों ने रेलकर्मियों के बीच अपने अपने यूनियन के पक्ष में मतदान करने के लिए पूरी ताकत झोंक दिया। चुनाव प्रचार के अंतिम दिन ईसीआरकेयू के पदाधिकारियों, सदस्यों ने बाइक रैली निकालते हुए स्टेशन के पास, पीडब्ल्यूआई, आईओडब्ल्यू, पावर हाउस, मेमुकार शेड सहित अन्य रेल विभागों में दस्तक देते हुए रेलकर्मियों को ईसीआरकेयू के पक्ष में मतदान करने की अपील किया। शाखा अध्यक्ष भारत भूषण, शाखा सचिव राजेश कुमार सिन्हा, सहायक सचिव नीलेश चौधरी, राजीव रौशन, गुलाबचंद, मंटू सहित अन्य लोगों ने रेलकर्मियों के बीच हुंकार भरते हुए कहा कि इस बार रेलकर्मियों का भरपूर सहयोग से ही हमलोग रेलकर्मियों की आवाज को और भी बुलंद करेंगे। ईसीआरकेयू के पदाधिकारियों ने कहा कि हमारी यूनियन रेलकर्मियों के मुद्दों के लिए कई लड़ाईयां लड़ी और उसका नतीजा यह है कि हमलोग कई मुद्दों पर जीत हासिल किया जिसका लाभ आज रेलकर्मियों को काम के दौरान मिल रही है।

पैक्स चुनाव की तैयारी पूरी, 3 दिसंबर को 11 मतदान केंद्र पर होगा चुनाव

बरियारपुर (मुंगेर)। प्रखंड के पैक्स चुनाव के तैयारी पुरी कर ली गई है। 3 दिसंबर को 11 मतदान केंद्रों पर होगी मतदान जहां 15 पैक्स अध्यक्ष 73 पैक्स सदस्यो के भाग्य होगी बैलेट बॉक्स में बंद। इस आशय की जानकारी प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड बिकास पदाधिकारी स्वेता कुमारी ने बताया। इस सम्बंध में कहा कि प्रत्येक मतदान केंद्रों प्रयाप्त सुरक्षा वल के साथ गस्ती दलके साथ सुपर पैट्रोलिंग वल उपलब्ध रहेंगे। मतदान केंद्रों पर प्रयाप्त सुविधा उपलब्ध रहेगी। मतदान करनेवाले मतदाताओं को निःसंकोच मतदान में भाग लेंगे।

बिहार में कागज पर चल रहा नशा मुक्ति केंद्र, बिहार की आबादी का 42 से 45% युवा आज नशे का शिकार

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । बिहार के पुलिस मुख्यालय पटना से जारी आंकड़े के अनुसार बिहार की आबादी का 42 से 45% युवा आज नशे का शिकार हो गए हैं मादक पदार्थों की तस्करी का धंधा तस्करों के दिमागी खोज से किया जा रहा है

नशे की दुनिया में एक बार प्रवेश करने के बाद उन युवाओं का जीवन प्रतिदिन अंधकार में डूब कर पतन की ओर चली जाती है बिहार सरकार ने नशा छुड़ाने के लिए प्रत्येक जिले में नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना किया है लेकिन राज्य के सभी नशा मुक्ति केंद्र कागज पर ही चल रहे हैं जिला मुख्यालयों में इन केंद्रों का अता-पता नहीं है राज्य सरकार और जिला प्रशासन ने इस नशा मुक्ति केंद्र की ओर कोई ध्यान भी नहीं दिया जिससे जरूरतमंदों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है मादक पदार्थों की तस्करी में कोरियर का सहारा लिया जा रहा है कोरियर बॉय के माध्यम से तस्करी आसानी से तस्कर कर पा रहे हैं कई कोरियर बाय पकड़े गए हैं पुलिस मुख्यालय से जारी आंकड़ों के मुताबिक मुंगेर सहित राज्य के पूर्वी बिहार कोसी और सीमांचल के 13 जिलों में 2385 केस अनुसंधान का रिव्यू करने के बाद यह बात सामने आई है

कि युवाओं ने पहले एक से तीन बार नशा किया उसके बाद ही वह नशीले पदार्थों की तस्करी करने लगे इसमें मुंगेर में 233 केस की समीक्षा की गई भागलपुर 189 पूर्णिया 278 बेगूसराय 253 किसनगंज 172 अररिया 277 किशनगंज के 52 कटिहार के 153 बांका के 82 जमुई के 88 लखीसराय 77 सहरसा के 293 सुपौल के 120 मधेपुरा के 98 मामले तस्करी और नशे में मादक द्रव्य की तस्करी हो रही है जिसमें कोरियर बॉय की भूमिका अधिक पाई गई है सरकार और पुलिस विभाग को इन कोरियर बाय के डिलीवरी के समय ही जांच करना चाहिए जिससे की तस्करी पर रोक लगाई जा सके इन मादक द्रव्यों की तस्करी से युवा खासकर कॉलेज के विद्यार्थियों और अन्य लोगों को इसकी लत लगाकर उन नौनिहालों का भविष्य अंधकार में डाल दिया करते हैं ।

झाझा रेफरल 2 का किया गया निरीक्षण अस्पताल में लगेगा अग्निशमन यंत्र

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] सोमवार को अग्निशमन विभाग जमुई के द्वारा रेफरल अस्पताल में आग से होने वाली घटना की रोकथाम को लेकर निरीक्षण किया और किस वजह से आग लग सकती है उसकी भी जांच किया गया। अग्निशमन विभाग के पदाधिकारी अनूप शर्मा ने अस्पताल में अग्निशमन यंत्र लगाने को लेकर जगह जगह नापी भी किया। वही अग्निशमन विभाग के पदाधिकारी ने अस्पताल के प्रबंधक नवनीत कुमार और प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी से भी कई बिंदुओ पर चर्चा किया जिसमें प्रबन्धक ने नए भवन बनने की बात की तो अग्निशमन विभाग के पदाशिकारी ने कहा कि नए भवन में यह सुविधा उपलब्ध रहेगा । अस्पताल में आग लगने की घटना पर पूरी तरह से नियंत्रण रखने को लेकर यह पहल की जा रही है। अग्निशमन विभाग के पदाधिकारी ने बताया की सुरक्षा की दृष्टिकोण से यहां पर अग्निशमन यंत्र जल्द लगाया जाएगा इसके लिए 4 स्थलों पर अलार्म, बालू से भरा बाल्टी, अग्निशमन सिलेंडर, एक हौज जिसमे भारी मात्रा में पानी भरा रहेगा सहित अन्य कई संसाधन मुहैया होगा। अस्पताल के लेबर रूम, ओपीडी कक्ष, रसोई कक्ष, जेनरेटर रूम आदि जगहों का अग्निशमन विभाग की टीम के द्वारा निरीक्षण करते हुए नापी लिया गया। इस संदर्भ में अग्निशमन विभाग के पदाधिकारी अनूप कुमार शर्मा ने बताया कि अग्निशमन विभाग और राष्ट्रीय भवन समिति के संयुक्त आदेशानुसार अस्पताल से पूर्व में दी गई सूचना के आलोक में यहां पर निरीक्षण किया। जिसमे यहां पर कुछ कमी पाई गई है। जैसे अस्पताल में कई जगह बिजली का तार खुला हुआ था तो उसे अच्छे से वायरिंग के लिए कहा गया।

हथियार से वार कर जख्मी किया फिर सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले के सीमावर्ती क्षेत्र जयनगर में एक व्यक्ति की पहले हथियार से भी वार कर जख्मी किया फिर सरेआम गोली मारकर हत्या कर दीया गया है। आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। हालांकि, तब तक आरोपी मौके से फरार हो चुका है। मृतक अपनी बहन के यहां भांजी के शादी की तैयारी में गया था कि भांजी को कितना जेवर और क्या क्या जेवर देंगे पर भगवान को कुछ और ही मंजूर था। वही सूचना पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दीया है। मृतक की पहचान गांव लश्करिया निवासी नागे यादव उम्र (45) के रूप में हुआ है।जानकारी के मुताबिक यह घटना जयनगर गोबराही नहर मोड़ के पास की है। एक बाइक वाले जिसे पहले से दुश्मनी थी युवक की गोली मारकर हत्या कर दीया गया है। मामला आपसी कोई पुरानी रंजिश का बताया जा रहा है। मामले की सूचना जयनगर पुलिस को दी गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर मुआयना किया। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर मधुबनी सदर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। वही जयनगर थाना प्रभारी ने बताया कि मामले कि छान बिन कर रहे है। अपराधी कि पहचान लगभग हो ही गई है।जगह जगह छापेमारी भी कर रहे हैं अपराधी को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

पंचायत संसाधन केंद्र निर्माण कार्य का जिला पदाधिकारी ने किया निरीक्षण, 15 दिनों के अंदर कार्य को पूर्ण करने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। जिला परिषद कार्यालय के निकट बन रहे पंचायत संसाधन केन्द्र , मुंगेर का सोमवार को जिलाधिकारी अवनिश कुमार सिंह द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्माण कार्य के गुणवत्ता आदि की जांच की तथा 15 दिनों के अंदर कार्य को पूर्ण करने का निर्देश दिया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह सहित अन्य उपस्थित थे। जिलाधिकारी ने बताया कि पंचायती राज्य विभाग द्वारा त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं एवं ग्राम कचहरियों के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों/कर्मियों के क्षमता वर्धन एवं प्रशिक्षण हेतु जिला पंचायत संसाधन केन्द्र, मुंगेर का निर्माण जिला परिषद के परिसर में किया जा रहा है।

वर्तमान में प्रशिक्षण का कार्य जिला पंचायत शाखा कार्यालय में अवस्थित अस्थाई जिला पंचायत संसाधन केन्द्र मुंगेर में किया जा रहा है। इस भवन के निर्माण कार्य पूर्ण हो जाने के बाद पंचायत प्रतिनिधियों से संबंधित सभी प्रशिक्षण आदि का आयोजन उक्त भवन में ही संपन्न कराया जाएगा। जिला पंचायत संसाधन केन्द्र, मुंगेर का उपयोग त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के साथ-साथ मुंगेर जिला के अन्य विभागों द्वारा प्रशिक्षण संस्थान के रूप में भी किया जा सकेगा। साथ ही केन्द्र प्रायोजित योजना राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान आरजीएसए अन्तर्गत जनप्रतिनिधियों एवं पंचायती राज विभाग के कर्मियों एवं पदाधिकारीयों को विभिन्न विषयों यथा ई-ग्राम स्वराज ऑडिट ऑनलाइन, पीएफएमएस, एलएसजीडी, पीडीपी आदि पर प्रशिक्षण देने एवं उनके क्षमतावर्द्धन में जिला पंचायत संसाधन केन्द्र की अहम भुमिका होगी। इसके अलावे केंद्र के अपना भवन बन जाने से अन्य प्रशिक्षण में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकेगा।

छात्रा के साथ एक युवक ने किया छेड़खानी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] कोचिंग संस्थान से पढ़ाई कर घर जा रही एक छात्रा के साथ गणेशी मंदिर के पास एक युवक ने रास्ता रोकर उसके साथ छेड़खानी किये जाने का मामला सामने आया है। छात्रा ने इस संदर्भ में थाना में युवक के खिलाफ शिकायत की है।

छात्रा ने बताया कि घर जाने के दौरान गणेशी मंदिर के पास विक्रम दास रास्ता रोककर छेड़खानी करने लगा जब उनसे बचकर बरमसिया पुल के पास पहुंची तो रास्ता में मामा मिल गया और उसके बाद मामा उक्त युवक को पकड़कर थाना ला रहे थे

कि तभी सुभाष कुमार, प्रेम कुमार एवं अन्य 8-10 अज्ञात लोगों ने विक्रम को मेरे मामा के हाथ से छुड़वाकर अपने साथ ले गया।

संक्षिप्त समाचार

भूमि जोत सीमा कानून में संशोधन के लिए पेश किया जाएगा विधेयकः मुख्यमंत्री सुक्खू

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में धर्मार्थ अस्पताल बंद किए जाने पर लोगों के प्रदर्शनों का सामना कर रही राज्य सरकार विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन ''हिमाचल प्रदेश भूमि जोत सीमा अधिनियम'' में संशोधन करने के वास्ते एक विधेयक पेश करेगी। हिमाचल प्रदेश विधानसभा का शीतकालीन सत्र 18 दिसंबर से शुरू हो रहा है। यहां रविवार को जारी किए गए बयान में कहा गया कि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने राधा स्वामी सत्संग ब्यास (आरएसएसबी) द्वारा बोथा में संचालित अस्पताल को बंद करने के मुद्दे पर रविवार को एक उच्च स्तरीय बैठक की, जिसके दौरान विधेयक पेश करने का फैसला लिया गया। बयान के अनुसार, सुक्खू ने अधिकारियों को संशोधन विधेयक का मसौदा तुरंत तैयार करने और मंत्रिमंडल की आगामी बैठक में इसे पेश करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है कि अस्पताल खुला रहे ताकि लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिलती रहें। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने राधा स्वामी सत्संग ब्यास को राहत प्रदान करने के लिए शुरू में अध्यादेश लाने पर विचार किया था, लेकिन विधानसभा सत्र नजदीक है, इसलिए संशोधन विधेयक पेश करना ज्यादा बेहतर होगा। आरएसएसबी इस अस्पताल को महाराज जगत सिंह मेडिकल रिलीफ सोसाइटी को हस्तांतरित करना चाहता है क्योंकि वह इसे अपना सहयोगी संगठन मानता है। इसने अस्पताल की भूमि के हस्तांतरण के लिए राज्य सरकार से बातचीत की थी, लेकिन 'हिमाचल प्रदेश भूमि जोत सीमा अधिनियम' के तहत ऐसा नहीं हो सका।

कर्नाटक के कुक्के सुब्रह्मण्यम मंदिर में जंगली हाथी के पहुंचने से हड़कंप मच गया

बेंगलुरु, एजेंसी। कर्नाटक के प्रसिद्ध कुक्के सुब्रह्मण्यम मंदिर परिसर में एक जंगली हाथी के घुस जाने से वहां हड़कंप मच गया। मंदिर सूत्रों ने सोमवार को यह जानकारी दी। मंदिर सूत्रों के अनुसार, रविवार रात मंदिर परिसर और उसके आसपास के क्षेत्र में हाथी को घूमता देख श्रद्धालुओं में दहशत फैल गई। हाथी को देखकर कुछ श्रद्धालुओं ने पहले उसे मंदिर का हाथी समझकर उसकी पूजा करनी शुरू कर दी लेकिन बाद में मंदिर के सेवकों ने उन्हें तुरंत बताया कि यह हाथी मंदिर का नहीं है। सेवकों ने तुरंत श्रद्धालुओं से सुरक्षित स्थान पर जाने का आग्रह किया, जिसके चलते मंदिर में कुछ समय के लिए भय और चिंता का माहौल बन गया। वन विभाग, स्थानीय पुलिस और ग्रामीणों ने प्रयास किए और उन्होंने जंगली हाथी को सफलतापूर्वक जंगल में वापस भेज दिया। प्राधिकारियों ने हाथी के फिर से लौटने की आशंका जताते हुए मंदिर के सेवकों और श्रद्धालुओं को सतर्क रहने की सलाह दी है।

छत्तीसगढ़ में कार और ट्रक की टक्कर, चार लोगों की मौत

अंबिकापुर, एजेंसी। अंबिकापुर में दर्दनाक सड़क हादसा हुआ है. यहां ट्रक से एक कार की टक्कर हो गई. इस हादसे में चार लोगों की असमय मौत हो गई. दुर्घटना में एक शख्स बुरी तरह घायल हुआ है. घायल का इलाज अस्पताल में चल रहा है. पुलिस ने मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि यह दुर्घटना कोहरे की वजह से हुआ है. उदयपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत यह हादसा हुआ. गुमगा में हुआ हादसाः सरगुजा के उदयपुर थाना के पुलिस अधिकारी ने बताया कि सभी लोग पर्यटन स्थल मैनपाट गाड़ी से घूमने जा रहे थे. इस दौरान यह हादसा गुमगा गांव के पास हुआ. पुलिस अधिकारी ने बहताया कि नेशनल हाईवे 130 पर घने कोहरे की वजह से यह दुर्घटना हुई. कार में सवार मृतकों की पहचान संजू साहू, राहुल साहू, दुष्यंत देवांगन और स्वप्निल हेमने के रूप में हुई है. ये सभी रायपुर के न्यू चंगोराभाटा इलाके के निवासी हैं. सब लोगों की उम्र 22 से 28 साल के बीच है. पुलिस ने बताया कि घायल व्यक्ति को उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया और बाद में उसे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज में स्थानांतरित कर दिया गया. पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है. ट्रक चालक की तलाश की जा रही है. ट्रक ड्राइवर मौके पर वाहन को छोड़कर फरार हो गया।

यूपी सरकार ने प्रयागराज के महाकुंभ मेला क्षेत्र को नया जिला घोषित किया

सीमा एवं प्रशासनिक क्षेत्र संपूर्ण विवरण

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रयागराज में महाकुंभ क्षेत्र के आसपास एक नया जिला बनाने की घोषणा की है। अधिकारियों के अनुसार, नए स्थापित जिले का आधिकारिक नाम महाकुंभ मेला रखा गया है, जिसे भव्य धार्मिक आयोजन के निर्बाध आयोजन और प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया है। इसके साथ ही, राज्य में अब 75 के बजाय 76 जिले होंगे। इस कदम का उद्देश्य जनवरी 2025 में होने वाले आगामी कुंभ मेले के लिए प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाना और संचालन को सुव्यवस्थित करना है। अधिकारियों का मानना है कि यह रणनीतिक कदम बेहतर समन्वय और प्रशासन की सुविधा प्रदान करेगा जो तीर्थयात्रियों के साथ-साथ हितधारकों के अनुभव को बढ़ाएगा।

महाकुम्भ मेला जनपद/मेला क्षेत्र में मेलाधिकारी, कुम्भ मेला, प्रयागराज को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा-14(1) एवं अन्य सुसंगत धाराओं के अन्तर्गत कार्यपालक मजिस्ट्रेट, जिला मजिस्ट्रेट एवं अपर जिला मजिस्ट्रेट की शक्तियां प्राप्त होंगी। उक्त संहिता या वर्तमान में प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन जिला मजिस्ट्रेट की समस्त शक्तियां तथा सभी श्रेणी के मामलों में कलेक्टर की समस्त शक्तियों का प्रयोग करने तथा उक्त जिले में अपर कलेक्टर की नियुक्ति करके उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता, 2006 (उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता (संशोधन) अधिनियम, 2016 (उप्र अधिनियम संख्या 4, 2016) द्वारा यथा संशोधित) की धारा-12 एवं अन्य सुसंगत धाराओं के अधीन कलेक्टर के समस्त कृत्यों का पालन करने का अधिकार होगा। उत्तर प्रदेश सरकार जनवरी 2025 से प्रयागराज में शुरू होने वाले महाकुंभ के लिए देश भर के राज्यपालों और मुख्यमंत्रियों को आमंत्रित करने के लिए मंत्रियों को भेजेगी। 29 नवंबर को लखनऊ में अपने लोक भवन कार्यालय में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा बुलाई गई मंत्रियों की बैठक में यह निर्णय लिया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता वाली यूपी कैबिनेट ने महाकुंभ को बढ़ावा देने के लिए भारत और विदेशों में रोड शो और कार्यक्रम आयोजित करने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी है, जिसके बारे में यूपी सरकार के अधिकारियों ने कहा कि इसमें दुनिया भर से रिकॉर्ड संख्या में श्रद्धालु आएंगे। कुंभ मेला हर 3 साल, अर्ध कुंभ मेला हर 6 साल और महाकुंभ मेला हर 12 साल पर आयोजित किया जाता है। आखिरी महाकुंभ मेला साल 2013 में आयोजित किया गया था। इसके बाद 2019 में अर्ध कुंभ मेला आयोजित किया गया था। अब महाकुंभ मेला साल 2025 में आयोजित होने जा रहा है और यह भव्य होने वाला है। महाकुंभ मेला 2025 का आयोजन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 29 जनवरी 2025 को सिद्धि योग में होने जा रहा है। महाकुंभ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चलने वाला है।

महाराष्ट्र विधानसभाः जितेंद्र अव्हाड होंगे विधायक दल नेता?

मुंबई, एजेंसी। शरद पवार नीत राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार)ने रविवार को पार्टी विधायक जितेंद्र अव्हाड को महाराष्ट्र विधानसभा में पार्टी विधायक दल का नेता नामित किया। राकांपा (एसपी) प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल ने कहा कि पहली बार निर्वाचित विधायक रोहित पाटिल को पार्टी का मुख्य सचेतक नियुक्त किया गया है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, ''हमने जितेंद्र अव्हाड को विधायक दल का नेता नामित किया है, क्योंकि नवनिर्वाचित विधायकों की पार्टी बैठक में विधान परिषद के सदस्य मौजूद नहीं थे।'' चुनाव में 86 सीट पर लड़ा था लेकिन 10 सीट ही जीत पाई थी। इन दस विधायकों में से एक संदीप क्षीरसागर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कारण बैठक में शामिल नहीं हुए। पूर्व मंत्री आव्हाड ठाणे जिले के मुंब्रा-कलवा विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक में राकांपा(एसपी) अध्यक्ष शरद पवार और कार्यकारी अध्यक्ष सुप्रिया सुले भी मौजूद थीं। बता दें कि राकांपा (एसपी) ने हाल में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में 86 सीट पर प्रत्याशी उतारे थे, लेकिन उसे सिर्फ 10 सीट जीतने में सफलता मिल सकी. इन दस विधायकों में से एक संदीप क्षीरसागर पूर्व पहले से तय कार्यक्रम की वजह से बैठक में नहीं शामिल हुए.

नरेश बालियान और गैंगस्टर कपिल सांगवान लगातार संपर्क में थे, 40 बार हुई फोन पर बात

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने आम आदमी पार्टी (आप) विधायक नरेश बालियान को जबरन वसूली के एक मामले में दो दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। दिल्ली के उत्तम नगर विधानसभा क्षेत्र से विधायक नरेश बालियान को शनिवार को पूछताछ के लिए आरके पुरम स्थित दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच के दफ्तर में बुलाया गया था और बाद में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने ब्रिटेन में बैठे गैंगस्टर कपिल सांगवान के आपराधिक साम्राज्य की वित्तीय जांच शुरू कर दी है। क्राइम ब्रांच का दावा है कि जांच में यह पता चला है कि गिरफ्तार 'आप' विधायक नरेश बालियान और कपिल सांगवान लगातार संपर्क में थे और पिछले साल कथित तौर पर उनके बीच करीब 40 बार फोन पर बात हुई थी। पुलिस हिरासत में पूछताछ के दौरान बालियान ने दावा किया कि ये सभी कॉल उन्हें धमकाने के लिए की गई थीं। हालांकि, कॉल की लंबी अवधि के बारे में वह विस्तार से नहीं बता पाए। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने आरोप लगाया, मई 2023 में स्पेशल सेल को दी गई एक अलग शिकायत में बालियान ने स्वीकार किया कि सांगवान ने उसे कई बार फोन करके धमकाने का प्रयास किया था और वह चाहता था कि वह उसके टारगेट वाले लोगों से पैसा इकट्ठा कर उसके आदमियों को सौंप दे। पुलिस ने जब बालियान से पूछा कि सांगवान उनसे पैसे क्यों इकट्ठा करना चाहता था, तो बालियान कथित तौर पर चुप हो गए, जिसके बारे में पुलिस ने रिमांड मांगते समय अदालत को भी बताया। क्राइम ब्रांच ने दावा किया कि वह कपिल सांगवान के ब्रिटेन से चलाए जा रहे गैंग की मकोका के तहत गहन वित्तीय जांच भी कर रही है और प्रथम दृष्टया बालियान इस साजिश में अहम किरदार हैं। पुलिस ने कहा कि जिस मामले में बालियान को गिरफ्तार किया गया है, वह गुरचरण सिंह की शिकायत पर दर्ज किया गया था। बता दें कि, दिल्ली के नजफगढ़ का रहने वाला 35 वर्षीय भगोड़ा कपिल सांगवान दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान में मकोका, हत्या, हत्या का प्रयास, जबरन वसूली, डकैती और आर्म्स एक्ट समेत 18 मामलों में वॉन्टेड है। उसके बारे में सूचना देने पर 2 लाख रुपये से अधिक का इनाम रखा गया है।

जम्मू-कश्मीर में पीएमजीएसवाई के तहत लगभग 3,500 सड़क परियोजनाएं हुईं पूरी

जम्मू, एजेंसी। जम्मू और कश्मीर में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत पिछले दो दशकों में करीब 3,500 परियोजनाएं पूरी की जा चुकी हैं जिनमें 217 पुलों का निर्माण भी शामिल है। यह जानकारी रविवार को ग्रामीण विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव अमित शुक्ला की अध्यक्षता में हुई बैठक में दी गई। बैठक में जम्मू-कश्मीर में पीएमजीएसवाई की कार्यान्वयन स्थिति की व्यापक समीक्षा की गई।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) 2001-02 में शुरू की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य 250 से अधिक आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में सभी मौसम में संपर्क प्रदान करना था ताकि दूर-दराज़ और असंबद्ध बस्तियों को मुख्य सड़कों से जोड़ा जा सके। अधिकारियों के अनुसार पीएमजीएसवाई के तहत अब तक जम्मू और कश्मीर में 305 पुलों सहित कुल 3,742 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है जिनकी कुल सड़क लंबाई 20,801 किलोमीटर है। इसके अलावा 2,140 बस्तियों को सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए मंजूरी दी गई थी जो 2001 की जनगणना में 250 से अधिक आबादी वाली थी। अब तक 217 पुलों सहित 3,429 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं और 2,140 में से 2,129 बस्तियों को जोड़ दिया गया है। इस परियोजना के तहत 12,650 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। ग्रामीण कनेक्टिविटी पर जोर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत जम्मू और कश्मीर में पिछले 5 वर्षों में विशेष ध्यान दिया गया है जिससे दूरदराज़ और पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिला है। अधिकारियों का कहना है कि यह सभी परियोजनाएं सबका साथ, सबका विकास के सिद्धांत के अनुरूप हैं। बैठक में यह भी बताया गया कि कनेक्टिविटी में इस वृद्धि के परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है जिससे उनके दैनिक जीवन में सहूलत मिली है और उनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यापार तक पहुंच आसान हो गई है। संयुक्त सचिव अमित शुक्ला ने परियोजनाओं की समयसीमा को पूरा करने के साथ-साथ गुणवत्ता मानकों का पालन करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि टिकाऊ और सुरक्षित बुनियादी ढांचे का निर्माण करना जरूरी है। ताकि यह लंबे समय तक लोगों की सेवा कर सके। इसके लिए उन्होंने दैनिक निगरानी तंत्र की आवश्यकता पर बल दिया ताकि किसी भी समस्या का तुरंत समाधान किया जा सके। इससे पहले शनिवार को अमित शुक्ला ने जम्मू क्षेत्र में पीएमजीएसवाई के तहत महत्वपूर्ण सड़क और पुल निर्माण परियोजनाओं की जमीनी समीक्षा की।

दो हिंदु भिक्षु गिरफ्तार, चटगांव के 70 अल्पसंख्यक वकीलों-पत्रकारों पर केस दर्ज

ढाका । बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद ने चटगांव के 70 अल्पसंख्यक वकीलों और दो पत्रकारों के खिलाफ झूठा और परेशान करने वाला केस दर्ज होने पर हैरानी और चिंता जाहिर की है। इस बीच इस्कॉन कोलकाता ने दो हिंदू भिक्षुओं और एक अन्य की गिरफ्तारी व इस्कॉन सेंटर पर हमले का भी दावा किया। अल्पसंख्यक पत्रकारों और वकीलों के खिलाफ 30 नवंबर को कोतवाली पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया था। जिसमें इन पर देशी बम विस्फोट और वाहनों में तोड़फोड़ करने में शामिल होने का आरोप लगाया गया।

रविवार को एक आधिकारिक बयान में, परिषद ने इस केस को मानवाधिकारों और कानून के शासन का उल्लंघन बताया परिषद ने कहा कि यह केस पुजारी चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी के खिलाफ दर्ज राजद्रोह मामले को बाधित करने और इससे जुड़े समाचारों के प्रकाशन-प्रसार को जबरन रोकने के गुप्त इरादे से दायर किया गया। परिषद ने यह भी मांग की कि बांग्लादेशी सरकार और कानून प्रवर्तन अधिकारी तुरंत झूठे मामले को वापस लें, वकीलों और पत्रकारों को रिहा करने के लिए तत्काल कदम उठाएं। इस बीच, शनिवार को इस्कॉन कोलकाता ने आरोप लगाया कि बांग्लादेशी अधिकारियों ने दो भिक्षुओं, आदिपुरुष श्याम दास और रंगनाथ दास ब्रह्मचारी, के साथ-साथ चिन्मय कृष्ण दास के सचिव को भी गिरफ्तार किया है। इस्कॉन कोलकाता के उपाध्यक्ष राधा रमन ने कहा कि भिक्षुओं को शुक्रवार को पुलिस ने उस समय गिरफ्तार किया जब वे चिन्मय कृष्ण दास से मिलने के बाद घर जा रहे थे। चिन्मय कृष्ण दास को 25 नवंबर को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

इमरान खान की पार्टी के प्रदर्शन के दौरान 'कारतूसों' के बिना तैनात थे सुरक्षाकर्मी : पाक सरकार

इस्लामाबाद , एजेंसी। इस हिंसक भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बिना कारतूसों के तैनात किया गया, जबकि सेना न तो इन उपद्रवियों के साथ सीधे टकराव में आई और न ही दंगा नियंत्रण के लिए उसकी सेवा ली गई। पाकिस्तान के गृह मंत्रालय ने पिछले सप्ताह पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के समर्थकों द्वारा किए गए हिंसक विरोध प्रदर्शन के दौरान सुरक्षा बलों द्वारा हत्याओं के आरोपों को रविवार को खारिज कर दिया। मंत्रालय ने कहा कि भीड़ को तितर-बितर करने के लिए सुरक्षाकर्मियों को ''बिना कारतूस'' तैनात किया गया था। इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने 24 नवंबर को इस्लामाबाद में सत्ता के केंद्र डी-चौक पर धरना देने के लिए विरोध प्रदर्शन शुरू किया था।पार्टी ने दावा किया कि मंगलवार रात सुरक्षा बलों द्वारा कथित गोलीबारी के कारण उसके कई समर्थक मारे गए। गृहमंत्री ने विरोध प्रदर्शन के संबंध में एक विस्तृत बयान जारी किया, जिसमें पीटीआई द्वारा अपने कार्यकर्ताओं की हत्याओं के दावे को खारिज किया गया है। इसमें कहा गया है, ''पुलिस और रेंजर्स वाली एलईए (कानून प्रवर्तन एजेंसियां) को इस हिंसक भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बिना कारतूसों के तैनात किया गया, जबकि सेना न तो इन उपद्रवियों के साथ सीधे टकराव में आई और न ही दंगा नियंत्रण के लिए उसकी सेवा ली गई।

दक्षिण सूडान को हैजा से निपटने के लिए 280,000 से अधिक मिले टीके

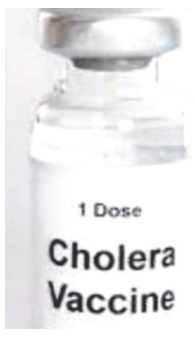

जुबा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से दक्षिण सूडान ने घोषणा की है कि उसने हैजा संक्रमण के हॉटस्पॉट के रूप में पहचाने गए क्षेत्रों में टीकाकरण अभियान चलाने के लिए ओरल हैजा वैक्सीन (ओसीवी) की 282,000 से अधिक खुराक हासिल कर ली हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, स्वास्थ्य मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि टीकों को अपर नाइल स्टेट और अन्य प्राथमिकता वाले स्थानों पर भेजा जाएगा। दक्षिण सूडान की राजधानी जुबा में जारी एक बयान में स्वास्थ्य मंत्री योलांडा अवेल डेंग ने कहा, बहुक्षेत्रीय हस्तक्षेप के लिए लक्षित क्षेत्रों में हैजा की रोकथाम एक प्राथमिकता है।

अवेल ने कहा कि इन अभियानों का उद्देश्य कमजोर आबादी की रक्षा करना तथा स्थायी जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी हस्तक्षेपों को लागू करने की दिशा में एक आधारभूत कदम के रूप में कार्य करना है। मंत्री ने कहा कि टीकों का उपयोग ऊपरी नाइल राज्य के रेनक और मालकाल काउंटियों में दो-खुराक वाले टीकाकरण अभियान को लागू करने के लिए किया जाएगा।

मंत्री ने कहा कि आने वाले दिनों में अन्य प्रभावित स्थानों पर सहायता के लिए अतिरिक्त खुराक भेजी जाएगी। टीकाकरण अभियान का उद्देश्य इन क्षेत्रों में हैजा के प्रकोप को कम करना है।

यूक्रेन-रूस और इस्राइल-हमास युद्ध से हथियारों की बिक्री बढ़ी, 4.2 फीसदी का हुआ इजाफा

स्टॉकहोम , एजेंसी। दुनिया में छिड़े दो बड़े युद्धों से हथियार बाजार में गरमा-गरमी है। कोरोना काल के बाद भड़के यूक्रेन-रूस युद्ध और पिछले साल अक्तूबर में इस्राइल-हमास युद्ध के बाद हथियारों का बाजार तैयार हो गया है। पिछले साल 632 अरब डॉलर के हथियारों और सैन्य सेवाओं की बिक्री हुई थी। यानी की 4.2 फीसदी अधिक। यह दावा स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (एसआईपीआरआई) की एक रिपोर्ट में किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल यूक्रेन और गाजा में हो रहा युद्ध तथा एशिया में तनाव के कारण प्रमुख हथियार निर्माताओं

की बिक्री में वृद्धि हुई थी, जबकि रूस और मध्य पूर्व में स्थित निर्माताओं के लिए उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। एसआईपीआरआई का कहना है कि दुनिया की 100 सबसे बड़ी हथियार कंपनियों द्वारा हथियारों और सैन्य सेवाओं की बिक्री 2023 में कुल 632 अरब डॉलर थी, जो 4.2 प्रतिशत अधिक थी। आगे बताया गया कि 2022 में राजस्व में गिरावट आई थी क्योंकि वैश्विक हथियार निर्माताओं को मांग में वृद्धि को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन उनमें से कई पिछले साल उत्पादन बढ़ाने में कामयाब रहे। मांग में इस उछाल के संकेत में, सभी 100 कंपनियों ने पिछले साल पहली बार एक अरब डॉलर से अधिक की बिक्री हासिल की। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ता लोरेंजो स्काराज्जातो ने कहा, पिछले साल हथियारों के राजस्व में काफी वृद्धि हुई है। इस साल भी यह जारी रहने की संभावना है। उन्होंने कहा कि दुनिया की शीर्ष 100 हथियार कंपनियां अभी भी ब्रिकी की मांग को पूरा नहीं कर पा रही हैं। कई कंपनियों ने भर्ती करना शुरू कर दिया, जिससे साफ होता है कि वे आने वाले समय में हथियारों की ब्रिकी को लेकर आशावादी है। एसआईपीआरआई ने कहा कि गाजा और यूक्रेन में युद्धों, पूर्वी एशिया में बढ़ते तनाव और अन्य क्षेत्रों में पुनः शस्त्रीकरण कार्यक्रमों से जुड़ी मांग को पूरा करने में छोटे उत्पादक अधिक प्रभावी रहे हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129